

2019-20



गाँधी विशेषांक

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

मोतिहारी, पूर्वी चंपारण, बिहार - 845401



महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार - 845401 संक्षिप्त परिचय

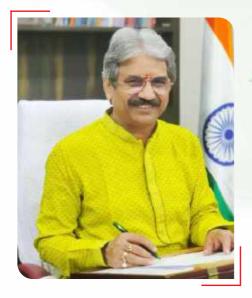
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार, संसद के अधिनियम, केंद्रीय विश्वविद्यालयों (संशोधन) अधिनियम 2014 (2014 की संख्या 35) द्वारा अस्तित्व में आया। विश्वविद्यालय 3 फरवरी 2016 को क्रियाशील हो गया। विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय राजमार्ग 28 पर मोतिहारी (बंकट) में स्थित है।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय दोनों बुनियादी शैक्षिक क्षेत्रों (प्रायौगिक और तकनीकी) में उच्च अध्ययन का एक उत्कृष्ट केंद्र साबित हो रहा है। विश्वविद्यालय में 7 संकायों के अंतर्गत 04 स्नातक, 22 स्नातकोत्तर, 19 एम.फिल., 20 पीएच.डी. और 20 शैक्षिक विभाग चल रहे हैं। विश्वविद्यालय की शैक्षिक उत्कृष्टता ने देश के विभिन्न भागों से शिक्षा-उत्साही विद्यार्थियों को यहां प्रवेश लेने के लिए आकर्षित किया है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि अकादिमक उत्कृष्टता ही विश्वविद्यालय का केंद्रीय आधार है और विश्वविद्यालय का अनुभवी और सक्षम संकाय इसकी निरंतरता के लिए सदैव प्रयासरत है।

विश्वविद्यालय का स्थान मोतिहारी, बिहार हमें 1917 के गौरवशाली ऐतिहासिक वर्ष में ले जाता है, जब महात्मा गाँधी ने अंग्रेजों के खिलाफ पहली बार उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष शुरू किया था, जिसे 'सत्याग्रह' के नाम से भी जाना जाता है। यह सही कहा गया है कि मोतिहारी ने महात्मा गाँधी को 'बापू' बनाया, यहीं से वे एक जन नेता बनकर उभरे और उन्होंने सत्य और अहिंसा के चमत्कारी मंत्रों के माध्यम से पूरे भारत में क्रांति ला दी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, अपने शिक्षार्थियों को गाँधी जी द्वारा दिखाए गए सत्याग्रह, सत्य और अहिंसा की शिक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध है, जो मानवता के लिए इस समय अमूल्य सेवा है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के नाम पर नामकरण के उपरांत महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय भारत के उभरते केंद्रीय विश्वविद्यालयों में से एक है। विश्वविद्यालय का प्रतीक चिह्न इसके आदर्श वाक्य 'मयि श्रीः श्रयतां यशः' में निहित है। प्रतीक चिह्न में यह आदर्श वाक्य वैदिक जप का मंगलाचरण है, जो नाम, यश और धन की समृद्धि को बढ़ाने के लिए है। विश्वविद्यालय की शैक्षिक भावना के पीछे यह मार्गदर्शक सिद्धांत है। विश्वविद्यालय के समस्त सदस्य (शिक्षक और गैर-शिक्षक) हमारे विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं समृद्धि प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए तन-मन से कार्य करते हैं।

यह उल्लेखनीय है कि महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हमारे माननीय कुलपित, प्रो. संजीव कुमार शर्मा के दूरदर्शी और गितशील नेतृत्व से प्रेरित है और उत्तरोत्तर प्रगित के मार्ग पर अग्रसर है। हमारे कुलपित विलक्षण बहुमुखी प्रतिभा, उत्कृष्ट शैक्षिक दृष्टि और अद्भुत प्रशासनिक कौशल के व्यक्ति हैं। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और खुशहाली, यथा शिक्षाशास्त्र, पाठ्येतर गितविधियों, प्रशासन, बुनियादी ढाँचा, अनुसंधान, नवोन्मेष का सामंजस्य और दृढ़ता का एक आदर्श वातावरण स्वाभाविक रूप मैं हमारे विश्वविद्यालय में महसूस किया जा रहा है।



कुलपति अंदेश

प्रो. संजीव कुमार शर्मा माननीय कुलपति

'ज्ञानाग्रह' महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार के विद्यार्थियों, शोधार्थियों और शिक्षकों की अनुभूतिपरक साहित्यिक अभिव्यक्ति का एक नूतन एवं अपरिहार्य माध्यम है। वस्तुतः विश्वविद्यालय तक आते-आते विद्यार्थियों की संवेदनाएँ समाज-संस्कृति, इतिहास और विरासत को लेकर जागृत होने लगती हैं। ये संवेदनाएँ यहाँ-वहाँ, इधर-उधर प्रस्फुटित भी होने लगती हैं। अपने परिवेश को देखने का उनका दृष्टिकोण मौलिकता लिए हुए होता है। वे उसे अपने तरीके से अभिव्यक्त करते हैं। कुछ विद्यार्थी किवता, आलेख, संस्मरण आदि के माध्यम से अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने लगते हैं। उस अभिव्यक्ति को उपयुक्त मंच दिलाना अतीव आवश्यक है। ऐसे में यदि उन्हें कोई साहित्यिक मंच मिल जाता है तो उनके लिए सोने पर सुहागा हो जाता है। 'ज्ञानाग्रह' का शुभारंभ इसी महती उद्देश्य को लेकर किया जा रहा है।

'ज्ञानाग्रह' का पहला अंक 'गाँधी विशेषांक' के रूप में निकाला जा रहा है। विश्वविद्यालय की वार्षिक पत्रिका के नामकरण के लिए आए अनेक नामों में से 'ज्ञानाग्रह' इस रूप में सटीक लगता है कि इसमें गाँधी जी की जिजीविषा, चंपारण का सत्याग्रह और विश्वविद्यालय का उद्देश्य स्पष्ट रूप से इंगित हो जाता है। 1917 का सत्याग्रह और शताब्दी के उपरान्त 2016 में ज्ञानाग्रह के रूप में विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ चंपारण की भूमि पर सत्याग्रह की अधुनातन जिजीविषा फलित हुई। इसलिए विश्वविद्यालय की वार्षिक पत्रिका का नाम 'ज्ञानाग्रह' के विशेष अर्थ, संदर्भ और मायने हैं।

अनगढ़ता, सुगढ़ता और परिपक्वता किसी भी प्रकार की रचनात्मकता के सोपान पर स्थित तत्त्व हैं। यह आवश्यक नहीं है कि किसी रचनाकार की पहली ही रचना सर्वोच्च श्रेणी की हो। 'ज्ञानाग्रह' में प्रकाशित रचनाएँ विद्यार्थियों की प्रथम रचना हो सकती हैं। इसलिए शिल्प-शैली आदि पर न जाकर इन रचनाओं का इसी रूप में स्वागत किया जाना चाहिए कि विद्यार्थी साहित्यकार बनने की दिशा में प्रथम प्रयास कर रहे हैं। 'ज्ञानाग्रह' उनकी रचनाशीलता का प्रविष्टि-द्वार है। निश्चित रूप से भविष्य में ये विद्यार्थी साहित्यकार के रूप में अपनी पहचान बनाएंगे, मुझे ऐसा विश्वास है। इस अंक में अधिकांश रचनाएँ 2019-20 के समय को रेखांकित करती हैं। इस अंक में प्रकाशित रचनाओं में मुख्य रूप से कोरोना-काल की पीड़ा, किसान-मजदूर की दशा, आर्थिक कठिनता और विश्व-व्यापी संकट का समय है, जो उभर कर सामने आया है। इसलिए यह अंक एक प्रकार से अपने समय का रिपोर्ताज भी है।

'ज्ञानाग्रह' में प्रकाशित हाने वाले सभी रचनाकारों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

प्रो. संजीव कुमार शर्मा



!! ज्ञानाग्रह !!

संरक्षक

प्रो. संजीव कुमार शर्मा (माननीय कुलपति)

सलाहकार मण्डल

प्रो. आनन्द प्रकाश

(समन्वयक, आई.क्यू.ए.सी. अधिष्ठाता, छात्र कल्याण) प्रो. राजीव कुमार

(अधिष्ठाता, समाज विज्ञान संकाय एवं शोध एवं विकास) प्रो. प्रसूनदत्त सिंह

(अध्यक्ष, संस्कृत विभाग)

प्रो. पवनेश कुमार

(अधिष्ठाता, वाणिज्य एवं प्रबंधन विज्ञान) प्रो. प्रणवीर सिंह

(आचार्य, प्राणि विज्ञान <mark>एवं</mark> प्रॉक्टर)

सम्पादक-मण्डल

मुख्य सम्पादक

प्रो. राजेन्द्र बङ्गूजर

अधिष्ठाता, मानविकी एवं भाषा संकाय

डॉ. बिमलेश कु. सिंह

(अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग) (संपादक, अंग्रेजी प्रभाग)

डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव

(सह आचार्य, हिन्दी विभाग) (संपादक, हिन्दी प्रभाग)

डॉ. विश्वेश

(सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग) (सदस्य) डॉ. अनिल प्रताप गिरि

(सह आचार्य, संस्कृत विभाग) (संपादक, संस्कृत प्रभाग)

डॉ. कल्याणी हाजरी

(सहायक आचार्य, अंग्रेजी विभाग) (सदस्य)

डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा

(सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग) (सदस्य)



Prof. G. Gopal Reddy Pro Vice Chancellor

Education is a tool to enlighten students, empower individuals and thereby evolves our society in a positive and progressive direction. As socially aware and alert citizens, we all must be committed to educate in order to encourage, to inspire, to guide, and above all, to teach and learn to respect humanity regardless of religion, caste, gender and class. As put by Mahatma Gandhi, persistent questioning and healthy inquisitiveness are the requisites for acquiring learning of any kind. Universities are places of understanding and analysing the world around us. Only then can we hope to change this world.

The essence of knowledge lies in a spirit of creative thinking, expression and experimentation. Literature is one of the most powerful media through which we can engage with the world meaningfully and creatively. It is a holistic art generated by introspection and retrospection, by self-questioning and a desire to seek answers, by imagination and a deeper understanding of realities. Pandit Deendayal Upadhyaya stated that there is a diversity and plurality in life but we have always attempted to discover the unity behind them and to continue it, I believe we should evolve as discovery driven university.

Human expression is at its most interesting when it crosses linguistic barriers and disciplines. I applaud the coordination and efforts of the team who has worked untiringly for bringing out this issue. I wish them all success.

Prof. G. Gopal Reddy



म • महात्मा गांदी केंद्रीय विश्वविद्यालय में "मित्रोरम राज्योत्सव" कर हुआ आवीजन

समाज को स्वयं के इतिहास और अपनी संस्कृति से सीखना चाहिए : प्रो. आशीष









शोध कार्यशाला ज्ञान संस्कृति

ती कार्यकात के गायान अध्या पर कर किये। व्यक्तमा राजी केरीय व्यक्तियानक के चालक परिता जिला वीतन राजकृतिय शुक्त राध्यार में नाम रहे मार दिस्मीय और प्रीविध कार्याराज्य के मायार आकार के बाँड युक्त अतिकी बीआकार ने बोक्सीची को देश का क्षीच्य

अवर्शन के विदेशन जीतीय विद्याप्त व्यक्तिया में जानके प्रोद्धान कर विद्याप्त कर विद्य कर विद्याप्त कर विद्याप कर विद्याप्त कर विद्याप्त

शोधार्थियों को समझ में आनी चाहिए शोध की भाषा : कुलपति



त्राम्बन है एक सर्वाधिक कि बिजानाम नाम

स्वास्त्रमा के भीतका विकासिया एवं स्थाप सार्थिक केंद्रांच विकासिया एवं प्रध्यान प्रतिक्र सिर्मा प्रतिक्र सिर्मा सार्थिक केंद्रांच्या सिर्मा सिर्मा के प्रध्यान प्रतिक्र सिर्मा प्रतिक्र सिर्मा सिर्मा के प्रध्यान के प्रकृत कर्मा के प्रध्यान के प्रकृत्य के प्रकृत के प्रकृत्य के प्रकृत के प्रकृत के प्रकृत के प्रकृत के प्रकृत के प्रकृत के प्रकृत

प्रतिनिधि = भारितारी

केविवि में प्रथम वार्षिक

खेल प्रतियोगिता शुरू

दैनिक सारकर नोत्रेली Page 4

तम अम्रोजन - केंद्रीय रिक्कीवरात्तव में मस्तीय पूंजी वाजर विषय पर हुई खापक क्याँ

'भारतीय पुंजी बाजार में पारदर्शिता और तकनीक के माध्यम से आए बड़े बदलाव'

विकार्य ईमानवारी और कलेकिका के साथ अध्ययन करें। प्रीक्षाके प्रीयासन



नवीनतम 25 बदलावों के बारे में विस्तार से बताया

ई-कंटेंट पर आधारित सामग्री तैयार करें : वीसी

विश्वति पर पार्चा करने के लिए बातावा गंध्ये केडीच विश्वविद्यालय के कुलचीर हो. संजीव कुमार शर्मा ने मंगलवार बीडियो कर्रेड्डिसिंग के गाध्यम से विश्वविद्यालय के ऑक्कारियें और डोन के साथ फैटक की. इस वैरान कसाओं के निलंबित इंनि के कारण हो सी मुकासन की भरपाई किस प्रकार की जाए पर विस्तार से चर्चा हाँ. पुलबंति ने सभी संसाय सदस्यों से इं-फंटेंट पर आस्त्रींस सामग्री तैया करों और इस तरा की आधिक से उद्देशक ई-सिम्मां के व्याम्बद्धन क्षेत्राला को उपलब्धना मृतिकात करने पर और दिया उन्होंने संकाद सदस्य असने बीडियो को सोमान मंदिया पर भी आपनोड कारी भी बार कारी, शार्जे को इन अध्यान

साथ ही सभी गतिविधारों के प्रतिदान हा चीक्यूमेंट संकाय सरक्यों की अबरे प्रक क्रिक्ट्रिंग सक्तेत्र संदेश का उनके पास मुगीता रखने का निर्देश दिया, व्हांग्हन विवक्तियाँ को ध्वान में गड़ते हुए कुलाड़ी यो, संजीव कुमार शर्मा ने आगं करने वाली विश्वतियों पर भी गंभीरतापुर्वक चर्चा की और सभी संबंधितों से कहा कि हमें अपनी तेवारियों को जावे राधानी होगे. सभी होन को प्रारत पत्र तैयार करने और सक्तम प्रश्चिकारी के अनुमोदन के लिए प्रशासन को प्रस्तुत करने और विशेषात्रों के पैनल प्रस्तुत कर्स के लिए करत. साथ ही यह भी निर्णय हुआ कि डीन प्रस्तपत्र तैयार करने बारने के लिक अपरोप कर सकते हैं.

प्रोपार्कता नमने को भी काद गता है

दैनिक भारकर मोतीहारी Page 2

18-Feb-2020

केंद्रीय विवि • 'लोकतंत्र का सीधा स्तंभ पञ्चकारिता' विषय घर व्याख्यान का आयोजन

'पञ्चकारिता किसी विचारधारा पर निर्भर नहीं होती यह हर प्रकार की बुराइयों को दूर करने का माध्यम है'

egostate start

A negotived vibile first season व्यवस्था त्रिये व्यवस्था प्रेम्प्स्य त्रिया प्रशासन्त्र परित्र प्रभाव स्थापन स्थित प्रमास्य त्रिया प्रशासन स्थापन स्यापन स्थापन पुरार भारत में बात कि भारत में बाब और अभिनामित की अभागत के अभिनात के महा पारतीय की जाते हैं। प्राथमिक हैं जात्रमा में कार्याचीवाल, जात्रमीवाल और केंद्रियाल की किस्सी कर जाते हैं। पार्टी की पारतीय की किस्सी कर जाते हैं। पार्टी की पारतीय की किस्सी कर जाते हैं। पार्टी की पारतीय की कार्याचाल की केंद्रियाल में की की पारतीय की की की है। पार्टी की की पारता की कार्याचाल की की की की पार्टी की की है। की की पार्टी की की पारता की की की की पार्टी की की की है।

मुज्यकनपुर तुवनार १६ अवदूवर २०१९

नगर संस्क्राण ****

व्यक्तितव्य का विकास और अवसर वर्ति समानता दिलाना में है कार

कोर पुरा कर कीर प्रमान कोर कोर ने बत कि प्रमान का तम्ही के भी अन्तर क्रिका से अनेत

तर सामित अपनी बात कहने के लिए स्वतंत्र । कार्यक्रम में वे रहे मीजूद प्रकारित वा त्या तर के वा आपान कर वा मान्य प्राप्त कर विकार करने वा अवाय करने के किए प्राप्त के करने के प्राप्तिक अपने वा वालों के किए प्राप्त के प्रकार के प्राप्तिक अपने वा वालों के किए प्राप्त के विकार करें के मान्य अपने के विकार कर कि प्राप्तिक किसी किएएका के किए नहीं कर कर कि प्राप्तिक किसी किएएका के किए नहीं की उनकारित का का का की सुरक्षी की दुस्कार का कार्य के Mark specific is strong on Non-strong office species fact & riche Ward, V स्वता के स्थापन क्षानक हैं राजान कुन्य मेरा में किया कार्यान में मेरिया कारणा मेरिया के श्रीतिक करिया में राजा कुन्या के संस्था पता मेरिया के श्रीतिक करिया मेरिया मेरिया के स्थापन करिया मेरिया मार्थ मेरिया मेरिया मेरिया मेरिया मार्थ मेरिया मेरिया मेरिया मेरिया मेरिया मेरिया मेरिया मेरिया

सुगौली - मोतिहारी आरापास

<mark>वर्ष केवल है - लिटिन के नहीं लागरे में अरम देनों को नहीं नहीं हुई जात होना है ने कहा - पहार के दिश्र जात</mark>

कैंसर दिवस पर स्वास्थ्य विभाग के निर्देश के बावजूद सदर अस्पताल में नहीं लगा निशल्क कैंसर जांच शिविर

वर्तमान में दुनिया भर में हर साल लगभग 76 लाख लोग कैंसर से तोड़ रहे दम. इसमें 40 लाहा लोग 30 से 69 वर्ष आयु वर्ग के हैं : हर्यवर्धन

वीका अपन्याम रेजा, वी रे वो स्थान मंत्रिक का होता है केवर





केविवि के छजों ने निकाली जागरकता रेली, नहा नहीं वारने का लिया संकरप

विकास में खेलकृद की रचनायक चुमिका के बारे में बातें रखी. उनीन केंद्रीय विवि में स्मार्ट क्लास शुरू, कुलपति ने दी वधाई

कता कि पहार्थ के साथ-साथ सेंगा जीतवेरिया भी अंधायकक है, खेल के सेंग में भी विश्वविद्यालय के क्यों सारता कर में हैं देश सारवाति के विद्यालय अंदित के लग में भी प्रधायक रोग ऑपरार्थ (प्रमायक) हो, किसम आयेक सीमानार्थ (प्राप्त आप अधिवार्थ हैं सारवार्थ करनार्थ, भी हो, त्योंसे कुमार प्रश्लिक करनार्थ में की हो, त्योंसे कुमार प्रश्लिक हैं हैं के के एस सार्थिक स्वार्थिक हैं के केंद्र सारवार्थ में सुरुष्ठ हैं के स्वार्थ के इस सार्थिक स्वार्थ हैं स्वार्थ हैं हैं



गोप्टी में पंचासीन दाएं से भाषा सकाय के उसकब प्रो , समेंद्र लिंह, कुलापीत प्रो , राजीव कुमार भर्मा, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्कान के अन्यन हो , याचरपति मिन्न, मार्जिको च संस्कृत क्रियामान्छक्ष प्रो , प्रसन्द द त स्थित = जाराहण

जारां, गोतिहारी । महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति पो. (द्यें) संजीव कमार शर्मा ने पहिल दी महायान उपाधवाच परिसर स्थित मीजिया अध्ययन विभाग में बुधवार को स्मार्ट क्लास का उद्घाटन किया। कुलपति ने स्मार्ट बोर्ड पर तकनीक युक्त टच स्क्रीन पर डिजिटल पेन से मीडिया अध्ययन विभाग को जुधकामनाएँ लिख कर स्मार्ट ब्लास की प्रस्कात को। गौरतलब है कि स्पार्ट क्लास से जुड़ने वाला यह प्रदेश का परला विश्वविद्यालय वन गया है। म्हात्या गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के सभी 20 विभाग स्मार्ट बलास की तकनीक

से जुड़ गए हैं। उन्होंने बज़ा बि भारत में संवाद की समद्ध व व्यापक परंपरा रही है। प्रकृति से संवाद हो वैदिक संचार है जिसका उल्लेख हमारे चेदों और उपनिषदों में हैं। मौके पर मीडिय अष्ययन विभाग के अध्यक्ष व अधिष्ठाता ग्री अरुण कमार भगत, प्रबंधन विभाग के अव्यक्ष प्री. पवनेज कमार, शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो आशीष बीवास्तव सहित हाँ परमात्म कमार मिश्र हो सामेत रमन हो सुनील घोडके, डॉ. उमा बादव एवं मीडिया अच्ययन विभाग के एमए एम फिल, पी एचडी के हात्र व शोधार्थी मीन्द्र थे।

नक जाग

समाज से मानवता कम होने का परिणाम है बढ़ता उपभोक्तावाद

हात स्थिति । प्राप्त को अनेन्द्र का स्था विद्या कर विद्या के स्था कर विद्या कर विद्



इन्छ, हो होन सम्बद्ध पूर्व भी सन्दर्भ

स्था के प्रश्न के स्था का विकास का व्यावस्था कि स्था का व्यावस्था कि स्था का व्यावस्था के स्था का व्यावस्था का व्यावस्था का स्था का स

Prof. Anand PrakashDean Student's Welfare
Campus Director, Chanakya Parisar



It gives me pleasure that Mahatma Gandhi Central University (MGCU) Motihari, Bihar, is going to publish its annual magazine '**GYANAGRAH'**. Good things remain good only because they are always rare. I am glad to pen for this wonderful annual magazine as an appreciation of the commendable efforts put forth by the team for its grand beginning. It will prove to be landmark in the history of MGCU and would provide a glimpse of the present and future of the University. I hope that this magazine will showcase some of the best creative endeavours of students and faculty alike.

Please accept my best wishes for continuing success.



Prof. Rajeev KumarDean, School of Social Sciences
Campus Director, Gandhi Bhawan Parisar

Remarkably, this year marks the 150th anniversary of Mahatma Gandhi. The Mahatma Gandhi Central University decided in 2020 to publish a new magazine, 'Gyanagrah'. Its first issue is based on Gandhi. Its floor would provide an opportunity to enrich discussions and explore complex contemporary issues, inter-disciplinary in nature. NEP 2020 also promotes future oriented and innovative researches. I hope this magazine will be a part of it and assist us in enhancing our skills so that we can meet pedagogical demands.

I express my good wishes and see the magazine a milestone that continues to grow in all ways in the years to come.

Prof. Pavnesh Kumar
Dean, School of Commerce &
Management Sciences,
Campus Director,
Pt. Deen Dayal Upadhyay Parishar



Nurturing creativity and inspiring innovation are two of the key elements of a successful education, and the university magazine is the perfect amalgamation of both. It harnesses the creative energies of the academic community and distils the essence of their inspired imagination in the most brilliant way possible. Hence, I am delighted to know that Mahatma Gandhi Central University's annual magazine 'GYANAGRAH' is ready for publication. I take this opportunity to congratulate the editorial board for bringing out this magazine as per schedule. It is an achievement considering the effort and time required. May all our students soar high in uncharted skies and bring glory to the world.

I wish them to experience victory in all of their future endeavours.



Prof. Pranveer SinghProctor
Mahatma Gandhi Central University
Motihari, Bihar

It is indeed a 'Eureka-moment' for the academic fraternity of Mahatma Gandhi Central University, Motihari for being on the crux of publishing its annual magazine 'Gyanagrah' for the year 2020. Congratulations to the entire team for working relentlessly against time to the last reserves of their physical endurance to make it a grand reality. I wish the magazine many more years of superbly crafted and supremely insightful articles resplendent with piercing perspicacity into the contemporary issues.

I hope, 'Gyanagrah' will fulfils its *raison'd etre* and serves as a inflexion point of seamless creative endeavours.

With bountiful gracious gratitude and best wishes for its unbridled success!!!

अम्पादकीय

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी की सतत् ऊर्ध्वगामिता में वार्षिक पत्रिका 'ज्ञानाग्रह' भी एक आयाम के रूप में जुड़ रही है। 'ज्ञानाग्रह' हमारे माननीय कुलपित प्रो. संजीव कुमार शर्मा के सृजनशील एवं रचनात्मक मानस का प्रतिफलन है। वे स्वयं काव्य-मर्मज्ञ एवं बहु आयामी व्यक्तित्व से सराबोर हैं, जिन्हें हम विभिन्न अवसरों पर महसूस करते और गौरवान्वित होते रहे हैं। 'ज्ञानाग्रह' के रूप में विद्यार्थी एवं शिक्षकों की सिम्मिलत रचनाशीलता को मंच प्रदान करना उनकी दूरदर्शिता का ही परिचायक है।

विश्वविद्यालय की वार्षिक पत्रिका का यह प्रथम बहुप्रतीक्षित अंक है। यह वर्ष गाँधी जयंती सार्द्धशती का है। 'ज्ञानाग्रह' का पहला अंक 'गाँधी विशेषांक' है। यह पत्रिका विश्वविद्यालय की ज्ञान पिपासा एवं गाँधी जी के सत्याग्रह का सम्मिलित रूप है। जो इसके नाम से भी ध्वनित होता है।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय ने मोतिहारी के शैक्षिक परिवेश में अनिवार्य उपस्थित दर्ज की है। चाहे वह समय-समय पर होने वाले भव्य आयोजन हों, विश्वविद्यालय में कदाचार-मुक्त परीक्षा हो, नियमित शैक्षिक वातावरण हो, शिक्षकों की स्थायी नियुक्तियाँ हों, शिक्षकों का अथक परिश्रम हो, विद्यार्थियों में अनुशासन और जिज्ञासा वृत्ति हो, बनकट में गाँधी-भवन का नित बदलता स्वरूप हो, कोई भी विश्वविद्यालय से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। यह उसे अपनी ओर अनायास खींच ही लेता है। विश्वविद्यालय मोतिहारी की जीवन-शैली का अभिन्न अंग बन गया है। राष्ट्रीय सेवा योजना, एक भारत-श्रेष्ठ भारत के कार्यक्रम, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और अभी कुछ दिन पहले माननीय कुलपित द्वारा 'लोक कला एवं संस्कृति निष्पादन केन्द्र' की स्थापना विश्वविद्यालय की प्रगित में चार चाँद लगा रहे हैं। माननीय कुलपित का अथक परिश्रम साकार रूप ले रहा है।

'ज्ञानाग्रह' में विद्यार्थियों की प्रकाशित कुछ रचनाएं भले ही अनगढ़ हों, परंतु उनमें देश और समाज के प्रति जो चिंता प्रकट हुई है, इससे उनके ऊपर गर्वानुभूति होती है कि देश का युवा देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी से सचेत है। वह सामाजिक विडंबनाओं, स्त्री-पुरुष समता, किसान, पर्यावरण और अन्य समसामयिक मसलों पर सोच रहा है। ये मसले उसके सृजन के विषय बन रहे हैं।

मैं माननीय कुलपित महोदय का विशेष हार्दिक आभारी हूँ, जिनकी प्रेरणा और वरदहस्त इस दौरान लगातार बना रहा। मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ पित्रका के सलाहकार मंडल एवं हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत के शिक्षक एवं विद्यार्थी संपादकगण को, जिनके अथक प्रयासों से रचनाएँ संकलित-संपादित हुईं। पित्रका में प्रकाशित रचनाकारों का भी हार्दिक धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ। आशा करता हूँ कि यह अंक सबको पसंद आएगा।

प्रो. राजेन्द्र बड़गूजर



प्रो. राजेन्द्र बड़गूजर मुख्य सम्पादक







विषय	रचनाकार	યુજ
1. शिक्षक संपादकीय	डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव	13
2. विद्यार्थी संपादकीय	रश्मि सिंह	15
3. किताब मेरे जीवन में	प्रो. विकास पारीक	17
4. शिक्षा	मोहन कुमार	18
5. भरोसे का नाम ही पत्रकारिता	डॉ. अंजनी कुमार झा	19
6. माँ	श्वेता रानी	21
7. चम्पारण सत्याग्रह	सम्राट कुमार	22
8. मैं लोकतंत्र हूँ	विवेकानन्द राय	22
9. vi at	मनीष ठाकुर	22
10. गाँधी	आलोक कुमार	23
11. मंजिल की राह	अंचला कुमारी	23
12. नॉस्टैलिजिआ, झुको मत!	डॉ. श्रीधर सत्यकाम	24
13. माँ गंगा	राहुल कुमार	24
14. राष्ट्र के विकास में बाधाएँ	रोशन कुमार	25
15. युद्ध कर बर युद्ध कर!	साक्षी कुमारी	27
16. डर (कोरोना)	रितेश कुमार सिंह	28
17. जाग बिहारी जाग	सचिन कुमार सिंह	28
18. आधुनिक समाज में ग्रंथालय एवं सूचना केन्द्रों की भूमिका	अरुण कुमार शर्मा	29
19. बार-बार कर रही यही चीत्कार है	डॉ. अपराजिता उपाध्याय	30
20. उम्मीद का दिया	इंदुबाला	30
21. बरखा (कहानी)	रश्मि सिंह	31
22. यू.पी.एस.सी. बहुत कुछ मांगती हैं	प्रिन्स कुमार	34
23. मजदूर	मनीष कुमार	34
24. कुछ तो पूछो!	डॉ. अपराजिता उपाध्याय	35
25. कुछ करने का मौसम	अंजली कुमारी	35
26. बेटियां	संकल्प श्रीवास्तव	36
27. कोरोना को हराना है	इंदुबाला	36
28. लॉकडाउन में आर्थिक मंदी का दंश झेलता बेहाल किसान	सन्नी कुमार मिश्रा	37
29. स्वच्छ संदेश कहानी	मुस्कान	34
30. प्रकृति की मार में दिखा नई पीढ़ी को प्रकृति का सुन्दर रंग	सन्नी कुमार मिश्रा	39
31. गाँधी, चम्पारण और स्वतंत्रता आन्दोलन	अरुण कुमार शर्मा	40
32. कविता	राज पाण्डेय	41
33. गाँधी स्वच्छता और स्वच्छ भारत अभियान	शम्भु राज उपाध्याय	42
34. गुमनाम सितारा	ऋचा पुष्कर	43
35. एक औरत है वो	अरुणेश कुमार	44
36. नई शिक्षा नीति का भविष्य चुनौतियां, संभावनाएं और आशंकाएं	आशा	45
37. कर्त्तव्य	डॉ. श्वेता	49
38. किसानों हेतु एक कदम	अनादि कृष्ण अतुल	45
39. गाँधी और हिन्दी कविता	मनीष कुमार भारती	50
40. मैं चाहता हूँ	डॉ. कुंदन किशोर रजक	52
41. रिश्ते	स्मृति	52
42. चिड़िया	डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव	53
43. आदमी और जानवर	अवधेश कुमार	53
44. महात्मा गाँधी का ग्राम स्वराज्य	प्रो. सुनील महावर	54
45. धूमिल गाँव	डॉ. आशा मीणा	56
46. महात्मा गांधी और सामाजिक समता	श्रीप्रकाश	57
47. मेरी आदत है!	रश्मि सिंह	58
48. शिक्षक दिवस @2020	प्रो. आशीष श्रीवास्तव	59
49. लौट आ ओ धार!	सोनू कुमार ठाकुर	61
	6 9	

शिक्षक संपादकीय



डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव सह आचार्य, हिन्दी विभाग

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय चार वर्ष पूरे कर अपने पाँचवें वर्ष में है और यह विश्वविद्यालय की पहली वार्षिक पत्रिका है। विश्वविद्यालय छोटे-छोटे राष्ट्रों की तरह होते हैं -बुनियादी रूप से एक दूसरे से भिन्न। वर्षों और दशकों के अथक प्रयास के बाद एक विश्वविद्यालय बनता है और उसकी एक विशेष संस्कृति निर्मित होती है। यह विश्वविद्यालय नयी पौध की तरह है और अभी से इसमें नये पत्ते और नये फूल उग आये हैं। इनमें ताजगी है, सौन्दर्य है। किन्तु, अभी ये अलक्षित भी हैं और अनगढ़ भी। इन्हें बिना सजाये-सँवारे बिल्कुल स्वाभाविक रूप में रखा गया है या यों कहें कि इन पर आलोचना की कैंची या सम्पादक की कलम नहीं चली है। इन्हें आप सबके समक्ष रखते हुए हर्ष भी है और किंचित संकोच भी। सुधीजन इन्हें सराहेंगे या किमयाँ निकालेंगे यह तो वे जानें, किन्तु कभी अद्दहमाण ने किंचित गर्व के साथ संदेशरासक में लिखा था ''यदि विविध प्रकार के प्रचुर गंध से युक्त पुष्पोंवाला पारिजात वृक्ष देवराज इंद्र के नन्दन कानन में फूलता है तो क्या शेष वृक्ष न फूलें?''(जइ अत्थि पारिजाओ बहुविहगंधड्डकुसुम आमोओद्य फुल्लइ सुरिन्दभुवने ता सेसतरू म फुल्लन्तुद्य।) इसी गर्व के साथ 'ज्ञानाग्रह' का यह प्रवेशांक प्रस्तुत है।

'ज्ञानाग्रह' उस क्षेत्र से प्रकाशित हो रहा है जहाँ से महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह के द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन में अपने कदम रखे थे। चम्पारण सत्याग्रह 1917 में हुआ और उसके शताब्दी वर्ष 2016 में महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार की स्थापना हुई। ऐसे में पित्रका के नामकरण में उस विरासत का स्मरण स्वाभाविक भी है और आवश्यक भी। सत्याग्रह के साम्य पर ज्ञानाग्रह नामकरण न केवल उस विरासत का स्मरण है, बल्कि इस विश्वविद्यालय के उद्देश्य का परिचायक भी है। इस 'ज्ञानाग्रह' के कई रंग हैं किवता, कहानी, लघुकथा, गृज़ल और वैचारिक आलेख जैसी विविध विधाएँ हैं तो विषय की दृष्टि से भी वैविध्य है। कुछ रचनाएँ परिपक्व हैं तो कुछ बिलकुल अनगढ़। इन अनगढ़ रचनाओं का भी महत्त्व कम नहीं है। यही विश्वविद्यालय रूपी नयी पौध के नये पत्ते हैं, नये फूल हैं। इनमें नयापन है, ताजगी है, नया स्वर है। इस नयेपन को स्वीकार करने की जरूरत हर युग में बनी रही है। आगे जब यह विश्वविद्यालय वट-वृक्ष की तरह विकसित होगा तब भी ये नये फूल और नये पत्ते 'ज्ञानाग्रह' के पन्नों में अपने नयेपन का अहसास कराते रहेंगे!

नव गति नव लय ताल-छंद नव नवल कंठ नव जलद-मन्द्र रव नव नभ के नव विहग-वृन्द को नव पर नव स्वर दे !

इन्हीं शुभकामनाओं और आशाओं-आकांक्षाओं के साथ 'ज्ञानाग्रह' का प्रवेशांक सुधीजन को समर्पित है!

स्वस्थ भारत अभियान 29 अगस्त 2019











विद्यार्थी संपादकीय

"मैं तो कहता-कहता चला जाऊंगा, लेकिन किसी दिन मैं याद आऊंगा कि एक मिस्कीन आदमी जो कहता था, वही ठीक था।" - गाँधी 16 अक्टूबर 1947



रश्मि सिंह पीएच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग

'व्यक्ति' से 'विचार' बनने की अद्भुत जीवन-यात्रा का सुंदर संदेश देने वाले गांधी वर्तमान समय में और-और याद आ रहे हैं। उन्होंने 'नरसेवा' को ही 'नारायण सेवा' मानकर संपूर्ण जीवन मानवता को समर्पित कर दिया।

गाँधी के ही शब्दों में, ''लाखों-करोड़ों गूंगों के हृदयों में जो ईश्वर विराजमान है, मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर को नहीं मानता। वे उसकी सत्ता को नहीं जानते, मैं जानता हूँ। मैं इन लाखों-करोड़ों की सेवा द्वारा उस ईश्वर की पूजा करता हूँ जो सत्य है अथवा उस सत्य को जो ईश्वर है। 'विचारपुंज' गाँधी आज के समय की जरूरत हैं। तबाही, अशांति, असुरक्षा के तिलिस्म में जकड़े समाज को गाँधी के विचारों को जानना, गुनना, महसूसना और भी जरूरी हो गया है। वैश्वीकरण ने संघर्ष के नए रूपों को जन्म दिया है। धीरे-धीरे 'बाजार' के रूप में तब्दील हो रहे समाज में मनुष्य भी 'मशीन' में परिवर्तित हो रहा है। आज गाँधी के बहाने अपने 'शीशे' से गुजरना बहुत आवश्यक है। आईने की सफाई के साथ-साथ ही 'चेहरा' भी सफाई की मांग कर रहा है। 'मैं' और 'तुम' की यात्रा काफी संघर्षपूर्ण रही है। अब 'हम' को भी स्वीकारना होगा।

'प्रेम' और 'अन्याय' के द्वंद्व को सुलझाते हुए गाँधी ने कहा था, ''प्रेम को तरजीह देनी चाहिए क्योंकि, जहाँ प्रेम हो, वहाँ अन्याय हो ही नहीं सकता।'' और आज संपूर्ण विश्व को 'प्रेम' की सबसे ज्यादा जरूरत है। इंसानियत के भरोसे को जिंदा रखने के लिए प्रेम सबसे उत्तम मार्ग है। जिगर मुरादाबादी भी तो यही कहते हैं -

> "उनका जो फर्ज है वो अहल-ए-सियासत जाने मेरा पैगाम मोहब्बत है जहाँ तक पहुँचे।"

महात्मा गाँधी के विचारों से अनुप्राणित महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय बिहार, निरंतर अकादिमक एवं पाठ्य-सहगामी गतिविधियों में सिक्रय है। विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपित माननीय प्रो. संजीव कुमार शर्मा जी के कुशल मार्गदर्शन में हम सब सीख रहे हैं, रच रहे हैं। वैश्विक महामारी 'कोविड-19' के संकटकालीन पलों में भी वार्षिक-पित्रका 'ज्ञानाग्रह' का संपादन विश्वविद्यालय की जीवंतता एवं दूरदर्शिता का प्रमाण है।

'गाँधी केंद्रित' यह पत्रिका का पहला अंक है। इन सुखद क्षणों के साक्षी हम सभी हैं। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों से शिक्षकों, सहयोगियों एवं छात्र-छात्राओं ने अपनी रचनाधर्मिता से हमें जोड़ा है। कविता, कहानी, लेख आदि के माध्यम से भीतर की आवाज एवं सवालों को साझा किया है। इन रचनाओं से गुजरना सुखद तो है ही साथ ही साथ देश, समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का भी एहसास हो रहा है।

पत्रिका के संपादक, 'संकाय प्रमुख' भाषा एवं मानविकी संकाय, महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार प्रो. राजेन्द्र बड़गूजर सर के प्रति आभारी हूँ। आपके भरोसे ने मुझे और-और सीखने, रचने की प्रेरणा दी है। आगामी गतिविधियों में भी अपनी सहभागिता, सिक्रयता एवं जीवंतता के भरोसे के साथ।

मिजोरम पर वृत्त चित्र का किया गया फिल्मांकन

गोतिहारी निज प्रतिनिश्ची

महात्मा गांधी के न्द्रीय विश्वविद्यालय के एक पारत श्रेष्ठ भारत समिति ने ओल्ड फैकल्टी हॉल, चाणवय परिसर में अपने जोडी राज्य 'मिजोरम राज्योत्सय' का आयोजन किया। मिजीस्म गण्योत्स्य दिवस के उपलब्द में एक प्रदर्शनी का भी आसी जन किया हता कियाँ। यांकार सहस्यों और साओं ने भी लिस्सा लिया। एक भारत क्षेप्त भारत समिति हारा आधोजित कार्यक्रम की सभी लोगों ने सरहत्व की।

प्रदर्शनी का समन्वय समिति सदस्य डॉ कुंदन किशोररजक ने किया। प्रदर्शनी के उपरांत. द्वीप प्रज्वलित कर मिओरम दिवस का उत्सव शुरू किया गया। इस अवसर पर आनंद प्रकाश, डीन छात्र अधिष्ठाता, प्रो. आशीप श्रीबास्तव, संकापाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, प्री. पवनेश कुमार, संकायाध्यक्ष, प्रबंध विज्ञान, प्रो. रिफक उल इस्लाम, , एक भारत बेष्ट्र बारत के जीतान अधिकराता भी प्रस कार्याक्षित्रम् हे स्टब्स्य कार्यन्त्रम् हों, रीरम जीवारतय ने फिया। कार्यक्रम की शरूआत विद्यार्थियों हास मित्रों गीत

- मिजोरम के बारे में वतचित्र का किया गया फिल्माकन
- प्रदर्शनी का भी किया गया

की प्रस्तुति से हुई। इसके उपरांत मी. क्रिया उल्लाह के हार व्याख्यान दिया गया। क्यों मिजोरम के बारे में एक वृत्तचित्र का फिल्मांकन किया गया। कार्यक्रम के मख्य अतिथि प्रो आनंद प्रकाश ने इस तरह के आयोजन की सराहना करते हुए विद्याधियों को उनके प्रवास और सुंदर मिनो गीत की प्रव्तृति के लिए उत्साह वर्धन किया। प्री. आशीष बीवास्तव ने विद्याधियों को पोल्मतित करते हुए इस पर बल दिया कि समाज को रखवं के इतिहास व अपनी संस्कृति को गोखना चाहिए। मोडल अधिप्टाता, यो. रफीक उल इस्लाम ने मिजोरम के को में और आज के उत्सव से क्या सीखने को मिल्ट है इस पर चर्चा की। प्रो. ब्यालाय से विशोध आप से कालानेक से एक महत्वपूर्ण और जीवन के मृत्यवान सांस्कृतिक प्रधाका उल्लेख किया।

प्रिंप प्रमु तथाल प्रमुख्या आपाग

र्शन, राज्य ब्यरो। महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय. मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा 'टीवी न्यूज पैकेजिंग एंड एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन बुधवार, 24 30 बजे से होगा। इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी की अध्यक्षत ीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर संजीव कुमार शर विषय प्रवर्तन मीडिया अध्ययन विभाग के अध्यक्ष एवं अरुण कुमार भगत करेंगे। मुख्य अतिथि के तीर पर जी न्य क स्वयं प्रकाश होंगे। संगोधी में विशिष्ट अतिथि के तीर प त्ती के एग्जीक्युटिव प्रोड्युसर वैवभ वर्धन दुवे हैं एवं वि र नोएडा से वरिष्ठ टीवी पत्रकार आदर्श कुमार हैं। महा श्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग के एसोसिएट प्रो संगोष्ठी के संयोजक डॉ. प्रशांत कुमार ने बताया कि रा में 'टीवी न्युज पैकेजिंग एन्ड स्क्रिप्टिंग' के विविध आ द्वारा चर्चा की जायेगी जो मीडिया से जुडें शिक्षकों, एवं विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी होगी। उन्होंने g) से संबंधित समस्त तकनीकी एवं अन्य तैयारियां महा श्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा की जा रहं ब संगोष्टी गगल मीट के माध्यम से आयोजित होगी, जिसर न प्रांतों से लगभग सैकडों मीडिया छात्र, शोधार्थी एर

मानववाद की बुनियाद पर लिखा गया संत साहित्य

attical for obbid

केत्वर्गकार प्रदेश काना तंत्रे रामीक सार है वेसीर विभवितानग्रीसार दे त्त्वकारो संपर्धतः वर्षान ni statu del face i. वर्षेत्री का अर्थन्त्र किए एका मन्त्रेष्ट्र से अनुसा समग्री प्रोमेरीय प्राचीर की संस्कृतीयक A service provided forther a

per siele is un i जगमा के पर सा पानंतर हो. profession as place to चल में वसीयर माम्पर्य मा

ई संगोध

• १५ अस्य गानीव गीम स

• प्रशासित वी गान

was had not one h प्रकार के सामग्र अवस्थित लेकरे हर सम्बोदन विकास को ओ थी संबद्ध किया आका महत्र था है eller arbins stretter arbins of those is forg waterwith

अवस्थित संस्थात में कुलको हो. तांत्र कुमा हर्ष ने महा कि स्त प्राप्त प्रतान को प्राप्त है। artises because a set al. Problembanes harrie de

तापुरक ने बता कि एत प्रतिक के प्रोग्वेशिक् सम्बोधार है। पर argined took floor का तमें काक करें। श्रीकार दर्त है। चीर समादे रे स्थार नेहें क्षीत्राक मुख्य के बीच करणाह है। बर्ग, मुख्य बन्दा के रूप हो, इत्ती से अमिती इत्यो रेक्चन प्रेज नेईन विश्वविद्याल र क्या कि. अंग स्टॉल्ट की सारक संबंधित-शास विभाग है हैं।

बेरियार्थ स्कूता सर्हे ने निर्मा के अंबर से प्रीति है। अर राज ने बांस काफे रागे के असा को

हर, सम्बद्ध अन्तर्वात विशे राज्य र बाँबा जाना के दोर गाला प बड़े हैं। का पान बाद मा अस सता है। इससे पूर्व में जीता क प्रजानिको अधिको सामा ef sixt devote mens the level is born water from self distribution repris terms cruzus feè four à विका अधियों का पीतर हुए स्वारत प्रदे तेतील प्रमार कर्त व बारत पांच में क्रिकेट हो हैक रेको ने किया राज्यस्य राजन के ed-a fler i formandon si under his ex-vitue is गरेचे, हो, अब रेग, साम spirit or vising masses रांच ने वर्ष में विद्वो हुए आमें . साम कार्यात कींच मा नाम है . सर्वेज्य है सर्वेच्ये ने विद्या

इन्द्रस्तान, 4 जलाइ,2020

गीता पढ़ना और सुनना सौभाग्य की बात

- केविटि में वर्तमार प्रिकृत्व में गीता की प्रासंगिकता" विषय पर वेदिनार SECTION.
- पाइप्कानों में उद्यमिल होगा ज्ञान योग अध्यक्ष : कृतधी

efafafin in still each

क्राज्य राजे जेतेर निर्माणका है क्षांत्रम चित्रान विभाग के तत्त्वावायान में विनामा की ई-विका प्रतासकार श्रीकाना of undirect from with from बीजार का आक्रेजन किया गया.

प्रवासना पालचेश विकास नई विकास के राष्ट्रीय अध्यक्ष, आस्प्रसाम, साथा प्रात के मोदाराज य देखिनार के मुख्य बता प्रदु नामका में वील के स्लोक



में संबोधन की जुरुवात की, उस्तीने बार कि 'गैला सुरीत बाने केन्द्र है अर्थत बीता को भली प्रकल ग्रहका अर्थ और जानवादित अस नारक है रण कर तेना मुख्य करोळ है, जो कि साथ पदानक घरनान जो कियु के पुरार्कार्वेंदर से निकाली पुत्र हैं, उन्होंने पीता के सहाय की पानों करते हुए बाल कि मीना पहला, सूनना और तथा था

मान करने का सीमान गर्भ की नहीं पिलन जिल्ला वर्धने का हमी अधियों ने हातार्वे पाल जाले प्राह्मवंत्र किया, कही 'क्यूटेक कुटुक्कम' के कार में आह इपलित है, विश्वविद्यालय के कुलबंत य वेचिताः के प्रश्चक ग्रे. ग्रेजीय कुमा। गमा ने अपने संबोधन में गोर्ड के बार में पहल ही दिस्तार में एवं सरक शब्दों में सतने हुए बढ़ा कि नीता की

है, मेंगा की लेकर जनगनम में अहन अपना पर क्या कि, जब मोई पटना से जाती है, तो मीता के इस करोड़ की पी यह किया जाता है, "मेर सिटीन हरुवापि नेप दहति प्राप्ताः न पैन जनेदान्तवाचे स शोषवीत मान्ता। तथीत इस जान्य को सरज नहीं काट सकते, इसको आन नहीं जाना सकते. इसको जान नहीं गाना सकता औ बाद पति सुखा सम्बन्ध हो, राजां ने श्रम बेन के जान्यक को पास्टकारों में अप्रीमन करने की बात करों, उससे पूर्व व्यक्तिक एवं प्रक्रीम विद्वान संस्ता के अभिष्यास संवित्ता के अध्यक्ष पेत पर विका भारतम आसीता चेने पर प्रमानका ब्यक्त की और साम

अस्तुन्त पार्टिका अस्ति के प्रति आचर जतावा, न्यास्तान स संचालन अभेवन विकास विभाग की सताय अधिकार जी अल्पा एक्सान ने विध्या जबकि उन्हेंपन विद्यान विभाग के पीएनकी क्षेत्रकों चंदन और ने चन्त्रकाद जायन विशेषाः इस अन्यसर या फेर्चिति के भ्री सुनीर मुनार लाह् यपन सुगंत है जिल विक्र रिनेश शास, अमनेत पुन्तर प्रामान्य विश्व भी प ओव्यर, जॉ धवनाव पतिष, पेजारको विफालका गडा, निस्टम एक्सिक्ट द्रीपक देवना, मानक्तान पत्रकारित विफालियालय के द्री अवस्थि निस्त समेत बड़ी संख्य विशव, मोपनी म देश के श्रिपन विदेश है इतिचामी ऑनलहर उपनिवत वे

महात्मा गांधी केंद्रीय विवि में प्रथम वार्षिक खेलकृद प्रतियोगिता प्रारंभ

जारा, मीतिहारी : महात्मा गांची कंदीय विश्वविद्यालय के प्रथम वार्षिक खेलकृद प्रतियोगिता का शुभारंभ बनक्द स्थित गांधी भवन परिसर में हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा थै। इस अवसर पर कुलपति न प्रथम वार्षिक खेल-कृद प्रतियोगिता के इस आयोजन के लिए बनई मई समिति के सदस्यों, विद्यार्थियों एवं प्रतिभागियों को बचर्ड दी एव विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास में खेल-कुद की रचनात्मक भूमिका के बारे में अपनी बातों को रखा। इस समारोह के विक्षिप्ट अतिथि डॉ पद्माकर मिश्र ओएसडी (प्रशासन), प्री. विकास पारिक, ओएसडी (बित्त), छात्र अधिष्ठाता प्रो. आनन्द प्रकाश, परिसर निदेशक प्रो. प्रवनेश कमार और प्रो. राजीव कमार उपस्थित वे । खेल-कट के इस वार्षिक समारोह में मुख्य रूप से क्रिकेट, शतरंत और कैरम, महिला एवं पुरुष कबड़डी, महिला एवं पुरुष बैडमिंटन, एधलेटिक्स, महिला एवं पुरुष वॉलीबाल आदि खेलों का आयोजन किया जा रहा है उद्घाटन समारोह का अंत विख्वविद्यालय के स्पोर्ट अधिकारी डॉ. दिनेश व्यास द्वारा धन्यवाद जापन देकर किया गया।

एकसपर्ट रयु

केरीकी के जानी के लिए हैं विमार्ग की गुर्ज

विवस परिविधा को अवनार में बदलने का मीका

in

लॉकडाउन को लेकर इनदिन चाहिए, इसको लेकर प्रभात

तींकडाइन के दौरान छात्री की स्तामदाय करने का बेहदर भीका है. युवा वर्ग को सरकार के निर्देशों का पालन करते हुए घर बैठे ऑनलाइन पढ़ाई करें , केविवें के स्वत-समाओं के लिए ई विमर्श की व्यवस्था की गई है, जिससे छात्र ओनलाइन पढ़ाई कर सकते हैं साथ ही युट्यूब पर शिक्षकों के लेक्बर उत्तरे गए हैं . खेमवार से पावर प्रजेटेशन की व्यवस्था की गई है साथ ही वीडियो कॉन्क्रेसिंग की

कारमंत्र की जाणी। बात विश्वाची के संपर्क में हो, इसके लिए सभी शिक्षवी को बाट लाए

रूप बनाकर अपने-अपने विभाग के सात्रों को जोड़ने का निर्देश दिया गया है. **प्रो. संजीव कुमार शर्मा**, gordi, क्षेत्रेर, संरक्ष

महात्मा गांधी केविवि में सात दिवसीय शोध कार्यशाला शुरू

र्गमामित्र विशिष्ट्र

के अंग्युटर व सूचना प्रौदोसिको विकास के सम्बाख्यन में सारा रिक्सीर कीम नार्मशाला पुरुवा को तुरू हाता, विश्वशालका हो, को जुरू हुआ, क्रियामा विकास प्रतिक ने प्रतिक कि संपूर्ण विशान व क्षेत्रीतिको से क्षेत्र को दर्शिक्ष लेखा से इस कार्येकल हा अधीजन विश्वा जन रहते हैं, इसके बाद कार्राक्षण के मुख्य अस्तिय व विरोध के पुरस्तिय में मंत्रवेत पुरस्त सम्बन्ध में बहुई भी विकित्स बार्च को पार्टन भी ामस्य पर विचार काने का आहन मिया. साथ तो देखें पायाओं की

बस्त्रम्य गंधी वेडीव विश्वविद्यालय



भी अञ्चल में भोरते का मुख्या दिया गर्भा वसा थे, वंध विकास प सम्मकाती में पन्ने सम्प्राच front is extends four को पुरुगोत्श्रीमा किसे जाने को आपायकता को रेखाँकत किया. कार्यक्रम के और में विश्वाप के वी भूमीत पुरस्त सिंह ने अन्यवाद आपन थ भौतिको संबादान्यक हो अन कुमार कृता, पुरस्कानमा विद्वान है वभागचाह से रहीत चौचने, मा अध्यक्षत विश्वचान्यक्ष हो. जुनीः भरावर के अधिरेक हो जुनीः किनोन दावीय,हो सिरोध मिश्र ही विकास कुमार, शुभार कुमार असम्बर्गित कुमार, हो दिनेत स्थान ज़ॉट शिक्षम व अधिवारी उपस्थि वे वहीं काल बीट क चले ह गाप में देव भी के करोब और favoral schaped is frequed by t क्षीन कोने से जुड़े थे, जिनमें पंजाब पूर्वेतर राजा, मध्यप्रदेश व मातर में नदी संख्या में वाप-वाम नदे

दैनिक भास्कर

21-Feb-2020 भोतीलरी Page Z

राजकुमार शुक्ल सभागार में नव पेशेवरों के क्षमता संवर्धन के लिए दिए गए टिप्स

Crank h

धो भगत बने पुरतक न्यास के

न्यासी सदस्य

तकनीक के दुष्प्रभावों पर ध्यान दें : प्रो. मनोहर



uniform a velociti

MANAGED AND STREET, IN व्यवस्था पात पात्र राष्ट्रपात्र के राव्याच्या के प्राप्त पात्र के राव्याच्या के राव्याच्या के राव्याच्या के राव्याच्या पात्र के राव्याच्या पात्र के राव्याच्या के राव्याच्याच्या के राव्याच्याच के राव्याच्याच के राव्याच के राव जर्बफ जर्मीक विशेष्ट कहा होत्र कर्म गर्देश पुत्र विशे के संपूर्ण विश्वप स्थाप के पूर्व विशेषक हैं, सर्वेश कार है, प्रतिहास हैं, अंगर

जन्म अवस्थात है। सार्वक्रम के अने स्थाननाह जो राज पुरात पोर्डास्त्र म असी का जाना जाता के चीन असी में तिरा तिरा प्रमाणिका प्र असी जिसस की, या उसका पांध में जिटा असून की पुराला कार्य की अस्थानका और तम जिस्स की स्थानकारों का कर्म की की अस्थान त्राहा वे कार्याता के जाहरू त्राहा प्रकीशीता में अनुस्था के संशास्त्र प्रकीशीता में अनुस्था के संशास्त्र और पृक्षिण के की में त्रिकृत जानकार में स्थानिक जीतान

प्रभात खबर, 24 जून,

केंद्रीय विवि में आज राष्ट्रीय संगोष्टी

मोतिहारी। केंद्रीय विवि के मीडिया अध्ययन विभाग एवं शिक्षा अध्ययन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में जिला स्कुल, चाणक्य परिसर स्थित राजकुमार शक्ल सभागार में 19 फरवरी को राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित है। यह एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भारत की शिक्षा व्यवस्थाः कल आज और कल' विषय पर केंद्रित है। उद्याटन सत्र प्रातः 9:30 बजे से 11:30 बजे तक है। उदघाटन सत्र की अध्यक्षता महात्मा गांधी केंद्रीय विवि मोतिहारी के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा करेंगे, वहीं मुख्य अतिथि के तौर पर प्रख्यात लेखक एवं शिक्षाविद जे नंदकमार, विशिष्ट अतिथि के तौर पर छत्रपति शाहजी महाराज विवि , कानपर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता होंगी।

गांधी के आध्यत्मिक संपूर्णवाद में समस्याओं का समाधान

केंद्रीय विवि

ත්තියේ සිත වෙතිම

जॉर्ज गैसर पुल्लिसिटी बुएसर के सारावेत हे महत्त्व्य गांधी बेल्लीय Tiesellemone obtwell, Seen is गांची एवं साति अध्ययनविभाग के प्रात ther william with favor or tra दिवसीय औनसाइय अंतरराष्ट्रीय व्यास्त्राच का असीमा दिन्ह गया जिसमें गुनल गीर व फेसबुक साहब के aregu û êze-feba le solen प्रतिचारियों ने भाग लिया।

अन्यक्षात्र में सुन्तरीत्र हो संजीय कृत्यर भागों ने किया। इस कार्यक्रम के विदेश कारा हो, लेकर करोत्र जोनं मेसन पुनिवसिती man) in same a alloc गावें सिट्ट प्रेटोनार वी असलम खार ने सराया। पीके पा, प्रे लेस्टर ने कहा कि महान्य गांधी ने महात्या के शान्त कार्यी को नेशांकित काले हुए जीन रोलटुंड का move sign form fig. They seem भद्रसदापन और न्यूटन भौतिकों के लिए में उसी प्रधार संबंध संवर्ध के विकास है। वर्तीन गांची को शांतिपूर्ण समाज-निर्माण का चेद्वा बताया। केहिक

ऑनलाइन व्याख्यान • 'पंस्ट-पंतिक गर्वा' विचय वर

र्जनामान व्यक्तान का अयोजन जॉर्न पैयन वृत्तिविद्यो बृहसर् के सहयोग ने क्षतिति वें आयोजन

हमस्या द्वारा गांधी जी की तीन राजनेतियाँ, सुनना, समझना और कार्य करना, पा भी लेक्टर ने विनार रक्षा। हजोरी संबी को शॉरिकरों बोद्धा लक्ष हम् कहा कि ये असर्ति, आसानव र राजिद से एक योद्धा की तरह लड़ते ते। तनीरे अविधा को आधानिकत कर्ताना और दशकरण बताया, जो विवर्गतावीतिकालों की द्वीवाद जो का करने का राज्येतारी तरीका है।

ये लेखा ने तीन महामहियाँ का जिस्र फिल-फाल स्टेबिड-१७, दूसर neke a rhan ustardra Stani उन्होंने कोविड-19 पर प्रकार दातने हुए कहाकि विस्थ के लिए का बहायारी रक अवस्था के साथ में है। अंत में कुलपति प्रो प्रामी ने संग्री के देखिएयल ल् पर बार करते हुए संबंध समय र्क्त रूपात रहे। कार्यक्रम का अंचातन affinite ditare of area face भेड व अतिविधी तथा प्रतिभागियों का भन्यसद्धी, डी.जुनन वधीय ने किया।

किताब मेरे जीवन में....

प्रो. विकास पारीक अधिष्ठाता, संगणक विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी विभाग



सन् 1991, दुनिया बदल रही थी। सोवियत साम्राज्य चरमराकर दह रहा था और हमारे देश में भी सब कुछ हमेशा के लिए बदल जाने वाला था। इन बड़े परिवर्तनों से कहीं छोटा एक परिवर्तन मेरे जीवन में भी आया। राशन की सहकारी दुकानों के बाहर केरोसिन या शक्कर के लिए घंटों धूप में, कतार में खड़े रहना मेरी दिनचर्या का हिस्सा हुआ करता था लेकिन तब आज की बोरियत वाली बीमारी हमें नहीं लगी थी। इंतजार तो रोजमर्रा की चीज थी तब ऐसे ही किसी एक आम दिन मेरे पिताजी ने मुझे लाइब्रेरी से एक किताब लाकर दी। किताब का शीर्षक था 'गंगा की कहानी'। इस किताब में गंगा नदी के उद्गम से लेकर गंगा के सागर पहुँचने तक के बारे में ऐतिहासिक और भौगोलिक तथ्य कहानी के रूप में दिए हुए थे। पहली बार मेरा परिचय एक ऐसी दुनिया से हुआ जो मेरे आसपास नहीं थी पर जिसको मैं महसूस कर सकता था। और यह एक इटरनल रोमांस की शुरूआत थी।

उस छोटे से किराए के मकान में अपनी कोठरी में चूहों और तिलचट्टों की संगत से बेखबर, पीले बल्ब की मिद्धम रोशनी में पढ़ने का स्वाद मैंने जाना जिसने मेरे भीतर और बाहर की सभी तकलीफों से मुझे हमेशा के लिए आजाद कर दिया। बरसों बाद जब मैंने ऐन रैंड की 'दि फाउंटेनहैंड' पढ़ी, तब बचपन का वही अहसास लौट आया। होवार्ड रोर्क में मैंने मानो अपने ही मन की प्रतिध्वनि पायी - Do you mean to tell me that you're thinking seriously of building that way, when and if you are an architect?" "Yes." "My dear fellow, who will let you?" "That's not the point. The point is, who will stop me?"

अपने आप को आखिर में रख कर हमेशा दूसरों के लिए सोचने वाले मुझ को थोड़ा-सा 'सेल्फ लव' इस किताब ने सिखाया। ऐसे कई मोड़ मेरे जीवन में आते रहे और यह बात सुनने में बड़ी किताबी या फिल्मी लग सकती है कि ये मोड़ अक्सर कुछ पढ़ने पर आये। पढ़ने-पढ़ाने का शौक अभी भी पूरी तरह से मरा नहीं है। वैसे भी मैं बहुत नॉस्टाल्जिक हूँ। ई-बुक्स और सोशल नेटवर्किंग ने भी किताबों के लिए मेरे प्रेम को कम नहीं किया है। मेरी शेल्फ में किताबें बढ़ती जा रही हैं, हालांकि मेरे मेहरबान दोस्त इतनी कृपा करते हैं कि मुझ पर दया कर के इसका कुछ हिस्सा बाँट लेते हैं। किताबें लेकर भूल जाना और कभी न लौटाना उनकी आदत है। वैसे वो चवन्नी उधार बाकी न छोड़ते होंगे।

अब मैं अपने पास की या मेरे द्वारा पढ़ी गयी किताबों की लिस्ट बनाने बैठूँ तो बात बहुत दूर तक चली जाएगी। जब बात निकलेगी तो यह हमारे छोटे से कस्बे की स्कूल लाइब्रेरी से लेकर बीकानेर की महाराजा गंगा सिंह पब्लिक लाइब्रेरी से होकर वनस्थली की सेंट्रल लाइब्रेरी और न जाने कितने बुक स्टोर्स तक पहुँचेगी। लेकिन एक बात है कि किताबों ने मेरे जीवन में एक अंतरंग दोस्त का पार्ट अदा किया है। खुशी, गम, तनाव, क्रोध, निराशा, प्रेम या ऐसा कोई मानवीय भाव न होगा. जिसमें किताबों ने मेरा साथ न निभाया हो। बकौल गालिब 'बाजीचा-ए-अत्फाल है दुनिया मेरे आगे', तो दुनिया मेरे लिए बच्चों का एक खेल ही रही है। मैं तो चंदामामा की परीकथाओं, विक्रम बेताल, पंचतंत्र, हितोपदेश, दास्तान-ए-हातिमताई, प्रेमचंद, बच्चन, कबीर, दुष्यंत कुमार, टॉलस्टॉय, गोर्की और अनिगनत कवियों, लेखकों के बनाये स्वप्न लोक में विचरण करता रहा हूँ। मुझे लुइस कैरोल की 'ऐलिस इन वंडरलैंड' के एक पात्र की यह बात बहुत सार्थक लगी कि शब्दों का वही अर्थ होता है जो मैं उनको देना चाहता हूँ। तो मेरे लिए राजेन्द्र यादव जी के शब्दों में कहूँ तो 'एक दुनिया समांतर' बनती चली गयी जिसमें शब्दों का वही अर्थ होता था जो मैं उन्हें देना चाहता था। यहाँ तक कि कई बार पढते-पढते अक्षर मानो घिसकर झड जाते और अर्थ-शुन्यता की स्थिति आ जाती। मैक्सिम गोर्की की 'मदर' पढकर में रोया। इस किताब ने मुझे बहुत उद्वेलित किया और पहली बार मुझे लगा कि वंचना और दुःख वैश्विक अनुभूतियाँ हैं। गोर्की की किताब 'मेरा बचपन' में मुझे अपने खुद के बचपन की झलक मिली। साम्यवादी स्वप्न चाहे छिन्न-भिन्न हो गया हो, लेकिन दुनिया हमेशा ऋणी रहेगी - मार्क्स की, गोर्की की, लेनिन की-और उन सब की जिन्होंने समता के स्वप्न को पूरी दुनिया में फैला दिया। साहिर का लिखा 'आओ कि कोई हसीं ख्वाब बुनें कल के वास्ते' हो या दुष्यंत कुमार की 'कहाँ तो तय था चरागाँ' या फिराक, गालिब, खलील





निरंतर विकास जीवन का नियम है, और जो व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए हमेशा अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को गलत स्थिति में पंहुचा देता है।

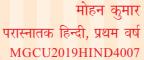
- महात्मा गाँधी

जिब्रान, रूमी, इन सबने मेरे सपनों को ताकत दी और अरमानों को पंख लगाए हैं।

आजकल अपने परिवेश में जो हम मूल्यहीनता की स्थिति देख रहे हैं, उसका एक बहुत बड़ा कारण मैं किताबों से बढ़ती गयी दूरी को मानता हूँ। बचपन में पढ़े गए तिलिस्मी उपन्यास हों या 'किस्सा चार दरवेश' जैसे किस्से, 'गुलिवर की यात्राएँ हों या 'अस्सी दिन में दुनिया की सैर', न्यूटन की जीवनी हो या रामानुजन का जीवन चरित - इन सबने मेरे बाल मन को देश-दुनिया का ज्ञान तो दिया ही, मेरे मन की कल्पनाओं को वो उड़ान दी कि मैं जीवन के बंधे-बंधाए दायरों से बाहर निकल कर सोच सका। 'आउट ऑफ दी बॉक्स थिंकिंग' के इस युग में कई लोग यह भूल गए हैं कि नयी सोच के लिए भी पुराने अनुभवों से होकर गुजरना पड़ता है तभी हम उन गलतियों, उपलब्धियों आदि से वाकिफ हो सकते हैं जिनकी बुनियाद हमारे भविष्य के लिए जरूरी होती है।

किस्सागोई हम भारतीयों के रक्त में रही है और हमारे किस्से जातक कथाओं से लेकर अकबर-बीरबल के लतीफों तक भरे पड़े हैं। अनुभव की जो दुनिया कबीर की बानियों, गोरखनाथ, रसखान, बिहारी, मीरा आदि के काव्य में है, जो आग बनकर दुष्यंत कुमार और नागार्जुन के मुँह से बरसती है तो कभी जयदेव के मुख से कोमलकांत पदावली बनकर झरती है, उस दुनिया का दीदार जिसने नहीं किया, वो असगर वजाहत जी के शब्दों में 'वो जनम्या ही नहीं।' रस को भारतीय परंपरा में श्रेय माना गया है और रस की उत्पत्ति तभी होती है जब पाठक अनुभवों और विषय वस्तु के साथ तादात्म्य की उस स्थिति में पहुँच जाए जिसे भौतिक विज्ञान की भाषा में रेजोनेंस (अनुनाद) कहा गया है। जब व्यक्ति जीवन के अनुभव लेता है तब उसे लगता है कि गालिब सही थे, कबीर सही थे और 'लोग कहे मीरा भई बावली' वाले लोग गलत थे। और रस के बिना तो जीवन 'नीरस' ही हो सकता है। इसे सरस बनाने के लिए आवश्यकता है - स्वाध्याय की, पठन-पाठन, लेखन व चिंतन की। किताबों से की गयी मुहब्बत कभी बेकार नहीं जाती, ऐसा मेरे कहने पर मत मान लीजिए एक बार करके देखिए।

शिक्षा





जागेगा इंसान जमाना देखेगा बदलेगा संसार जमाना देखेगा।

हो गाँव या शहर सबको यह दिखेगा, शिक्षा ही है बदलाव का नियम जमाना देखेगा।

> जागेगा इंसान जमाना देखेगा, बदलेगा संसार जमाना देखेगा।

हो किसान या मजदूर सबको यह बताना है, शिक्षा ही है बदलाव का नियम सबको यह दिखाना है।

> करल है क्यों आगे ? पीछे है क्यों बिहार ? बिहार को हमें आगे लाना है।

> > शिक्षा ही है बदलाव का नियम सबको यह बताना है।

जागेगा इंसान जमाना देखेगा। बदलेगा संसार जमाना देखेगा।

रह जाते हैं अनपढ़ जो लोग नेता आसानी से इन्हें मूर्ख बना जाते हैं।

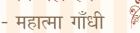
ये बात हमें जाकर जन-जन को बताना है, शिक्षा ही है बदलाव का नियम सबको यह दिखाना है।

> होगा नवयुग का निर्माण जमाना देखेगा जागेगा इंसान जमाना देखेगा।





एक धर्म जो व्यावहारिक मामलों के कोई दिलचस्पी नहीं लेता है और उन्हें हल करने में कोई मदद नहीं करता है वह कोई धर्म नहीं है।



भरोसे का नाम ही पत्रकारिता

गाँधीयुगीन पत्रकारिता आज भी समीचीन

डॉ. अंजनी कुमार झा सह आचार्य, माध्यम अध्ययन विभाग



गाँधीयुगीन पत्रकारिता में भाषा सौंदर्य, सौष्ठव पर विशेष ध्यान दिया जाता था। कहीं भी व्यक्ति, वर्ग, जाति, क्षेत्र, नस्ल का निरादर नहीं किया जाता था। यहां तक कि ब्रिटानिया शासन के विरुद्ध भी अमर्यादित शब्दों का उपयोग नहीं किया जाता था। समाचार और विचार में अंतर था। पेज निर्धारित थे। आज एकतरफा, पक्षपातपूर्ण और वाद से ग्रस्त समाचारों की बाढ़ है। खबर है या ख्यालात, अंतर मुश्किल है। पूरी खबर पढ़ने, देखने के बाद भी कई बार कुछ समझ में नहीं आता है। समाचारों के बीच विज्ञापित खबरें अर्थात् ब्रांडिंग खबरें भी रहती जो हैं। हां, पहले एडवरटोयिरल शब्द प्रायोजित समाचारों के नीचे लिखे जाते थे, किन्तु अब इसे लिखना बंद कर दिया गया। ऐसा लगता है कि सभी खबरें प्रायोजित और बाजार नियंत्रित हैं।

वर्ष 1919 में ब्रिटिशकालीन प्रेस एक्ट के विरोध में गाँधीजी ने 'सत्याग्रह' प्रकाशित करना शुरू किया। उन्होंने घोषणा की 'मैं इस एक्ट के विरोध में समाचार-पत्र निकाल रहा हूँ। जालियांवाला बाग के दमनचक्र पर विशेष खबरें देने पर उनकी 'सर्वोदय' पत्रिका की प्रतियां जब्त कर ली गईं। उन्होंने घोषणा कर दूसरा संस्करण वर्धा से प्रकाशित करना आरंभ किया। उनकी पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार और लोकप्रियता से भयभीत ब्रिटिश हुकूमत ने कुतर्क दिया कि पत्रिका के पहले संस्करण पर प्रतिबंध था, दूसरे पर नहीं। वर्षों तक गाँधीजी ने सिक्रय पत्रकारिता की और अंग्रेजी व हिंदी में कई पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया। 'ओपिनियन', 'यंग इंडिया', 'नेशनल हेराल्ड', 'नवजीवन', 'हरिजन', 'सत्याग्रह', 'सर्वोदय' जैसे उम्दा प्रकाशन वर्तमान पत्रकारिता की कई गुत्थियों को सुलझा सकता है। बाजार निर्धारित बाजार नियंत्रित पत्रकारिता का समाज पर कम होते असर से डरावनी तस्वीर का हम सामना गाँधीजी की पत्रकारिता के जरिये कर सकते हैं। अब कहीं ज्यादा सरोकार वाली पत्रकारिता की जरूरत है। आज जनमाध्यमों यथा - प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, सोशल मीडिया में हिंदी नहीं हिंग्लिश, रोमन में हिंदी लिखी जाती है। कई माध्यमों में जान-बूझकर हिंदी के शब्दों के उच्चारण में कठिनाइयाँ दर्शायी जाती हैं। वर्तनी दोष आम है।

बिना विज्ञापन के गाँधीजी बेबाकी से 'इंडियन ओपीनियन' अंग्रेजी, हिंदी, तमिल और गुजराती में निकालते थे।

रही-सही कसर तकनीक ने पूरी कर दी। सजनात्मकता समाप्त हो गई। मीडिया सूखे दरख्त है। हिंदी मीडिया में अलकाजी और पंडित जसराज के देहावसान की खबरें, फीचर नहीं लगीं। यही बाजार है। जो बिकता है, वही खबर है। सामाजिक सोच को कम कर व्यक्तिगत सोच को बढ़ावा दिया जा रहा है। चीखना, चिल्लाना, आक्रामकता, सनसनी, सुर्खियां बनाकर बेचना पत्रकारिता नहीं है। यह पत्रकारिता का राष्ट्रधर्म नहीं है। बिना विज्ञापन के गांधीजी बेबाकी से 'इंडियन ओपीनियन' अंग्रेजी, हिंदी, तमिल और गुजराती में निकालते थे। वे स्वयं विभिन्न विषयों यथा : अस्पृश्यता, जात-पाँत, हिन्दू धर्म, भाषा, ग्राम स्वराज, पराधीनता आदि पर निर्भीकता से 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' में लिखते थे। समाचार-पत्र को लेकर उनका उद्देश्य स्पष्ट था। उनके मत में, सच्चा समाचार-पत्र वही है जो जनमानस की सामृहिक आकांक्षा को मुखरता के साथ स्थान दे, खुलकर अभिव्यक्ति का माध्यम बने। उन्होंने छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग कर बडी सरलता से अपने विचार लिखे। पर आज बिना विज्ञापन के अखबार, चैनल, वेबसाइट चल नहीं सकते। उनका उद्देश्य समाचार, विचार देना नहीं बल्कि ज्यादा से ज्यादा विज्ञापन प्रकाशित. प्रसारित कर लाभ कमाना है। बिना विज्ञापन के गाँधीजी की पत्र-पत्रिकाएँ छपती थीं और रिकार्ड-तोड़ प्रसार था।

बेजुबान कलम (की-बोर्ड) को ईमानदार पत्रकार नहीं चलाये तो यह प्रलयंकारी बाढ़ से कहीं ज्यादा हानिकारक होगा।

दो जुलाई, 1925 की उन्होंने 'यंग इंडिया' में लिखा, 'मैंने पत्रकारिता को जीवन में मिशन के रूप में लिया। सत्याग्रह मेरा अचूक हथियार है।' उनकी दृष्टि में पत्रकारिता जनसेवा है। आत्मकथा में उन्होंने लिखा, पत्रकारिता का एकमात्र उद्देश्य 'सेवा' होना चाहिये। समाचार-पत्र (अर्थात् मीडिया) में असीम शक्ति है, किन्तु अगर जलप्रलय की भांति कलम अनियंत्रित हो गई तो जैसे बाढ़ से फसल, जान-माल को अपूरणीय क्षति होती है वैसे ही बेजुबान कलम (की-बोर्ड) को ईमानदार पत्रकार नहीं चलाये तो यह प्रलयंकारी बाढ़ से कहीं ज्यादा हानिकारक होगा। हाँ, वर्तमान पत्रकारिता पूरी तरह भटकाव की अंधी गली में पहुंच चुकी है। मुद्रित शब्द, चलचित्र, लाइव सब कुछ संदेह के घेरे में है। कहीं मीडिया हाउस का निहित स्वार्थ तो नहीं, विज्ञापन मिला





विश्वास करना एक गुण है, अविश्वास दुर्बलता की जननी है।



नहीं आदि बातें कर समाचार को अपुष्ट, अविश्वसनीय करार दिया जाता है। गाँधीजी राष्ट्रीय नेता, समाज सुधारक के साथ महान् संप्रेषक थे। उन्होंने कई मंचों से कहा कि केवल संचार ही प्रभावशाली तत्व है जिसके जरिये अभिमत को तैयार करने के साथ लोगों को गोलबंद किया जा सकता है। वर्तमान में कस्बाई से लेकर महानगरीय पत्रकारिता पर नजर दौडाते हैं तो आंग्ल ही नहीं बल्कि हिंदी समेत सभी भाषायी पत्रकारों में यह रिक्तता स्पष्ट दिखती है। हम बार-बार भारतीय पत्रकारिता के गौरवशाली इतिहास पर गौर फरमाते हैं तो माखनलाल चतुर्वेदी, माधवराव सप्रे, महावीर प्रसाद द्विवेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी, दीनदयाल उपाध्याय, चलपति राव, भानुप्रताप शुक्ला, प्रभाष जोशी, राजेंद्र माथुर, अरुण शौरी, कुलदीप नैयर, रामबहादुर राय, पुण्य प्रसून वाजपेयी, पी. साईंनाथ और फिर.... याद करना मुश्किल है। अर्थात् राष्ट्रीय के साथ समाजहित में कार्य करने वाले पत्रकारों (प्रिंट इलेक्ट्रानिक, सोशल मीडिया) का जबर्दस्त टोटा है, जबिक दो दशक पूर्व तक केवल प्रिंट मीडिया ही अस्तित्व में था, ईमानदार व निष्पक्ष कलमकारों की संख्या काफी थी। आज पत्रकारों के उमडते सैलाब में 'पत्रकार' को ढूँढ़ना क्षीरसागर से अमृत निकलने जैसा दुष्कर कार्य है। उन्होंने रोवलेट एक्ट और जिलयांवाला नरसंहार के विरुद्ध 'सत्याग्रह' आरंभ किया। अपने दो समाचार पत्रों 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' के जरिये उन्होंने सत्याग्रह पर चलने के लिये आमजन को दिशा दिखलाई. शिक्षित किया। वर्ष 1933 में अंग्रेजी, हिंदी और गुजराती में शुरू किये गए 'हरिजन बंधु', 'हरिजन सेवक' के माध्यम से गाँधीजी ने अस्पृश्यता, निर्धनता के खिलाफ बिगुल फूंका। उनका दो टूक मानना था कि मुनाफे के लिये अगर समाचार-पत्र निकाला जायेगा तो इसके परिणाम अच्छे नहीं होंगे। 86 वर्षों के बाद भी उनके कथन में सत्यता है। आज बाजार की जरूरतों को बढाने और उसे बनाये रखने के लिये मीडिया खबरें (जिसे सूचना कहा जाता है) नॉन-स्टॉप बिना जरूरत के परोस रहा है। इसी कारण आमजन भी बदहजमी का शिकार हो रहा है। लोगबाग को बिना आवश्यकता के वस्तुओं की खरीद को आवश्यक बताने का काम मीडिया करने लगी है।

उन्होंने हमेशा केवल इसी बात पर जोर दिया कि पत्रकारिता का लक्ष्य केवल और केवल सेवा और सेवा ही होनी चाहिये। 'यंग इडिया' में उन्होंने लिखा, मुझे क्रोधाग्नि में या दुर्भाग्यवश कभी नहीं लिखना चाहिये। मुझे लोगों की भावनाओं को भड़काने वाले समाचार, विचार नहीं प्रकाशित करना चाहिये।

महात्मा गांधी के कार्यक्रमों, विचारों को कई दशकों तक

कलमबद्ध करने वाले सुप्रसिद्ध पत्रकार व स्वतंत्रता सेनानी सलिन चटर्जी ने 'विदुरा' के जनवरी-मार्च, 1998 के विशेषांक में लिखा था, मैंने 1942 से पत्रकारिता शुरू की। मेरे जीवन का सर्वाधिक अनमोल क्षण गांधीजी के साथ यात्रा का कवरेज होता था। बापु स्वयं पत्रकार थे। यात्रा के दौरान ही वे 'इंडियन ओपिनियन' के लिये सामग्री जुटा लेते थे। उन्होंने हमेशा केवल इसी बात पर जोर दिया कि पत्रकारिता का लक्ष्य केवल और केवल सेवा और सेवा ही होनी चाहिये। 'यंग इंडिया' में उन्होंने लिखा, मुझे क्रोधाग्नि में या दुर्भाग्यवश कभी नहीं लिखना चाहिये। मुझे लोगों की भावनाओं को भड़काने वाले समाचार, विचार नहीं प्रकाशित करना चाहिये। उन्होंने विज्ञापन के समर्थन या बल पर अखबार निकालने वाले मालिकों की कड़ी आलोचना की। साफ शब्दों में कहा कि राजस्व बढाने के लिये मालिकों को विज्ञापन की बजाय प्रसार पर ध्यान देना चाहिये। इस प्रकार के विज्ञापन के भरोसे अखबार निकालने वाले मालिकों को नशीली दवा के व्यापारी की संज्ञा दी। यह प्रवृत्ति पश्चिमी देशों से यहाँ आई। इस अनिच्छापूर्वक अभ्यास को समाज के लिये अहितकारी बताया। सौ वर्षों बाद भी बापू के वाक्य प्रासंगिक हैं। केवल विज्ञापन के इरादे से बहरंगी, बहुपृष्ठीय समाचार पत्रों की विश्वसनीयता नहीं है। यही स्थिति चैनलों और वेबसाइटों की है। माधवराव सप्रे की टिप्पणी आज भी सटीक है कि दशकों बाद समाचार पत्रों के कलेवर तो बदल जायेंगे, किन्तु शब्द की सत्यता का लोप हो जायेगा। वर्तमान में चहुँओर यही दिख रहा है। पत्रकारिता में शुभ दृष्टि सबसे आवश्यक है।

जनसत्ता के संपादक रहे प्रभाष जोशी अक्सर कहा करते थे, 'पत्रकार की पोलिटकल लाइन तो हो किंतु उसकी पार्टी लाइन नहीं होनी चाहिये।' अपने बौद्धिक विश्लेषणों, सार्थक विमर्शों के आधार पर नहीं, सिर्फ चमकदार कागज, पर शानदार प्रस्तुति और गौरे एंकर की मुस्कराहट के बल पर कोई पत्रकारिता लोक-स्वीकृति नहीं पा सकती है। पठनीयता का संकट, सोशल मीडिया का बढ़ता असर, कंटेंट में तेजी से बदलाव, निजी नैतिकता पर सवाल, व्यावसायिकता का दखल, मोबाइल मीडिया से उपजी चुनौतियों पर गौर करने की आवश्यकता है। कोई भी मीडिया सत्यान्वेषण की अपनी भूख ही सार्थक बनता है, लोक में आदर का पात्र बनता है। भरोसा का नाम ही पत्रकारिता है।

महात्मा गाँधी भारत की अनादि और अविच्छिन्न ऋषि परम्परा के महान उन्नायक थे। उनकी धारणा थी कि पश्चिमी विचार समाजवाद, साम्यवाद, पूंजीवाद आदि सिद्धांत हमारे तत्संबंधी विचारों से बुनियादी तौर पर भिन्न हैं। (अमृत बाजार पत्रिका, 02-08-1934)।



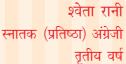


एक देश की महानता और नैतिक प्रगति को इस बात से आँका जा सकता है कि वहाँ जानवरों से कैसे व्यवहार किया जाता है।



वे ऐसी शख्सियत माने जाते हैं, जिनके पास बदलाव लाने की एक व्यापक और पारदर्शी योजना थी। हाँ, बापू के सपनों का गाँव, हिन्दू धर्म की व्याख्या, अहिंसा, सत्याग्रह, राष्ट्रीयता, स्वदेशी, सर्वोदय, आर्थिक स्वावलंबन, शिक्षा, रोजगार सामाजिक कलंक, राजनीतिक जैसे हजारों मुद्दों पर उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं। 'हिन्द स्वराज' आज की गीता है। एक बार विनोबा भावे से किसी ने पूछा कि उन्हें 'गाँधी' कहा जाए या गाँधीजी? मैंने कहा, 'आप यदि उन्हें व्यक्ति मानते हों, एक पूज्य पुरुष के रूप में देखते हो तो गाँधीजी कहिए, लेकिन यदि उन्हें विचार मानते हों, तो 'गांधी' कहना चाहिए। गाँधी जी मेरे लिए आज एक व्यक्ति नहीं, विचार है। गाँधी के राजनीतिक उत्तराधिकारी जिस यूरोपीय मॉडल के आधार पर भारत का विकास करना चाह रहे थे, उससे सावधान करते हुए पाँच अक्टूबर, 1945 को जवाहर लाल नेहरु को लिखे पत्र में कहा था, "मुझे कोई डर नहीं है कि दुनिया उलटी ओर ही जा रही दिखती है। यों तो पतंगा जब अपने नाश की ओर जाता है, तब सबसे ज्यादा चक्कर खाता है और चक्कर खाते-खाते जल जाता है। हो सकता है कि हिन्दुस्तान इस पतंगे के चक्कर में से न बच सके। मेरा फर्ज है कि आखिरी दम तक उसमें से उसे और उसके मार्फत दुनिया जगतु को बचाने की कोशिश करूँ। वे अक्सर अपने बारे में कहा करते थे, ''मैं एक औसत आदमी हूँ, जिसमें औसत से भी कम योग्यता है, लेकिन मुझे इसकी चिंता नहीं है। बुद्धि के विकास की एक सीमा होती है, जबिक हृदय के विकास की कोई सीमा नहीं होती।" यह निर्भीकता, स्पष्टता, सत्यवादिता, सादगीपूर्ण जीवन उनके लंबे काल के पत्रकारिता जीवन के कारण संभव हो सका। पद लिप्सा शून्य, भौतिक सुख शून्य अर्थातु भटकाव और आकर्षण जैसे तत्वों को अपने पास नहीं फटकने दिया। तभी तो अपने जीवनकाल में ही वे 'महात्मा' कहलाने लगे। अतीत और वर्तमान के पन्नों का सिंहावलोकन करें तो आज से कहीं ज्यादा कठिन परिस्थितियों में गाँधीजी ने पत्रकारिता की थी। वह भी एक-दो वर्ष नहीं, युवाकाल से मृत्युपर्यन्त तक खूब लिखा, खूब यात्राएँ कीं, भाषण दिये। गांधी वाङ्मय उनके विचार-प्रवाह का संग्रहणीय दस्तावेज है। उन पर हजारों पुस्तकें, लेख, आलोचनाएँ लिखी गयीं। यह क्रम आज भी दुनिया के दर्जनों भाषाओं में जारी है। बेहिसाब सुख-सुविधाएँ, प्रचुर संसाधन, उन्नत तकनीकी, सुलभ पाठक-दर्शक-श्रोता वर्ग के साथ 'सब-कुछ' की उपलब्धता फिर क्यों मीडिया कभी विश्वसनीयता के संकट से गुजर रही है तो कभी समाचारों को दबाने-छिपाने के आरोपों से जुझ रही है। मीडिया का बाजारीकरण राष्ट्र, समाज हित में नहीं है।







अंबर की ये ऊँचाई, धरती की ये गहराई तेरे मन में है समाई माई ओ माई!

तेरा मन अमृत का प्याला, यही काबा, यही शिवाला, तेरी ममता जीवनदायी. माई ओ माई!

जी चाहे सदा तेरे साथ रहूँ, में बनके तेरी हमजोली छुप जाऊँ, यूँ खेलूँ आँख-मिचौली तेरे हाथ न आऊँ परियों की कहानी सुनाकर कोई मीठी लोरी गाकर कर दे सपने सुखदाई माई ओ माई!

संसार के ताने-बाने से घबराता है मन मेरा... इन झूठे रिश्ते-नातों में बस प्यार सच्चा है तेरा सब दुःख सुख में बदल जाएँ तेरी बाँहें जो मिल जाएं.... मिल जाए मुझे खुदाई, माई ओ माई!





मैं मरने के लिए तैयार हूँ, पर ऐसी कोई वजह नहीं है जिसके लिए मैं मारने को तैयार हूँ।



चम्पारण सत्याग्रह

सम्राट कुमार बी.टेक. द्वितीय सेमेस्टर संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी



चम्पारण सत्याग्रह का इतिहास में ऊँचा नाम है। उसके महानायक बापू को मेरा शतु-शतु प्रणाम है।। यही वह सत्याग्रह है बंधु जिससे जागा समूचा देश। आजादी के आंदोलन का यहीं से हुआ था श्रीगणेश।। सन् उन्नीस सौ सत्रह, भारत का पावन वर्ष था। चम्पारण सत्याग्रह का. यही वह पावन वर्ष था।। देख किसानों की बदहाली, बापू के आँसू छलक पड़े। हाथ में मात्र लाठी लेकर, पैदल चम्पारण धमक पड़े।। सब दौर पड़े उनके पीछे, बच्चे बूढ़े और जवान। धनी और निर्धन दौडे, दौड पडे मजदुर किसान।। बिना पिस्तौल बारूद बिना, आजादी का युद्ध किया। सत्य अहिंसा के बल पर, अंग्रेजों का छक्का छुड़ा दिया।। देशभक्ति और जन सेवा का पाठ सबको पढा दिया। शांति और न्याय का रास्ता आगे सबको दिखा दिया।। न्याय, तपस्या के बल पर बापू ने किया देश आजाद। अपने भारत की भिक्त हेतु करें स्वीकार हम गाँधीवाद।। दुनिया का सिरमौर भारत, उसकी सदा रहे जय-जय। उसके सपूत गाँधी जी का इतिहास सदैव रहे जय-जय।।



ली जाँच प्रेम ने बहुत, मगर बापू तू सदा खरा उतरा, शूली पर से भी बार-बार, तू नूतन ज्योति भरा उतरा। - रामधारी सिंह दिनकर



मैं लोकतंत्र हूं

विवेकानन्द राय अतिथि कार्यालय सहायक



मै लोकतंत्र हूँ भारत का, भारत का है दम घुट रहा।
जाति, धर्म और क्षेत्रवाद में, जकड़ा भारत सिसक रहा।
तोड़ो बेड़ी जाति धर्म का, क्षेत्रवाद है, भड़क रहा।।
मै लोकतंत्र हूँ भारत की, भारत का है दम घुट रहा।
जिस माँ के गोद में खेल रहे, उसे टुकड़े करने की सोच रहे।
है राजनीति का धर्म नहीं, टुकड़े भारत का सपना देख रहे।।
देहरी जोड़ो न तोड़ो देहरी, देहरियाँ अब सिमट रहीं।
मै लोकतंत्र हूँ भारत का, भारत का है दम घुट रहा।।
भारत माँ का नमन करें, जिसके आँचल में खेल रहे।
है धन्य भूमि यह भारत का, जिसने भगत सिंह आजाद दिये।
मै लोकतंत्र हूँ भारत का, भारत का है दम घुट रहा।

भंवर

मनीष ठाकुर पीएच.डी. शोधार्थी हिन्दी विभाग



आइये, फरमाइये, पाइये
भाग्य, विधाता, कर्म
रोटी है, भूख नहीं
भूख है, रोटी नहीं
समृद्ध को साधन है
अपने को राम है
शब्दों का भंवर है
कश्ती को तिनके का सहारा है।



व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित एक प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता है।



गाँधी

आलोक कुमार एम.बी.एम., प्रथम वर्ष MGCU2016MGMT4004



रंगभेद की नीति मन पे गिराई ऐसी भित्ति निकल पड़े वो इंसाफ ढूँढ़ने इनसान के अंदर इनसान ढूँढ़ने लोग कहते गाँधी उन्हें। लोग कहते गाँधी उन्हें। एक संत बने वो प्रतीक प्रेम का अनंत बने वो जटिल कार्यों का अंत बने वो लोग कहते गाँधी उन्हें। लोग कहते गाँधी उन्हें। आजादी जिसकी अभिलाषा थी सत्य जिसकी भाषा थी अहिंसा का पाठ पढाया जिसने नवयुग को बुलाया जिसने लोग कहते गाँधी उन्हें। लोग कहते गाँधी उन्हें। महान जिनकी आत्मा थी

एक कोने में परमात्मा था।
वह जन जन की सुखदाता था
एक ऐसा सपूत भारतमाता जन्मी
लोग कहते गाँधी उन्हें।
लोग कहते गाँधी उन्हें।
सीने पे गोली चलाई किसने
हाय! मानवता को दी रुलाई किसने

अहिंसा का अंत हिंसा ये वाह रे दुनिया तेरी रंगत कैसी ---इंसानियत के नाम पे कलंक जैसी। इंसानियत के नाम पे कलंक जैसी।

मंजिल की राह

अंचला कुमारी परास्नातक हिन्दी, प्रथम वर्ष MGCU2019HIND4001



मंजिल नहीं दिखती, बस चलना है मुझको, रास्ते हैं मुश्किल, हम राही हैं नए।
मंजिल नहीं दिखती, बस चलना है मुझको, दिल में है एक ख्वाब पाना है सब कुछ, बस लंबी दूरी चलना है मुझको।
मंजिल नहीं दिखती साथी नहीं मिलते, जीवन है मुश्किल पाना है सब कुछ।
चल रहे पाने हम मंजिल की राह,
दिखा था आसान पर है थोड़ी मुश्किल, पर डरना नहीं मुझको पाना है सब कुछ।
मंजिल लगी दिखने बढ़ती गई आगे,
पहुँच गई मैं मंजिल देख ली जहाँ।
रास्ते रहे मुश्किल, हम राही थे नए।
जी लूँगी जिंदगी, पा लूँगी सब कुछ।



दुख से दूर पहुँचकर गाँधी। सुख से मौन खड़े हो मरते-खपते इंसानों के इस भारत में तुम्हीं बड़े हो।

- केदारनाथ अग्रवाल







एक कायर प्यार का प्रदर्शन करने में असमर्थ होता है, प्रेम बहादुरों का विशेषाधिकार है।



नॉस्टैलिजिआ

डॉ. श्रीधर सत्यकाम सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग



मन कभी-कभी आज से दूर चला जाता है
और बसाता है फिर वहीं दुनिया
पर उदास और अकेली!

कुछ जो कहने को रह गया था
कह लेता है,
कुछ जो सुनने से रह गया था
सुन लेता है!
हर टेढ़ी रेखा को सीधी कर लेता है,
हर सूखे रंग को गीला कर लेता है!
और इतना सब अकेले करते-करते
जब थक जाता है
तो उस दुनिया को फिर वहीं छोड़
चुपचाप मेरे पास लौट आता है,
उसके स्वेद बिंदु
मेरे अश्रु बन जाते हैं।

झुको मत! - डॉ. श्रीधर सत्यकाम

"टूटती नहीं तूफाँ में झुकी जो डालियाँ"
यही तो सीखा था बचपन में झुक जाओ बेंत की तरह,
हवा ऊपर से होकर निकल जाएगी,
तन कर खड़े रहे तो
जड़ से उखड़ जाओगे!
बार-बार झुकता रहा
झुकते-झुकते टूट गया
टूट कर बिखर गया
कोई चिह्न भी शेष न रहा।

याद रखो -बार-बार झुकने में भी टूटने का डर है! माना तन कर खड़े रहे तो जड़ से उखड़ जाओगे पर संघर्षों के चिह्न तो शेष रहेंगे।

माँ गंगा

राहुल कुमार पीएच.डी. अंग्रेजी MGCU2019ENGL6003



माँ तेरी यह बहती धारा मेरे मन में यह प्रश्न उठाती है, कि तेरी यह धारा कहाँ से बह कर आती है. और कहाँ तक बह कर जाती है। माँ तेरी यह बहती धारा मुझको ये बतलाती है, कि तेरी यह धारा हिम से बह कर आती है जहाँ है शिव का वास. और वहीं को बह कर जाती है जहाँ है मनुष्यों का आवास। माँ तेरी यह बहती धारा मुझको ये दिखलाती है, कि तुम अविरल हो गंगा माँ और तेरा ये पवित्र जल है, जो धोती है पाप सभी का, सभी के दुख को हरती है। माँ तेरी यह बहती धारा मुझको ये आभास दिलाती है, कि कैसे माँ तुम अपने जल से सबको सींचती आ रही हो, और कैसे ये मनुष्य अपने स्वार्थी में जकड़े तुम्हें भूलते जा रहे हैं। माँ तेरी यह बहती धारा मेरे मन में ये विश्वास जगाती है, कि जब तक है यह तेरी निर्मल धारा तुम दोगी सबको जीवन, और माँ तेरी ही गोद में होगा अंततः हम मनुष्यों का आसन।



एक दिन इतिहास पूछेगा

कि तुमने जन्म गाँधी को दिया था,

जिस समय अधिकार, शोषण, स्वार्थ

हो निर्लज्ज, हो निःशंक, हो निर्द्धन्द्ध

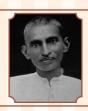
सद्यः जगे, संभले राष्ट्र में घुन-से लगे

जर्जर उसे करते रहे थे,

तुम कहाँ थे? और तुमने क्या किया था?

- हरिवंशराय बच्चन





मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है। सत्य मेरा भगवान है, अहिंसा उसे पाने का साधन।





राष्ट्र के विकास में बाधाएँ

रोशन कुमार शोधार्थी, प्रबंधन विज्ञान विभाग MGCU2019MGMT6004



राष्ट्रीयता राष्ट्र की पहचान है। राष्ट्र के अंदर निर्माण एवं विकास कार्य निरंतर चलते रहते हैं लेकिन संकीर्ण एवं नकारात्मक सोच राष्ट्र के विकास में सचमुच बाधाएँ हैं। एक राष्ट्र के अंदर विभिन्न मत और सिद्धांत के लोग रह सकते हैं, लेकिन किसी भी विचार का वर्चस्व राष्ट्रीय विचार पर नहीं होना चाहिए। आचार्य चाणक्य ने कहा था ''यदि व्यक्ति या समाज राष्ट्र भाव से शून्य है, राष्ट्र भाव से हीन है तो यह व्यक्ति और समाज दोनों राष्ट्र के विकास में बाधा है। कालांतर में राष्ट्र के विकास में अलग-अलग समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं - जैसे बेरोजगारी, गरीबी, आर्थिक अस्थिरता, जनसंख्या, आतंकवाद, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार इत्यादि । कालांतर में राष्ट्रीयता का बोध कम मात्रा में रह गया है और राष्ट्र के विकास में अवरोध का यह एक महत्त्वपूर्ण बिंदु है। और इसलिए समय-समय पर राष्ट्रीयता का बोध न होने के कारण ही विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा अपने राष्ट्र को अपमानित होते देखा है। अलग-अलग राष्ट्र की अपनी विविधता, संस्कृति, पद्धति एवं धर्म है और राष्ट्र अपने अनुसार अपनी संस्कृति एवं विविधता को संजोय कर विकास की गति को तेज करता है।

वही राष्ट्र विकास की ओर अग्रसर रहता है जो अपनी समुचित विविधता को एकता के रूप में दर्शाता है या अपनी एकता को विश्वपटल पर विविधता के रूप में रखता हो। आज अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए एक राष्ट्र दूसरे के लिए बाधक बनते जा रहे हैं और आतंकवाद और नक्सलवाद का सहारा लेकर राष्ट्रों के विकास में बाधक है। एक विचार जब सम्पूर्ण विश्व को अपने विचारों के माध्यम से ढालना चाहता हो तो विश्व पटल पर टकराव होना आवश्यक है और भारत का तो मानना है ''एकम् सत विप्रा बहुधा वदन्ति, अर्थात् सत्य एक हो सकता है लेकिन बुद्धिमान उन्हें विभिन्न नामों से बुलाते हैं। भारत ने कभी एक विचार का समर्थन नहीं किया है और न करेगा क्योंकि यहां हमेशा सत्य ढूंढ़ने के मार्ग अलग हैं। आने वाले समय में एक राष्ट्र तभी जीवित रह सकता है जब वो अपनी कूटनीति व्यवस्था को दूसरे राज्यों के साथ मजबूत रखे क्योंकि कलियुग में 'संघे शक्ति कलियुगे' का मन्त्र है अर्थात् संगठन में ही शक्ति है, आप जितने संगठित रहेंगे उतने सक्षम रहेंगे। राष्ट्रों के विकास में बाधा का कारण यह भी है कि व्यक्ति और समाज को हम शिक्षित नहीं

कर पाए हैं सिर्फ किताबी शिक्षा ही सम्पूर्ण शिक्षा नहीं है नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा प्रथम है। और शिक्षा का तब तक कोई आधार नहीं रहता जब तक शिक्षा में नैतिकता नहीं हो। वहीं एक बेहतर शिक्षण प्रणाली मुहैया करवाना ये सरकार का काम है लेकिन हर हाथ को काम देना यह सरकार के साथ-साथ समाज का भी काम है।

एक राष्ट्र तभी वेग से आगे बढता रहेगा जब तक वो अपने जीवन मुल्यों और परंपराओं का आदर करेगा। इसका एक उदाहरण जापान जहाँ आध्यात्मिक सुख सबसे ऊपर है। जापान एक ऐसा देश है जहाँ आज भी लोग घरों के आगे छोटे कारखानों पर काम करते नजर आते हैं और आज भी बड़े कारखानों से ज्यादा छोटे-छोटे कारखानों पर जोर दिया जाता। बड़े कारखानों में निर्यात का काम छोटे कारखाना करते हैं लेकिन ठीक यूरोप और अमरीका में बिल्कुल अलग है, वहां बड़े कारखाना ही छोटी-सी सुई से लेकर बड़ी-बड़ी मशीनें तक बनाती है। जिससे यह होता है कि शुरूआत में तो विकास दिखाई देता है लेकिन समुचित विकास न होने के कारण धीरे धीरे लोगों में असंतोषजनक व्यवहार, छोटे कारखानों का खत्म होना और विकास की गति कुछ चुनिंदा जगहों तक ही सीमित रह जाती है। अगर अच्छी नीति और एक राष्ट्र को उसी राष्ट्र के विकास के अनुसार नहीं ढाला जाए तो राष्ट्र का पतन निश्चित है। भारत ने सम्पूर्ण देश को समन्वयवाद का रास्ता दिखाया है। जहां व्यक्ति को समाज से जोडने की भावना है। व्यक्ति और समाज एक दूसरे से अलग नहीं हो सकते। व्यक्ति राष्ट्र के लिए है, राष्ट्र व्यक्ति के लिए नहीं और इस दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति अपने राष्ट्र का अभिन्न अंग होता है। और उस व्यक्ति का राष्ट्र से अलग होकर कोई अस्तित्व नहीं रहता। राष्ट्र के विकास के लिए उस राष्ट्र के युवा वर्ग एक अहम किरदार निभाते हैं और भारत को यह दैविक शक्ति मिली है कि पूरे विश्व में सबसे बड़ा युवा वर्ग इस देश में है। हम युवा वर्ग को एक निश्चित दिशा देने में विफल हो रहे हैं और छात्र जीवन में राष्ट्रीय भावना जागृत करने में हम विफल हो रहे हैं। और कहीं इस प्रकार की प्रणाली चल भी रही है तो वो विद्यालय तक ही सीमित है।

राष्ट्रीय शिक्षा का संचार विद्यालय तक न सीमित हो समाज और परिवार तक होना चाहिए। युवा वर्ग को एक निश्चित दिशा देना आवश्यक है क्योंकि यह कहा गया है, 'जिस ओर जवानी चलती है, उस ओर जमाना चलता है'। राष्ट्र के विकास में एक महत्त्वपूर्ण बाधा है जिसकी चर्चा अभी तक नहीं हुई है वो है मातृभाषा क्योंकि राष्ट्रीय भावना का संचार मातृभाषा के माध्यम से ही होना चाहिए। स्वामी विवेकानंद ने भी इस बात पर बल दिया था, जिसे स्वामी निर्वेदानन्द जी ने अपनी किताब 'Our Education' में लिखा था, की 'बच्चे की





सात घनघोर पाप - काम के बिना धन, अंतरात्मा के बिना सुख, मानवता के बिना विज्ञान, चरित्र के बिना ज्ञान, सिद्धांत के बिना राजनीति, नैतिकता के बिना व्यापार, त्याग के बिना पूजा। - महात्मा गाँधी



प्रारंभिक शिक्षा' उसी के मातृभाषा के अनुकूल हो जिससे पहले वो अपने परिवार और समाज को समझे और सामाजिक विषमता खत्म हो और त्याग की भावना बढ़े। कालांतर में उत्पन्न हुई समस्याएं को खत्म करना सरकार का काम है लेकिन सिदयों से सामाजिक विषमता को दूर करना और राष्ट्रीय विचारों का प्रवाह करवाना ये समाज का काम है। और भारतीय प्रणाली में तो परिवार से ऊपर समाज को अभिन्न अंग माना गया है। क्योंकि एक राष्ट्र की नींव तब मजबूत होगी जब सामाजिक नींव मजबूत होगी। एक राष्ट्र तब सतत् गति से चलेगा जब उस राष्ट्र के युवा दृढ़ संकल्प से काम करेंगे, हर हाथ को काम मिलेगा, समाज में दूरियाँ घटेंगी, त्याग की भावना उत्पन्न होगी, विचारों का टकराव नहीं होगा, संस्कृति और सभ्यता के अनुकूल काम होगा, नैतिकता और व्यावहारिकता का बोध होगा, अराजकता की भावना खत्म होगी, जन-जन में राष्ट्रीयता का बोध होगा और अंत में प्रकृति की रक्षा होगी।

युद्ध कर बस युद्ध कर!

भगवद् गीता के सांख्य योग से प्रेरित

साक्षी कुमारी अंग्रेजी विभाग MGCU2017ENGL3018



यह कैसा मोह पार्थ! यह कैसे अकस्मात। यह हृदय की तुच्छ व्यर्थता, युद्ध भूमि में नहीं है जँचती। शोभनीय नहीं है यह मनुष्य को, न पंडित को न ही क्षत्रिय को। भीष्म पितामह या द्रोण आचार्य. तू, मैं, प्रजा और महाराज। ये भी तू भी है और भविष्य भी, ये जड भी है और चेतन भी। तू न डर मृत्यु से, न अपने या पराये के। ये सर्दी-गर्मी और ये सुख-दुख, अनित्य हैं ये इन्द्रियों के संयोग। पार्थ! ये जान लो और समझ लो, <mark>व्याकुलता का आलिंग</mark>न तम्हारे योग्य नहीं।

असत् वस्तु की कोई सत्ता नहीं, और सत् का यहाँ अभाव नहीं। जो शाश्वत है तू उसको जान, जिसमें यह सम्पूर्ण जगत विद्यमान। यह शरीर नाशवान, यह मोह नाशवान, यह काम, क्रोध और लोभ नाशवान। बस नाश रहित है ये जीवात्म. यह अप्रमेय है. ये प्रारब्ध। यह है अजर, अवध्य और सनातन, है ये अमर, अव्यय और पुरातन। यह शरीर तो है एक वस्त्र मात्र, आत्मा का एक कल्प मात्र। और रही बात कर्म की. अधिकार और धर्म की। तो सुन पार्थ, मेरी यह भी बात! कर्म ही तेरा अधिकार है. कर्म से ही तेरी पहचान है। तू कर्म कर और बस करता चल फल की आसक्ति तू ना कर। जीवन तेरी रणभूमि है, कर्म तेरे हथियार हैं। समेट अपनी इन्द्रियों को. जैसे कछुआ अपने अंगों को। स्थिर कर अपने मन-उमंगों को. कर ले खुद को तैयार फिर। और.







कर्म प्राथमिकताओं को व्यक्त करता है। - महात्मा गाँधी



डर (कोरोना)

रितेश कुमार सिंह पीएच.डी. शोध छात्र, अंग्रेजी विभाग, MGCU2019ENGL6005



वीरान पड़ी सड़कों पर जीवन देखा है कभी, आज अचानक वह मुस्कुरा उठी है, इस धरा पर हक जो था उनका, उन्होंने आज फिर महसूस किया है। जिनके जीवन को मनुष्य ने सीमित कर दिया, ना जल दिया न जमीन, और उनके हिस्से का आसमान भी ना छोडा। आज फिर वे अंगड़ाई ले रहे हैं, हाँ पर हमने स्वतः नहीं छोडा. इस हवा को जहर बनाना, बल्कि एक डर है, जो प्रगति के साथ समन्वय स्थापित करने को बाधित कर रहा है डर है मौत से. वह मौत जो हमने दिए हैं. कभी जानकर और कभी अनजाने में। पर वह आज ख़ुश है, पेड़ों के पत्तों पर जहर नहीं है , पंछियों को आज डर नहीं है आसमान को किसी दूसरे से बाँटने का, जिंदगी का राग पूरे स्वर में गा रही हैं। जमीन पर चलते-चरते पशुओं को डर नहीं है अगले क्षण काटे जाने का। डर हमें है. बस मौत का। पर यह डर किसी के लिए सौगात है जीवन को जीवित होकर जीने का यह समय है जीवन में समन्वय का नियम सीखने का यह समय है विलुप्त हुए जीवों के दर्द को समझने का, अगर हम अब नहीं समझे तो, इतिहास अपने-आप को हमेशा दोहराता है, जैसे हमने दूसरों को विलुप्त किया, वैसे ही हम अपने अंत की राह पर चल पड़े हैं। यह प्रगति का पाठ है केवल हमारे लिए नहीं बल्कि स्वयं प्रगति के लिए, यह प्रगति आस है तो यह विनाश भी है।

जाग बिहारी जाग!

सचिन कुमार सिंह एम.एसएसी. रसायन शास्त्र MGCU2019CHEM4012



तू धरती का मानस पुत्र, तुझसे नाम बिहार का गौरवशाली पृष्ठ हैं तेरे, बलिदानी इतिहास का कौन है तू यह भूल गया, इतिहास को पीछे छोड़ गया क्यों सोया तू भ्रम निद्रा में, खुद को तो पहचान जरा। चोरी तेरा काम नहीं गददारी में ईमान नहीं अब भी जो कुछ है बचा हुआ, बस अपने को संभाल जरा हरियाणा, पंजाब में तेरे, दम पर है सोना उपजा। तेरे ही कंधों के जोर से, मिलों से है धुआँ उड़ा। आगे देख इस भारत में, हर जगह पैठ तुम्हारी है। अपने घर को छोड़ बहकना, तेरी बड़ी बीमारी है। तेरी मेहनत के बूते 'वो', घूमते ए.सी. कारों में। द्ध-मलाई, मक्खन पिज्जा, खाते पाँच सितारों में। तुझे तो मिलती सुखी रोटी, चंद सिक्के उपहार में। घर पे रोते बीवी बच्चे, सालों के त्योहार में। खेत में खटता बाप खाँसता. माँ तेरी बीमार है। तू कहता 'साहब' पैसे दो, घर से चिट्ठी आई है। घर पे खाना दवा नहीं है, पत्नी याद दिलाई है। नाक सिकोडे साहब कहता, तेरी यही बीमारी है। दोष नहीं तेरा है लेकिन, साला, तू बिहारी है। बहुत हुआ अब और नहीं, वर्ना तेरी अब खैर नहीं। जला ले सीने की वो आग, सुधार दे अपना घर और आज, बस तू जाग बिहारी जाग।।







किसी चीज में यकीन करना और उसे ना जीना बेईमानी है।



आधुनिक समाज में ग्रंथालय एवं सूचना केन्द्रों की भूमिका

अरुण कुमार शर्मा एम.फिल., पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान MGCU2019LISC5001



वर्तमान समय में मानव समाज अपने समस्त क्रिया कलापों के सम्पादन में विभिन्न तरह की संस्थाओं एवं संगठनों का सहयोग ले रहा है। अर्थात् मानव अपने आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य, अनुसन्धान, व्यवसाय इत्यादि सभी गतिविधियों में बढ़-चढ़कर इनसे सम्बन्धित संस्थाओं एवं संगठनों का उपयोग कर रहा है। पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र भी इसी श्रेणी में आते हैं, जो ज्ञान एवं सूचनाओं को विशेषज्ञतापूर्ण ढंग से प्रसारित कर समाज की विभिन्न सूचना व ज्ञान की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। अन्य संगठनों की भाँति पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र द्वारा भी विभिन्न विषय क्षेत्रों की पाठ्य-सामग्रियों का चयन, अर्जन, व्यवस्थापन, संरक्षण एवं वितरण का कार्य किया जाता है।

चूँकि, यह सभी जानते हैं कि मानव समाज के सर्वांगीण विकास हेतु ज्ञान एवं सूचना अत्यन्त आवश्यक अभिकरण है, अतः मानव समाज की विभिन्न गतिविधियों के सफल संचालन एवं विकास में ग्रंथालय एवं सूचना केन्द्रों का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान है। ग्रंथालय और समाज : एक परिचय

ग्रंथालयों के इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि ग्रंथालय के महत्त्व को प्राचीन काल से ही मान्यता मिली हुई थी। परन्तु, उस समय ग्रंथालय का उपयोग व्यक्तिगत संग्रहालय के रूप में विद्यमान था। समाज के सामान्य लोगों के लिए ग्रंथालय का उपयोग दुर्लभ था। उस समय ग्रंथालय में ग्रंथ सिर्फ संरक्षण के उद्देश्य से रखा जाता था। धीरे-धीरे समाज व राष्ट्रों में जैसे-जैसे बौद्धिक चेतना बढ़ती गई वैसे-वैसे यह अनुभव किया जाने लगा कि यदि बिना किसी भेद-भाव के सभी लोगों को ग्रंथालय में संगृहीत सामग्री के उपयोग करने की सुविधा प्राप्त हो तो ग्रंथालय समाज की उन्नित में सफल साधन के रूप में कार्य कर सकते हैं। इस तरह से धीरे-धीरे संगृहीत पाठ्य-सामग्री के उपयोग की सुविधा प्रदान की जाने लगी। कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं के माध्यम से ग्रंथालय और समाज की अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है

<mark>''मनुष्य</mark> ए<mark>क सामाजिक प्राणी है तथा समाज में</mark> रह<mark>ना</mark> उसका

स्वभाव है। अपने इसी स्वभाव के कारण ही मनुष्य अपने अन्य साथियों के साथ अनेक प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करता है तथा यही सम्बन्ध मनुष्य के विभिन्न क्रिया कलापों को अनेक प्रकार से नियंत्रित एवं मर्यादित करते हैं।" वस्तुतः मनुष्यों के जीवनयापन के दौरान निर्मित पारस्परिक सम्बन्धों को 'समाज' कहा जाता है।

मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति के साधनों का जिस ढंग से प्रयोग करता है उससे उसकी सभ्यता का निर्माण होता है। मनुष्य केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करके ही संतुष्ट नहीं हो जाता है बल्कि वह अपने जीवन को सरस, सौन्दर्यमय बनाने हेतु संगीत, साहित्य, कला, धर्म, चिन्तन, कुछ विशिष्ट प्रथाओं, परम्पराओं, संस्थाओं एवं व्यवहारों का भी विकास कर अपने जीवन को सरल, सुन्दर और कल्याणमय बनाने के साथ ही सुसभ्य व सुसंस्कृत बनाने का प्रयास भी करता है, जिसे हम सभ्यता एवं संस्कृति के रूप में चिह्नित करते हैं। समाज से 'संस्कृति और सभ्यता' दोनों जुड़े हुए हैं।

मानव प्रकृति का सबसे अनोखा ज्ञान है और मानव का सबसे मेधावी महाकाव्य है स्वयं 'समाज'। जिसने सिद्ध किया कि मानव अन्य प्राणियों की तुलना में उच्च है तथा प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की क्षमता रखता है। मानव ने प्रकृति को समझने के लिए चिन्तन का सहारा लिया और उससे प्राप्त अनुभवों को उसने ने अनेक रूपों में संजोने के लिए हिड्डयों, जानवरों की खाल, पत्थरों, मिट्टी की पट्टियों, धातुओं, लकड़ी व पेड़ों की छाल से लेकर कपड़े, कागज, फिल्म, प्लास्टिक, मैग्नेटिक टेप तथा चिप एवं सी.डी. रोम इत्यादि का प्रयोग प्रारम्भ से लेकर आज तक समयानुसार किया जा रहा है। ज्ञान का विकास समाज के बिना संभव नहीं है तथा वर्तमान में जो ज्ञान उपलब्ध है, वह सब सामाजिक आवश्यकता, सामाजिक प्रभाव एवं सामाजिक परिवर्तन के कारण है। इस सन्दर्भ में 'प्रो. डी.एस.अग्रवाल' का कथन है, ''पृथ्वी पर मानव का इतिहास ही ज्ञान का इतिहास है।''

वर्तमान समय में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, अनुसंधान मनोरंजन या व्यवसाय इत्यादि सभी विषय क्षेत्रों में विशिष्टीकरण हेतु विभिन्न संगठनों एवं संस्थाओं के द्वारा वृहद स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग हो रहा है। इस संदर्भ में, समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं वैचारिक गतिविधियों के विकास हेतु ग्रंथालय एवं प्रलेखन केन्द्र अत्यन्त उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। वस्तुतः वर्तमान ग्रंथालय एवं सूचना केन्द्रों में नवीन





राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।



प्रौद्योगिकी एवं उपकरण जैसे - कंप्यूटर, श्रव्य-दृश्य उपकरण, प्रिंटर, फोटोस्टेट मशीन, ग्रंथालय सॉफ्टवेयर आदि का विभिन्न कार्यों एवं सेवाओं में बड़े पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है। आज ग्रंथालयों में कार्य एवं सेवा में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग के कारण ग्रंथालयों को सूचना केन्द्र की संज्ञा दी जाने लगी है।

आधुनिक समाज की अनेक आवश्यकताएँ हैं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनेक संस्थाओं एवं संगठनों की स्थापना की गयी है जैसे - शैक्षणिक संस्थाएँ, आर्थिक संस्थाएँ, सांस्कृतिक केन्द्र, मनोरंजन केन्द्र इत्यादि। इस संदर्भ में ग्रंथालय भी एक ऐसी संस्था है जिससे समाज की कई आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है।

किसी समाज या राष्ट्र का निर्माण एवं विकास वहाँ की शिक्षित एवं जागरूक जनता द्वारा ही सम्भव है। इसलिए जन-समुदाय को शत-प्रतिशत शिक्षित करने का प्रयास विभिन्न स्तर पर शैक्षणिक संस्थाओं एवं ग्रंथालयों की स्थापना द्वारा की जा रही है। सर्वविदित है कि शिक्षा एवं ग्रंथालय एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जिसमें किसी एक के बिना शिक्षित समाज की कल्पना असम्भव है। वस्तुतः यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि ग्रंथालय आधुनिक शैक्षणिक संरचना की नींव है। वर्तमान समय में पुस्तकालय शिक्षा के विभिन्न आयामों को अपने में समाहित कर जन-समुदाय को बिना किसी भेदभाव एवं रुकावट के शिक्षित व सूचना-सामग्रियों का अधिकतम उपयोग हेतु प्रोत्साहन प्रदान करता है। आज शिक्षा प्राप्ति हेतु निम्न माध्यम प्रचलित हैं-

- (क) औपचारिक शिक्षा
- (ख) अनौपचारिक शिक्षा
- (ग) प्रौढ़ शिक्षा
- (घ) रोजगार परक एवं व्यावसायिक शिक्षा।

शिक्षा प्राप्ति के उपरोक्त सभी माध्यमों के प्रचार-प्रसार में ग्रंथालयों का सिक्रय सहयोग एवं समर्थन रहा है -

(क) औपचारिक शिक्षा में ग्रंथालय - औपचारिक शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा पद्धित से है जिसे किसी संस्था विशेष जैसे- विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में नियमित अध्ययन-अध्यापन के लिए प्रयुक्त किया गया हो। हमारे देश में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रमुख रूप से इन्हीं संस्थाओं का सहयोग लिया जाता है। अतः औपचारिक शिक्षा में इन संस्थाओं की महत्ता का अनुमान स्वतः ही किया जा सकता है। औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने एवं कराने में सहयोग देने के लिए इन शैक्षणिक संस्थाओं में ग्रंथालयों की स्थापना की जाती है। ग्रंथालयों को किसी भी शिक्षा पद्धित में अध्ययन एवं ज्ञानार्जन का प्रमुख केन्द्र माना जाता है। इस संदर्भ में सर साइरिल नारवुड का कहना है, ''किसी को कितनी उत्तम शिक्षा मिली है इसका पता इससे नहीं लगाया जा सकता कि उसके पास किसी विश्वविद्यालय की उपाधि है या नहीं, अपितु इस बात से लगाया जा सकता है कि उसे ग्रंथालय का उपयोग करना आता है या नहीं।''

- (ख) अनौपचारिक शिक्षा में ग्रंथालय मनुष्य केवल विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में ही शिक्षा ग्रहण नहीं करता, बल्कि इसके बाद भी शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया चलती रहती है जिसे अनौपचारिक शिक्षा कहते हैं। आज की प्रतियोगिता के युग में बाजार में बने रहने के लिए अद्यतन सूचना की आवश्यकता है। ऐसी स्थिति में ग्रंथालय की भूमिका अत्यंत उपयोगी है। इस सन्दर्भ में डॉ. एस.आर. रंगनाथन का कहना है, ''ग्रंथालय जीवनपर्यंत स्वाध्याय कराने का एक सार्वभौम साधन है।''
- (ग) प्रौढ़ शिक्षा में ग्रंथालय किसी भी राष्ट्र या समाज का विकास शिक्षित जनता के द्वारा ही सम्भव है। आजादी के बाद हमारे देश की सरकारों ने उपर्युक्त सर्वकालिक सत्य कथन पर विशेष रूप से ध्यान दिया और अनपढ़ों एवं प्रौढ़ों को शिक्षित करने का प्रयास प्रारम्भ किया, इनके लिए सरकार द्वारा वृहद स्तर पर कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इस शिक्षा कार्यक्रम में ग्रंथालयों का योगदान महत्त्वपूर्ण है जिनकी सहायता से इस शिक्षा कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुँचाया जा सकता है। जैसे -श्रव्य दृश्य उपकरण, चल पुस्तकालय इत्यादि।
- (घ) रोजगार परक एवं व्यावसायिक शिक्षा में ग्रंथालय -

ग्रंथालय एवं सूचना केन्द्र किसी भी राष्ट्र के विकास, प्रगति और नागरिकों के सर्वोन्मुखी विकास के लिए आवश्यक भूमिका का निर्वाह करते हैं, चाहे वह रोजगारपरक एवं व्यावसायिक शिक्षा ही क्यों न हो। इन्हें समाज के बौद्धिक एवं मानसिक विकास का केन्द्र माना जाता है। ग्रंथालय एवं सूचना केन्द्र नित नये तकनीकी अवयवों का प्रयोग करके सूचना के प्रसारण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अतः वर्तमान युग में ग्रंथालय की भूमिका व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के लिए सर्वोपिर है।





पृथ्वी सभी मनुष्यों की जरूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदान करती है, लेकिन लालच पूरा करने के लिए नहीं।



बार-बार कर रही यही चीत्कार हैं!

डॉ. अपराजिता उपाध्याय अतिथि सहायक आचार्य समाज कार्य विभाग



बार-बार कर रही यही चीत्कार है मत दो फाँसी उसे हाँ वो मेरा लाल है, हाँ, वो मेरा लाल है कभी इधर दौड़ती कभी उधर दौड़ती पागलों सी कर रही यही हाहाकार है मत दो फाँसी उसे हाँ वो मेरा लाल है, हाँ, वो मेरा लाल है वो कौन है - वो कौन है के शोर ने उसके चीत्कार को तोड़ा हो गई मौन वो जब उसने खुद को पीछे यूँ मोड़ा सफेद कपड़े में जिंदा लाश-सी लिपटे हुए सारे दर्द को अपने चेहरे पर समेटे हुए हाँ वही थी वो जिसे चाहिए था न्याय पर अपनी व्यथा वो किसे सनाये उसके दर्द के आगे माँ का स्वर शिखर से शून्य हो गया उसके आँसुओं के आगे उस माँ की ममता सो गयी माँ की ममता कुछ यूँ टूटी सैलाब-सी बनकर सब कुछ भूल गयी वो माँ और फिर बोली गरजकर दे दो उसे फांसी, लाल नहीं शैतान है वो हाँ दे दो उसे फाँसी, लाल नहीं शैतान है वो तेजी से बाहर चली गयी अपना फैसला सुनाकर जैसे कुछ पा लिया हो अपने औलाद को भुलाकर।



उम्मीद का दिया

इंदुबाला पीएच.डी. शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग MGCU2019EDUC6004



वक्त बदलेंगे, हालात बदलेंगे थोडा इंतजार तो कीजिये। जीत लेंगे हर जंग हम खुद पर इतना ऐतबार तो कीजिये। जिंदगी एक संघर्ष है लड़ने को खुद को तैयार तो कीजिये। माना अभी हर तरफ खौफ का मंजर है मिट जाएगा ये खौफ भी इंसानियत की मिसाल तो दीजिए। ये वक्त बुरा भी बीत जाएगा जल्द ही पहले सब्र का इम्तिहान तो दीजिये, कहते हैं दुआओं में बहुत असर होता है एक बार दिल से दुआ तो कीजिए। जीता तो हर कोई है ख़ुद के लिए एक बार गैरों के जीने का इंतजाम तो कीजिए। फैला हर तरफ है डर और दहशत का मौहील छँट जाएगा पर ये अंधेरा भी एक बार उम्मीद का दिया रौशन तो कीजिये।



कौन कहता है कि बापू शत्रु थे विज्ञान के? वे मनुज से मात्र इतनी बात कहते थे, रेल, मोटर या कि पुष्पक-यान, चाहे जो रचो, पर, सोच लो, आखिर तुम्हें जाना कहाँ है।

- रामधारी सिंह दिनकर







स्वयं को जानने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है स्वयं को औरों की सेवा में डुबो देना।



(कहानी)

वऽऽवा

रश्मि सिंह पीएच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग MGCU2019HINDI6006



''बरखा! आरती मैडम ने स्टाफ रूम में बुलाया है तुम्हें।'' ''आ..आरती मैडम ने मुझे बुलाया है?'' बरखा ने आश्चर्य से मिताली को देखा।

''हाँ जी आपको बुलाया है। अब जाएगी भी या ऐसे ही बैठी रहेगी?''

''हाँ...हाँ..जाती हूँ बाबा'' बरखा ने उठते हुए कहा।

स्टाफ रूम तक पहुँचते-पहुँचते बरखा की हालत खराब हो चुकी थी। उसकी आँखों में साफ-साफ डर दिख रहा था। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि बात इतनी बढ़ जाएगी। एक छोटा सा मजाक इतना महँगा पड़ेगा। क्यों मानी उसने स्मृति की बात.... अपना सच छुपाने के लिए ये क्या कर दिया उसने??....और ऊपर से बात आरती मैडम तक जा पहुँची है। वह किसी भी सूरत में माफ नहीं करने वाली। स्टाफ रूम तक वह पहुँच तो गयी थी लेकिन अंदर जाने की हिम्मत नहीं हो रही थी। पर्दे के एक कोने से उसने झाँक कर देखा ...आरती मैडम कोई किताब लिए बैठी थीं। वही सख्ती चेहरे पर ...न हँसने की तो जैसे कसम खाई हो....।

अचानक पीछे से वानी मैडम की आवाज आई, ''यहाँ क्यों खड़े हो बच्चे.....''

''नमस्ते मैडम'' बरखा ने हड़बड़ाकर कहा।

''इतना परेशान...क्या हुआ?''.....मैडम ने मुस्कराते हुये पूछा।

''वो..वो..आरती मैडम से मिलना है।''

''इसमें परेशान होने की बात क्या है?'' मैडम प्यार से अपना हाथ बरखा के सिर पर रखते हुए स्टाफ रूम में चली गईं। खुद को मजबूत करते हुये बरखा अंदर जाने की ओर बढ़ी।

''मैम..आपने <mark>बुलाया मुझे...'' धीरे से उसने कहा।</mark>

<mark>''हाँ जी.....बुलाया तो है....।'' बिना देखे आ</mark>रती मैडम ने क<mark>हा</mark>।

''...तो...क्या समझा था आपने...?'' बरखा की ओर <mark>घूरती नजरों</mark> से आरती मैडम ने कहा।

"...बिना नाम के आप लेटर लिखेंगी....विकास के टेबल पर <mark>र</mark>ख

आएँगी और किसी को कुछ पता नहीं चलेगा। क्या..समझ क्या रखा है आपने...यह स्कूल है आपका...।"

बरखा के तो जैसे पैर ही जम गये..। दिल जोर-जोर से धड़क रहा था और वह उस मनहूस घड़ी को याद कर रही थी जब स्मृति के कहने पर उसने विकास सर के टेबल पर लव लेटर रखा था। ''ऐसा करिए....अपने मम्मी-पापा से बात करवाइए।''

''सॉ..सॉरी मैम'' बरखा ने डरते-डरते कहा।

''क्या सॉरी.. सॉरी लगा रखा है'' आरती मैम ने गरजते हुए कहा। स्टाफ रूम में बैठे सारे टीचर्स उसे देखने लगे थे। शर्म से उसने नजरें झुका ली थी।

''...अभी इतनी सीधी कैसे बन गईं आप...किसी को परेशान करते वक्त कहाँ था आपका ये सीधापन?'' व्यंग्य से मैम ने कहा। ''जाइए अभी आप ...कल 11 बजे प्रिंसिपल ऑफिस में मिलिए'' मैम ने अपना बैग उठाते हुए कहा। उनके घर जाने का टाइम हो गया था।

बरखा को ऐसा लग रहा था जैसे स्टाफ रूम के चारों ओर से कई जोड़ी निगाहें उसे देख रही हैं...आपस में बातें कर रही हैं। वह जल्दी से स्टाफ रूम से भाग जाना चाहती थी। पर जैसे उसके पैर ही नहीं उठ रहे थे। बड़ी मुश्किल से वह बाहर जाने को मुड़ी...ठीक सामने की चेयर पर बैठी वानी मैम को उसने अपनी ओर देखते पाया। उनकी आँखों में उसने अपने लिए संवेदना देख ली थी। वह उसे जाते हुए देखती रहीं।

स्टाफ रूम से बाहर आकर वहीं एक किनारे पड़ी बेंच पर बैठ वह बहुत देर तक रोती रही। आने-जाने वाली लड़िकयाँ उसे कौतूहल से देख रही थीं। कुछ तो उसे देख हँस भी रही थीं। बी.ए. का आखिरी साल है उसका और अब जबिक परीक्षा सर पर है उसमें इन सब घटनाओं का होना उसके भविष्य के लिए ठीक नहीं है। एक-एक कर वह उन सब बातों को आपस में जोड़ रही थी, जिसकी शुरुआत पिछले कुछ दिनों पहले ही हुई थी। बात अगर विकास सर से न जुड़ी होती तो शायद यह नौबत न आती। अभी पिछले दिसम्बर में ही विकास सर एक नए शिक्षक के रूप में उसकी कक्षा में आए थे। सर को देखते ही लड़िकयों ने मुस्करा कर एक-दूसरे को बड़ी अर्थभरी नजरों से देखा था। सर का आकर्षक व्यक्तित्व...आवाज.... और पढ़ाने का अंदाज यह सब कुछ किसी भी लड़की को पागल करने के लिए काफी था। बीच-बीच में गालिब और मीर के शेर......





मृत, अनाथ, और बेघर को इससे क्या फर्क पड़ता है कि यह तबाही सर्वाधिकार या फिर स्वतंत्रता या लोकतंत्र के पवित्र नाम पर लायी जाती है? - महात्मा गाँधी ..सच में उनकी क्लास साहित्य की क्लास लगती थी। लड़कियाँ उनकी क्लास कभी नहीं छोड़ती थीं। कम दिनों में ही विकास सर पूरे कॉलेज में फेमस हो चुके थे। उनको देखने भर के लिए लड़कियाँ कक्षा के बाहर घंटों बैठी रहती थीं।

अब भी उसे याद है जब सर पहली बार कार से आए थे। कार से उतरकर जैसे ही वह स्टाफ रूम की ओर जाने लगे, स्मृति ने हँसते हुए कहा- "सर की बगल वाली सीट मेरे लिए ही है।" आस-पास बैठी लड़कियाँ जोर-जोर से हँसने लगीं पर स्मृति को इन बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह मुझे कभी भी अच्छी नहीं लगी थी। जाने किस बात का घमंड था उसे...कभी भी सीधे मुँह बात नहीं करती थी। तु-तड़ाक करके ही वह सबसे बात करती थी। हॉस्टल में मेरी रूममेट है वह। वहाँ भी हमारा जीना हराम करके रखा है उसने। और आज यह सब कुछ जो हो रहा है सब स्मृति ने ही शुरू किया था। 'अब क्या करेगी वह....गलती से भी अगर आरती मैम ने उसके घर फोन कर दिया तो ...सब खत्म हो जाएगा। मम्मी तो सदमे से मर ही जाएँगीं।' अभी थोड़े दिन ही हुए उस घटना को हुए जिसने उसके जीवन में मानो तूफान ला दिया था। अभी तो वह उस तकलीफ से उबरी भी नहीं हैं ...और अब ये सब बातें। मम्मी का तो भरोसा ही टूट जाएगा।दिल कर रहा था की वह चिल्लाकर रोये.लेकिन

हॉस्टल नहीं गईं....वानी मैम ठीक उसके पीछे खड़ी थीं। हमेशा की तरह मुस्कराते हुए उन्होंने पूछा। बरखा को कुछ सूझ ही नहीं रहा था.....चुपचाप खड़ी थी वह। ''चॉकलेट खानी है....'' मैम ने पूछा। ''यह कैसा मजाक है....'' बरखा मन ही मन सोच रही थी। ''अच्छा...अभी तो मेरी क्लास का टाइम हो गया है...ऐसा करो कैंटीन जाकर जो चॉकलेट पसंद हो वो ले लेना और मेरा नाम बता देना। ठीक है.......शाम में बात करती हूँ तुमसे, यह कहती हुई वानी मैम चली गईं।'' बरखा को कुछ समझ ही नहीं आया। वह सोचने लगी - 'यहाँ मेरी जान पर आ पड़ी है और मैम को चॉकलेट की पड़ी है। .. मैं रो रही हूँ...और वानी मैम हँसे जा रही हैं। हरदम हँसना जरूरी होता है क्या?'

किसी तरह क्लास से उसने अपना बैग लिया और हॉस्टल जाने लगी। कॉलेज से हॉस्टल बस थोड़ी ही दूरी पर था लेकिन, आज तो जैसे रास्ता ही नहीं कट रहा था। पैर घसीटते किसी तरह वह हॉस्टल पहुंची। बैग फेंक बेड पर जा गिरी। आरती मैम का चेहरा अब भी उसकी आँखों के सामने घूम रहा था। कल क्या होगा..... कैसे खत्म होगा यह सब कुछ.......? स्मृति के सामने कितना गिड़गिड़ाई थी वह ...फिर भी वह नहीं मानी। काँपते हाथों से उसने वह लेटर लिखा था। विकास सर की वह बहुत इज्जत करती थी और आजयह सब क्या लिखवाया है स्मृति ने। लेटर पढ़कर स्मृति, खुशबू और पूजा खूब हँसी थी। उसने कितनी बार शिश मैम से रूम चेंज करने को बोला था, लेकिन हर बार उनका यही उत्तर था- 'रूम चेंज अब नहीं हो सकता। रहना तो उन्हीं लोगों के साथ पड़ेगा।'

ठीक चार बजे नाश्ते की घंटी बजी...पर वह नहीं उठी। रो-रोकर आँखें सूज आयीं थीं। डर के मारे उसका दिल बैठा जा रहा था। अब भी उसे याद है जब पहली बार हॉस्टल जाने के लिए वह घर से निकली थी, गाँव के मंदिर पर बैठे कुछ लोगों ने कहा था - 'कलेक्टर बनने जा रही हैं।' सबको क्या मुँह दिखाएगी वह? अच्छा है उसकी तीनों रूममेट हॉकी खेलने बाहर गयी हैं... उनके रहते मजाक ही बनता। कल जब स्मृति को उसने फोन किया था तो हँसते हुए उसने कहा था- 'हम लोग बहुत बिजी हैं बरखा......लेटर लिखा है तो सजा भी भुगतो......' बरखा की इसमें कितनी गलती है वह खुद भी नहीं जानती। यह क्यों हुआ, कैसे हुआ....उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। मोबाइल बहुत देर से बज रहा था.....जब उसकी नींद खुली तो ...साढ़े नौ बज रहे थे। हड़बड़ाकर उसने मोबाइल उठाया। वानी मैम का नंबर था। ऑफिस से चोरी से वानी मैम का नंबर सेव करते हऐ उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि कभी मैम उसे फोन करेंगी...और कुछ इस हालात में।

''हैलो....''

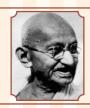
''बरखा.....'' मैम की मीठी आवाज उसके कानों में पड़ी।

''<mark>सो रहीं थीं क्या?'' मैम ने पूछा</mark>।

''आपको मेरा नंबर कहाँ से मिला?'' बरखा ने पूछा।

"जी आपने ही एक बार टीचर्स डे पर मैसेज किया था" मैम ने हँसते हुए कहा। बरखा को अब जाकर याद आया। टीचर्स डे पर एक घंटे के सोच-विचार के बाद उसने मैम को मैसेज किया था। "रो लिया जी भरकर...कि अब भी कुछ बाकी है" मैम ने पूछा। बरखा चुप रही। "लगता है अभी बाल्टी भरी नहीं हैऐसा करो जी भर के रो





आप तब तक यह नहीं समझ पाते कि आपके लिए कौन महत्त्वपूर्ण है जब तक आप उन्हें वास्तव में खो नहीं देते। - महात्मा गाँधी



लो, फिर बात करते हैं'' मैम ने कहा। ''नहीं..मैम सब..सब ठीक है।'' ''अच्छा जी ...फिर रो-रोकर हालत ऐसी क्यों बना ली है कि बोला भी नहीं जा रहा......'' मैम हँस रही थीं। ''क्या हुआ?'' ''कुछ नहीं मैम.. सब ठीक है।'' मैम ने इस बार कोई जवाब नहीं दिया। ''मैम...वो...लेटर मैंने खुद से नहीं लिखा मुझसे लिखवाया गया है।'' ''किसने लिखवाया?'' इस बार मैम थोड़ी गंभीर थीं। ''.. स्मृति ने...'' बरखा ने कहा।

''फिर तुमने आरती जी को बताया क्यों नहीं......''

''नहीं बता सकते मैम....'' कहकर वो रोने लगी ..और देर तक रोती रही। मैम देर तक उसका रोना सुनती रहीं.....बहुत देर बाद खामोशी तोड़ते हुये बरखा ने कहा - ''मैम...प्लीज आप किसी को मत बताना...मैं बताती हूँ.....।" "कभी नहीं......." मैम के कहे इस वाक्य ने बरखा को वो विश्वास दिलाया कि अगले एक घंटे तक वह बिना रुके कहती रही .. । और जब उसने मोबाइल बेड पर रखा तो वो अंदर से बहुत खाली महसूस कर रही थी.....थोड़ी शांति तो उसे जरूर मिली थी। मैम कल आरती मैम से बात करेंगी और सही बात उन्हें बताएँगी। अब भी मैम की बातें उसके कानों में गुंज रही थीं -'सच कहने की हिम्मत रखो बरखा.....यहाँ कोई किसी मदद नहीं करता......अपनी मदद खुद करनी पड़ती है .. भगवान सब देख रहा है उस पर विश्वास रखो और अपना काम ईमानदारी से करोमें नहीं चाहती कि तुम अतीत की बातों को पकड़कर बैठी रहो......आगे बढ़ो......मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।'इन सब बातों को याद कर बरखा रोये जा रही थी.......मैम की एक बात लगातार उसके कानों में गूँज रही थी...... 'बरखा मैं नहीं चाहती कि तुम बस एक कहानी बनकर रह जाओ' अचानक से सब शांत हो गया था....बरखा आँख बंद कि न जाने किस दुनिया में थी..उसका बैग अब भी एक कोने पडा था.....मोबाइल बंद था....कमरे का पंखा धीरे-धीरे चल रहा था.....बाहर की हवा आज बहुत शांत थी...दूर...बहुत दूर से किसी के हँसने की आवाज आ रही थी...... रात धीरे-धीरे गहरा रही थी..। और...सुबह जब वानी मैम जल्दी-जल्दी कॉलेज जाने की तैयारी कर रहीं थीं, तभी उनका मोबाइल बजा।

आरती जी का फोन....अभी....रात में तो उनसे बात हुई थी....। 'हैलो.....वानी.....' 'हाँ आरती जी' 'बहुत गड़बड़ हो

गयी वानी....अभी हॉस्टल से फोन आया थाबरखा...बरखा की. .. क्या हुआ उसे.... वो...वो उसकी डेड बॉडी.... क्या कह रहीं हैं आप...तुम जल्दी से हॉस्टल पहुँचो......मैं...मैं बस जा ही रही हूँ। फोन कट गया था....वानी मैम अब भी मोबाइल पकड़े थीं....। बरखा की आवाज जैसे आ रही थी.....भागकर वो कार तक पहुंची.। कार बड़ी तेजी से भाग रही थी... वानी मैम उन सब बातों को एक बार फिर से सुन पा रहीं थीं..।" मैम...प्लीज आप किसी को मत बताना....मैं बताती हूँ....वो कुछ दिन पहले मम्मी का फोन आया था....वो बहुत रो रही थीं....रोते-रोते उन्होंने कहा था...- बरखा... तुम हमारी बेटी नहीं हो..तुम्हारे बाप ने हम सब की जिंदगी नर्क बनाकर रख दी है....अब और नहीं सहा जाता ...और बहुत कुछ कहा था मम्मी ने....पर मुझे कुछ याद नहीं...। मैं जोर-जोर से रोने लगी थी....अचानक से स्मृति जग गयी...पता नहीं क्यों मैं उसे पकड़कर रोने लगी थी। पहली बार उसने मुझसे अच्छे से बात की थी....मुझे चुप कराया....और सब पूछने लगी.....मैंने भी सब बता दिया था..।

अगले दिन वो बात बहुत सारी लड़िकयों को पता चल चुकी थी....मैंने स्मृति के आगे हाथ जोड़े कि इस तरह मेरा मजाक मत बनाओ...और...और...फिर उसने कहा कि...- मेरा एक छोटा सा काम कर दो....मैं किसी को कुछ नहीं बताऊँगी.. बस एक छोटा-सा मजाक ...विकास सर को एक लव लेटर लिख दो...उसमें नाम मत लिखना....किसी को कुछ पता नहीं चलेगा... "कार बड़ी तेजी से हॉस्टल के गेट पर रुकी...वानी मैम भागती सी गेट पर पहुँची...तभी बगल से हॉस्टल डिस्पेन्सरी की एम्बुलेंस धूल उड़ाती बगल से गुजरी .. उस धूल के साथ अपनी ही आवाज को सुनते पाया वानी मैम ने... .-" बरखा...मैं नहीं चाहती कि तुम बस एक कहानी बन कर रह







सत्य कभी ऐसे कारण को क्षति नहीं पहुँचाता जो उचित हो।





यू.पी.एस.सी. बहुत कुछ मांगती है!

प्रिंस कुमार बी.टेक. संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी MGCU2017CSIT3014



तुम कितना पढ़ते हो, पढ़ते भी हो या बस लाइब्रेरी में सड़ते हो, तुम्हारे हर दिन, हर पल का हिसाब ये जानती है! ये यू.पी.एस.सी. है, बहुत कुछ माँगती है। दिन महीनों सालों की तपश्चर्या अदम्य परिश्रम और त्याग की ये हर सीमाएँ लाँघती है ये यू.पी.एस.सी. है, बहुत कुछ माँगती है। दिन महीनों सालों की तपश्चर्या। अदम्य परिश्रम और त्याग की ये हर सीमा लाँघती है ये यू.पी.एस.सी. है, बहुत कुछ माँगती है। वक्त की इज्जत, बेहिसाब मेहनत, उगता सूरज, ढलती शाम, और फिर भी पढ़ रहे तुम, ये दिन और रात को एक ही जानती है ये यू.पी.एस.सी. है, बहुत कुछ माँगती है। हो देश को बदलने का सपना या हो हर व्यक्ति को लाभ पहुँचाने की इच्छा ये तुम्हें हर दिन हराने में ही सुकून माँगती है, हार कर भी जो उठ खड़ा हो हर बार ये उसी को सलाम करना जानती है ये यू.पी.एस.सी. है, बहुत कुछ माँगती है!

मजदूर





तबियत जरा नासाज है बस और कुछ नहीं हिस्से में गम की शाम है बस और कुछ नहीं, रोटी नहीं कपड़ा नहीं मयस्सर नहीं मकाँ फुटपाथ अपना घर है बस और कुछ नहीं, खुद के लिए तो आज तक कुछ भी नहीं किया मजबूर हूँ....परिवार है बस और कुछ नहीं, हालत हमारी देख कर हैरान क्यों हैं आप. ये पेट-पीठ एक है बस और कुछ नहीं, हाथों की सब लकीरें घिस-घिस के मिट गयीं मेहनत का ये रसूख है बस और कुछ नहीं, सूखे पड़े हैं होठ काला पड़ा है जिस्म ये धूप के निशान हैं बस और कुछ नहीं, मर-मर के हमने अपनी जी ली है जिंदगी बच्चे करें कुछ अच्छा बस और कुछ नहीं, क्या पूछते हो हमसे क्या है हमारा नाम मजदूर कह लो साहब बस और कुछ नहीं !

''इन प्रयोगों के बारे में मैं किसी भी प्रकार की संपूर्णता का दावा नहीं करता। जिस तरह वैज्ञानिक अपने प्रयोग अतिशय नियम-पूर्वक, विचार-पूर्वक और बारीकी से करता है फिर भी उनसे उत्पन्न परिणामों को अंतिम नहीं कहता, अथवा वे परिणाम सच्चे ही हैं इस बारे में भी वह सशंक नहीं तो तटस्थ अवश्य रहता है, अपने प्रयोगों के विषय में मेरा भी वैसा ही दावा है। मैंने खूब आत्म-निरीक्षण किया है, एक-एक भाव की जाँच की है, उसका पृथक्करण किया है। किंतु उसमें से निकले हुए परिणाम सबके लिए अंतिम ही हैं, वे सच हैं अथवा वे ही सच हैं ऐसा दावा मैं कभी करना नहीं चाहता। हाँ, यह दावा मैं अवश्य करता हूँ कि मेरी दृष्टि से ये सच हैं और इस समय तो अंतिम जैसे ही मालूम पड़ते हैं। अगर न मालूम हों तो मुझे उनके सहारे कोई भी कार्य खड़ा नहीं करना चाहिए। लेकिन मैं तो पग-पग पर जिन-जिन वस्तुओं को देखता हूँ, उनके त्याज्य और ग्राह्य ऐसे दो भाग कर लेता हूँ और जिन्हें ग्राह्य समझता हूँ उनके अनुसार अपना आचरण बना लेता हूँ। और जब तक इस तरह बना हुआ आचरण मुझे अर्थात् मेरी बुद्धि को और आत्मा को संतोष देता हैं, तब तक मुझे उसके शुभ परिणामों के बारे में अविचलित विश्वास रखना ही चाहिए।"

- गाँधी जी की आत्मकथा (सत्य के प्रयोग) की भूमिका से





ऐसे जियो जैसे कि तुम कल मरने वाले हो।
ऐसे सीखो की तुम हमेशा के लिए जीने वाले हो।
- महात्मा गाँधी



कुछ तो पूछो!

डॉ. अपराजिता उपाध्याय अतिथि सहायक आचार्य समाजकार्य विभाग



कुछ तो उन जागती आँखों से पूछो कुछ तो उन कँपकँपाते होठों से पूछो जिस दर्द के जहर को ले पिया है मैंने कुछ तो उन बर्तनों के जुठनों से पूछो में तो तेरा मान थी तेरा ही अभिमान थी फिर कहाँ है, मेरी अस्मत अब इस जहान से पूछो नामों का दर्जा मुझे नहीं चाहिए कभी काली दुर्गा की पूजा भी नहीं चाहिए पूजना है तो पूजो जो चाहती हूँ मैं अस्मत की करो रक्षा यही है असली पूजा क्यों जानवर बने हो? ये सभी हैं अपने उस जंजीर को तोड़ो जिसे तोड़ा है हमने मेरे भी अस्तित्व को अब तुम स्वीकार करो झठी दलीलों से अब ना प्रतिकार करो अब शिखर भी मुखर नहीं गर चलेंगे साथ-साथ जलाएँगे नये दिये नया होगा ये प्रकाश दिखाएँगे समाज को रचेंगे नया इतिहास

कुछ करने का मौसम

अंजली कुमारी परास्नातक हिन्दी, प्रथम वर्ष MGCU2019HINDI4003



बोलो मत, काम करने का मौसम है
दौड़ो मत, धीरे चलने का मौसम है
कहीं बादल कहीं बिजली चमक रही
अभी तो छिप जाने का मौसम है
बोलो मत, काम करने ...।
विष भरी बोतल पर अमृत का लेबल
घबड़ा मत परखने का मौसम है
ढूँढ़ रहे व्यर्थ ही गुलशन में गुल को
चमन में पतझड़ का मौसम है
बोलो मत, काम करने ...।
खुद को तनहा जान होते हो उदास क्यों
अभी तो भीड़ से निकलने का मौसम है
आग लगने पर चिल्लाते क्यों हो
हिम्मत से कुछ करने का मौसम है।

दक्षिण अफ्रीका के भारतीय लोगों के अधिकारों की रक्षा के लिए सतत् लड़ते हुए गाँधीजी 1909 में लंदन गए थे। वहाँ कई क्रांतिकारी स्वराज प्रेमी भारतीय नवयुवक उन्हें मिले। उनसे गाँधी जी की जो बातचीत हुई उसी का सार गाँधी जी ने एक काल्पनिक संवाद में ग्रंथित किया है। इस संवाद में गांधी जी के उस समय के महत्त्व के सब विचार आ जाते हैं। किताब के बारे में गाँधीजी ने स्वयं कहा है कि ''मेरी यह छोटी सी किताब इतनी निर्दोष है कि बच्चों के हाथ में भी यह दी जा सकती है। यह किताब द्वेषधर्म की जगह प्रेमधर्म सिखाती है। हिंसा की जगह आत्म-बलिदान को स्थापित करती है। और पशुबल के खिलाफ टक्कर लेने के लिए आत्मबल को खड़ा करती है।'' गाँधी जी इस निर्णय पर पहुँचे थे कि पश्चिम के देशों में, यूरोप-अमेरिका में जो आधुनिक सभ्यता जोर कर रही है, वह कल्याणकारी नहीं है, मनुष्यहित के लिए वह सत्यानाशकारी है। गाँधी जी मानते थे कि भारत में और सारी-दुनिया में प्राचीन काल से जो धर्म-परायण नीति-प्रधान चली आई है वह सच्ची सभ्यता है।

गाँधीजी का कहना था कि भारत से केवल अंग्रेजों को और उनके राज्य को हटाने से भारत को अपनी सच्ची सभ्यता का स्वराज नहीं मिलेगा। हम अंग्रेजों को हटा दें और उन्हीं की सभ्यता और उन्हीं के आदर्श को स्वीकार करें तो हमारा उद्धार नहीं होगा। हमें अपनी आत मा को बचाना चाहिए। भारत के लिखे-पढ़े लोग पश्चिम के मोह में फँस गए हैं। जो लोग पश्चिम के असर तले नहीं आए हैं, वे भारत की धर्म-परायण नैतिक सभ्यता को मानते हैं। उनको अगर आत्मशक्ति का उपयोग करने का तरीका सिखाया जाए, सत्याग्रह का रास्ता बताया जाए, तो वे पश्चिमी राज्य-पद्धित का और उससे होने वाले अन्याय का मुकाबला कर सकेंगे तथा शस्त्रबल के बिना भारत को स्वतंत्र करके दुनिया को भी बचा सकेंगे।

- काका कालेलकर (गाँधी जी कृत हिन्द स्वराज पुस्तक) के विषय में





जब मैं निराश होता हूँ, मैं याद कर लेता हूँ कि समस्त इतिहास के दौरान सत्य और प्रेम के मार्ग की ही हमेशा विजय होती है। कितने ही तानाशाह और हत्यारे हुए हैं, और कुछ समय के लिए वो अजेय लग सकते हैं, लेकिन अंत में उनका पतन होता है। इसके बारे में सोचो- हमेशा।



बेटियाँ

संकल्प श्रीवास्तव बी.एससी. तृतीय वर्ष, प्राणि विज्ञान MGCU2017ZOOL3012



बेटे के जन्म पे खूब जलसा करना,
बेटी के जन्म पे किस्मत को कोसना ,
बचपन में बेटे को 'ग' से गन सिखाना,
और बेटी को 'ग' से गुड़िया ही बताना,
बेटे को चोट लगे तो मरहम लगाना,
बेटी को पीरियड्स आए तो चुप रहने को बोलना,
बेटे को दुनियादारी का ज्ञान देना,
बेटी को इन सब से अनजान रखना,
बेटी को घर का चिराग बनाना,
बेटी को पराया धन होने का एहसास दिलाना,
फिर, अगर किसी बेटी का रेप हो,
तो सोशल मीडिया पे,
'बेटी पढ़ाओ और बेटी बचाओ' के नारे लगाना..
ओ मर्द जात, तू बस! सोच बदल,
बेटियाँ पढ़ेंगी भी, और तुझे बचाएँगी भी।

कोरोना को हराना है!

इंदुबाला पीएच.डी. शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग MGCU2019EDUC6004



दुनिया में आज हाहाकार मचा है,
अजब दहशत में ये संसार खड़ा है।
हमें हराने को अदृश्य दुश्मन तैयार चला है
ना जाने किस ओर बैठा छुपा है,
देश का हर इंसान आज डरा है।
स्वच्छता को जीवन में अपनाना है
योग व्यायाम को जीवन का हिस्सा बनाना है,
पौष्टिक संतुलित आहार को आधार बनाना है,
हम सभी को सामाजिक दूरी को अपनाना है,
हर हाल में हमें कोरोना को मिलकर हराना है।
अब बारी है पूरी तैयारी की,
बिना मास्क लगाये घर से बाहर नहीं जाना है,
इस बार कोरोना को हराना है
नए भारत का निर्माण करना है,
आत्मनिर्भर बनके दुनिया को दिखाना है।



बापू ! तुमने होम दिया जिसके निमित्त अपने को, अर्पित सारी भक्ति हमारी उस पवित्र सपने को। क्षमा, शान्ति, निर्भीक प्रेम को शतशः प्यार हमारा, उगा गये तुम बीज, सींचने का अधिकार हमारा। निखिल विश्व के शान्ति-यज्ञ में निर्भय हमीं लगेंगे, आयेगा आकाश हाथ में, सारी रात जगेंगे।

- रामधारी सिंह दिनकर







जहाँ प्रेम है, वहाँ जीवन है।



लॉकडाउन में आर्थिक मंदी का दंश झेलता बेहाल किसान

सन्नी कुमार मिश्रा विद्यार्थी, माध्यम अध्ययन विभाग MGCU2019DOMS4018



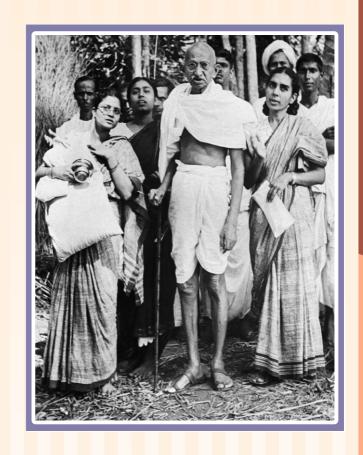
लगातार बढ़ते कोरोना मामलों के वजह से सरकार द्वारा बार-बार लॉकडाउन बढ़ाएँ जाने का असर चहुँओर दिखाई पड़ रहा है। किसानों पर इसका गहरा असर पड़ा है। सर्वाधिक प्रभाव सब्जी की खेती पर पड़ा है। सब्जी-किसान बेहाल हैं। खून पसीने की मेहनत और लागत के बदौलत अब खेतों में सब्जी की फसल तैयार है, परंतु किसानों को दाम नहीं मिल रहे हैं और ना ही सब्जियां आसानी से बिक पा रही। लागत खर्च निकलना मुश्किल है। जिस वजह से कर्ज लेकर खेती करने वाले किसानों में हताशा छाई हुई है।

किसानों के अनुसार लॉकडाउन में सब्जियों का निर्यात रुका हुआ है। बाहर के व्यवसायी आ नहीं रहे हैं। स्थानीय सब्जी मंडियों में भी आम दिनों की अपेक्षा काफी कम बिक्री हो रही। लोग आलू, प्याज, चना, सोयाबीन आदि का भंडारण कर घरों में बंद हैं। बीमारी के डर से अत्यंत आवश्यक होने पर ही घर से बाहर नहीं निकल रहे। ऐसे में खपत बहुत कम हो रही है।

हमेशा महँगा बिकने वाला परवल प्रतिकिलो कौड़ी के दाम बिक रहा। करेला और भिंडी की हालत खस्ता है। इन सब्जियों को किसान 2-4 रुपए प्रतिकिलों के दर से बेचने को मजबूर हैं। फिर भी उपज के मुताबिक खपत नहीं हो पा रही। खीरा और तरबूज भी औने-पौने दामों पर बिक रहे हैं। ऐसे में सब्जी उत्पादक किसान सरकार से सहायता मुहैया कराए जाने के आशा में हैं। मौसम की बेरुखी के बावजूद मक्के की फसल काफी अच्छी हुई है, लेकिन लॉकडाउन की वजह से खरीदार नहीं मिल रहे हैं। नतीजन किसानों के सामने आर्थिक संकट आ खड़ा हुआ है। किसान खेत से फसल काटकर अपने घरों के सामने रखने को मजबूर हैं। रख रखाव में उन्हें काफी तकलीफ का सामना करना पड़ रहा है। साथ ही उपज के खराब हो जाने का भी खतरा है।

इस बार किसान दोहरी मार झेलने को विवश हैं। एक ओर ओलावृष्टि और बारिश से फसल की क्षति हुई, बावजूद इसके मक्के की अच्छी पैदावार हुई, लेकिन अब खरीदार नहीं हैं। पिछले वर्ष लगभग 2000 प्रति क्विंटल तक मक्का किसानों के दरवाजे से ही बिका था। उन्हें मंडी जाने से भी छुटकारा प्राप्त था। ठीक इसके विपरीत लॉकडाउन में दरवाजे पर व्यापारी आना तो दूर बाजार में भी मक्का के खरीदार नहीं है। बिहार में अधिक विकट परिस्थिति।

बिहार में हिरियाणा, पंजाब या अन्य राज्यों जैसे अनाजों के क्रय हेतु कोई सरकारी व्यवस्था भी नहीं है जिससे किसानों को समय पर उचित दाम प्राप्त हो सकें परिणाम स्वरूप पैसे के अभाव में खरीफ फसलों की बुआई रुकी है। साथ ही सब्जियाँ कीटनाशक और उर्वरक के अभाव में सूख रहीं। ऐसे ही हर तरफ से विकट परिस्थिति और आर्थिक तंगी का दुष्परिणाम एक दिन किसानों द्वारा आत्महत्या के रूप में सामने आता है।







अपने प्रयोजन में दृढ़ विश्वास रखने वाला एक सूक्ष्म शरीर इतिहास के रुख को बदल सकता है।



कहानी

स्वच्छ संदेश

मुस्कान एम.बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर MGCU2019MGMT4015

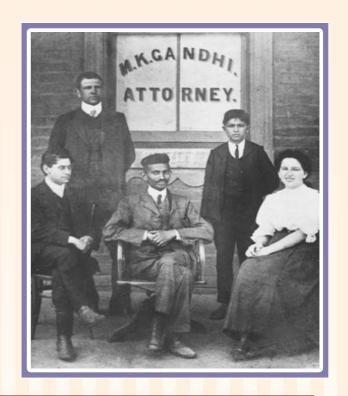


कुछ दिन पहले, शाम को बाजार से लौटते वक्त मेरा ध्यान एक कोलाहल की तरफ गया। कुछ लोग रास्ता खाली करा रहे थे। तभी कुछ बड़ी गाड़ियाँ वहाँ आकर रुकीं, कुछ समाज के बुद्धिजीवी लोग बाहर आते हुए दिखाई दिए। सभी बुद्धिजीवियों को एक-एक झाड़ू दिया गया। वो लोग आसपास थोड़ी दूर पर खड़े हो गए। फिर वहां कुछ पत्रकार आये, उन्होंने कुछ तस्वीरें खीचीं, आपस में थोड़ी देर कुछ बातें हुईं, फिर सभी लोग वहां से अपनी गाड़ियों में बैठ कर चले गए। सब कुछ फिर से पहले की भाँति हो गया। मैं घर लौट आई, पर कुछ समझ नहीं आ रहा था। क्या था वो सब? अगले दिन सुबह का अखबार पढ़ा। लिखा था – 'शहर में कुछ बुद्धिजीवी लोगों ने सफाई अभियान चलाया, जिसमें उन्होंने स्वयं रोड की सफाई की और दूसरों से भी सफाई और स्वच्छता बनाए रखने का अनुरोध किया।' और साथ में एक तस्वीर भी थी, जिसमें वे लोग हाथ में झाडू पकड़े खड़े थे। सफाई, स्वच्छता... तो क्या वो लोग कल शाम सफाई कर रहे थे?

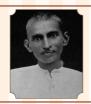
तभी मुझे गाँधी जी की वो कहानी याद आ गयी। 'एक बार एक औरत उनके पास अपने छोटे बच्चे के साथ आई। उसे अपने बच्चे से बहुत गुस्सा था। वह बापू से कहने लगी कि 'बापू मेरा बेटा बहुत ज्यादा गुड़ खाता है। इतना ज्यादा कि इसके दाँत खराब हो गए हैं। आप इसे किहए कि ये गुड़ खाना छोड़ दे।' इस पर बापू ने उस औरत से कहा कि वह एक हफ्ते बाद अपने बेटे के साथ लौटे। वह औरत एक हफ्ते बाद दोबारा लौटी। इस पर बापू ने उसे फिर एक हफ्ते बाद आने की बात कही। ऐसा करीब-करीब तीन बार हुआ। जब चौथी बार वह औरत अपने बच्चे को लेकर आई तो महात्मा गांधी ने उस बच्चे को अपने पास बुलाया।

उस बच्चे को बापू ने बहुत प्यार किया और अपने पास बिठा लिया। बापू ने बच्चे को समझाया कि ज्यादा गुड़ खाना ठीक नहीं, इससे दाँतों में कीड़े पड़ जाते हैं, तुम कम गुड़ खाया करो। इसके बाद बापू ने उस औरत से कहा कि वह अपने बच्चे को ले जाए <mark>। बच्चा</mark> थोड़े दि<mark>नों में गु</mark>ड़ खाना छोड़ देगा ।

इस पर औरत को गुस्सा आया और उसने बापू से कहा कि इतना ही कहना था तो आप यह बात पहली बार में ही कह सकते थे। बेकार में मुझे 4 हफ्तों तक चक्कर कटाए। इस पर बापू ने उस औरत को जवाब दिया - ''बेटा चार हफ्ते पहले मैं भी बहुत गुड़ खाता था... और मैं ऐसे किसी आचरण को व्यवहार में लाने को नहीं कह सकता जिसे मैं खुद व्यवहार में नहीं लाता।" गाँधी जी ने स्वयं शौचालय साफ किया, झाडू लगाया, तब लोगों ने उनका अनुसरण किया। हमारे समाज में बड़े बुद्धिजीवी लोगों के आचरण को देखकर ही जनता उनका अनुसरण करती है। पर आज समाज में जहाँ हाथ में झाडू लिए तस्वीर खिंचवाने को ही स्वच्छता कहा जा रहा है, वैसे समाज में हम आम जनता से क्या उम्मीद कर सकते हैं। ऐसे समाज का बदलाव कैसे हो सकता है जब संदेश देने का तरीका ही सही न हो। अगर हमें समाज में बदलाव लाना है तो हमें गाँधी जी के पद चिह्नों पर चलना होगा। इस संदर्भ में गाँधी जी ने कहा है - "अगर आप दुनिया में बदलाव लाना चाहते हैं, तो पहले स्वयं में वो बदलाव लाएँ, जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।"







सत्य बिना जन समर्थन के भी खड़ा रहता है, वह आत्मनिर्भर है।



प्रकृति की मार में दिखा नई पीढ़ी को प्रकृति का सुन्दर रंग

सन्नी कुमार मिश्रा विद्यार्थी, माध्यम अध्ययन विभाग MGCU2019DOMS4018



कोरोना वायरस के चलते पूरे भारत में लॉक डाउन है और इसी बीच प्रकृति रिकवर मोड में है। नीला आकाश और स्वच्छ हवा सुंदर प्रकृति का एहसास करा रहे हैं। निदयों के जल भी साफ हो चुके हैं। लॉकडाउन का उद्देश्य कुछ और रहा लेकिन इसने अस्थाई तौर पर प्रदूषण को मात दे दी।

लोग अपने घरों में बंद हैं। फैक्ट्रियाँ, मॉल्स, बाजार, यातायात, उड़ाने दफ्तर आदि सब बंद हैं। वाहनों और फैक्ट्रियों से निकलने वाले हैं अपशिष्ट पदार्थ और खतरनाक गैस नाइट्रोजन डाईऑक्साइड मैं भारी मात्रा में कमी आई है। परिणाम यह है कि सभी महानगरों और शहरों में वायु की गुणवत्ता में काफी सुधार आया है। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार भारत के कई शहरों में वायु की गुणवत्ता अच्छी तो कुछ शहरों में संतोषजनक है। भारत की राजधानी दिल्ली एनसीआर जहाँ वायु प्रदूषण हमेशा चिंता का विषय बना रहता है। नंबर में प्रदूषण का स्तर इतना ऊपर पहुँच जाता है कि शहर को जहरीली धुंध की चादर ढक लेती है। वायु की गुणवत्ता गंभीर और आपात् स्थिति में पहुँच जाती है। राजधानी गैस चेंबर में बदल जाती है। नतीजन स्कूल-कॉलेज बंद कर दिए जाते हैं। यातायात में ऑड-इवन फार्मूला लागू होता है। इस वर्ष तो आलम यह था शहर में कई जगह ऐसी देखी गई हैं जहाँ पर पैसे लेकर साफ हवा मुहैया करवाई जा रही थी।

सभी अपने घरों में बंद हैं। सड़कों पर शोरगुल शांत है गाड़ियों की लंबी कतारें नहीं दिख रहीं। इसकी वजह से चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई दे रही है। तेंदुए, हाथी और हिरण तक के सड़कों पर दिखने की तस्वीरें सोशल मीडिया पर घूम रही हैं। ऐसा लग रहा है कि जानवरों से जो उनका पुराना आवास छिन गया था, वहाँ वो फिर से वापसी कर रहे हैं। पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि यह एक अच्छी खबर है क्योंकि शहरी केन्द्रों में जंगली जानवरों का नजर आना जारी है। चण्डीगढ़ में एक सड़क पर तेंदुआ घूमता नजर आया। नोएडा के जीआईसी मॉल के पास एक नील गाय को सड़क

पार करते देखा गया। हरिद्वार में सांभर हिरणों को सैर करते देखा गया। गुरुग्राम के लोगों ने एक मार्केट में मोरों को देखा और ऐसे ही मुंबई और अन्य शहरों में भी रिहायशी इलाकों में मोर और अन्य दुर्लभ हो चुके पिक्षयों के आने की तस्वीरें सामने आ रही है। प्रवासी मजदूर कोरोना वायरस के चलते शहरों से गाँवों की तरफ पलायन कर रहे हैं और जंगल के शरणार्थी शहरों की तरफ आ रहे हैं।

लॉकडाउन के चलते शहर खुद-ब-खुद ग्रीन जोन में आ गए हैं। ऐसा शायद पहली बार हुआ है कि पंजाब के जालन्धर शहर से नंगी आंखों से हिमाचल प्रदेश की धौलाधार पर्वत शृंखला देखी जा सकती है। यह पर्वत शृंखला हिमाचल के कांगड़ा और मंडी जिले के बीच फैली है। जालन्धर शहर में रहने वाले लोग खुद हैरान हैं कि जिन पहाड़ों को देखने के लिए टूरिस्ट दूर-दूर से आते हैं, हर साल लोग गर्मियों में धर्मशाला जाते हैं, वह पर्वतमाला घरों की छतों से साफ दिखाई दे रही है। प्रदूषण की मार झेल रही वर्तमान पीढ़ी के लिए यह सुखद अनुभूति से कम नहीं है।

उधर सरकार के तमाम प्रयासों और योजनाओं के बावजूद जिस गंगा नदी का पानी साफ नहीं हो रहा था उसमें चामत्कारिक बदलाव देखने को मिले है, अब पानी बहुत हद तक साफ हो गया। यही हाल यमुना और सरयू नदी का भी है। यमुना का काला पानी ऐसा हो चुका है कि उसके सफाई हेतु काम करने वाले कुछ मजदूरों का कहना था जब उन्हें काम करते वक्त प्यास लगती है तो अभी यमुना से ही पानी पी लेते हैं। अयोध्या में सरयू का मटमैला पानी भी सवच्छ और साफ हो गया है। नई पीढ़ी को प्रगति का महत्त्व समझ आ रहा। उन्हें अब मालूम चला कि स्वच्छ वातावरण, ताजी और साफ हवा के लिए पार्कों और शहर से दूर नहीं जाना पड़ता। अब नीले आसमान और स्वच्छ हवा को महसूस कर सभी सोच रहे हैं कि काश! ऐसा हमेशा के लिए हो जाए। ऐसी कल्पना करना भी अब असम्भव है।

आसमान और हवा भले ही साफ है लेकिन मानवता का हाल बहुत बुरा है। लोग लगातार मर रहे हैं, संक्रमित मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। समाज की विकृतियाँ सामने आ रही हैं। लोग अभी भी लगातार हिन्दू-मुस्लिम की राजनीति कर रहे हैं और इंसानियत को नुकसान पहुँचा रहे।





हमेशा अपने विचारों, शब्दों और कर्म के पूर्ण सामंजस्य का लक्ष्य रखें, हमेशा अपने विचारों को शुद्ध करने का लक्ष्य रखें और सब कुछ ठीक हो जाएगा। - महात्मा गाँधी



गाँधी, चम्पारण और स्वतंत्रता

अरुण कुमार शर्मा आन्दोलन एम.फिल. शोधार्थी



पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान MGCU2019LISC5001

महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्तूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। लंदन से वकालत की पढ़ाई पूरी करने के बाद वापस भारत आये। भारतीय मूल के व्यापारी अब्दुल्ला के मुकदमे के सिलसिले में वे दक्षिण अफ्रीका गए। दक्षिण अफ्रीका में 7 जून 1893 को वैध फस्ट क्लास यात्रा टिकट के बाबजूद उन्हें रेल से उतार दिया गया। इस घटना ने उनके जीवन पर बहुत प्रभाव डाला और वे दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर हो रहे नस्लीय भेदभाव को समाप्त करने के लिए कूद पड़े। दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी ने फीनिक्स फार्म (आश्रम) की स्थापना की। मदनलाल गाँधी द्वारा सुझाए गए लड़ाई के नए अस्त्र 'सद्आग्रह' में थोड़ा सुधार करके 'सत्याग्रह' नामक नए अस्त्र का सुजन किया जो अन्यायपूर्ण लड़ाई का एक नया हथियार बन गया। गाँधी जी 1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष करते रहे और सफलता पाई।

वर्ष 1915 में भारत वापस आने के बाद अपने राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले की सलाह पर गाँधी जी सम्पूर्ण भारत की यात्रा पर भारत के लोगों को जानने के लिए निकले। इस दौरान लाखों भारतीयों की असहाय दयनीय स्थिति को जाना एवं किसानों व्यवसायियों कृटीर उद्योगों की समस्याओं को समझा।

गाँधी जी के आगमन के समय तक भारतीय स्वतंत्रता का आन्दोलन जाग्रत हो चुका था। चम्पारण की स्थिति नील के खेती के कारण चर्चा में थी क्योंकि यूरोप में वस्त्रों की रंगाई के लिए नील चम्पारण, बंगाल तथा अन्य स्थानों से जाती थी। चम्पारण में नील किसानों, जिन्हें नीलहा कहा जाता था, का मामला 19वीं सदी से ही चला आ रहा था उन्हें अपनी जमीन पर तिनकठिया पद्धति के अन्तर्गत 3/20 भाग पर किसानों को अनिवार्य रूप से खेती करनी पड़ती थी। उसके अलावा अन्य करों के कारण उनकी हालत अत्यंत ही दयनीय थी। किसानों के उस दयनीय स्थिति को वहीं के एक समृद्ध किसान राजकुमार शुक्ला से सहन नहीं हुआ और उन्होंने

गाँधी जी से मिलकर किसानों की समस्या को बताया तथा उनसे चम्पारण आने का आगृह किया। अंततः गाँधी जी कलकत्ता से लौटने के क्रम में 15 अप्रैल 1917 को चम्पारण की धरती पर गाँधी जी का पदार्पण हुआ। मोतिहारी रेलवे स्टेशन पर बड़ी संख्या में किसानों ने गाँधी जी का स्वागत किया। पुलिस कमिश्नर (सुपरिंटेंडेंट) के आदेश को गाँधी जी ने मानने से इनकार कर दिया और अहिंसक प्रतिरोध (सत्याग्रह) को अपनाया। अंततः ब्रिटिश सरकार को झुकना पड़ा और किसानों की समस्याओं को जानने के लिए बनाए गए आयोग में गाँधी जी को भी सदस्य बनाना पड़ा। अंत में कानून बनाकर सभी गलत करो को समाप्त किया गया जिसके बाद किसानों को उनकी जमीन वापस मिली।

गाँधी जी को भारत में पहली राजनीतिक सफलता 1917 में चम्पारण आन्दोलन में मिली। चम्पारण की सफलता के बाद गाँधी जी देश भर में किसानों की उम्मीद बन गए तथा पीडित एवं शोषित किसान उनकी तरफ हिकारत भरी नजरों से देखने लगे कि उनकी समस्या के समाधान का एक साधक मिल गया है। सत्याग्रह के रूप में एक ऐसा अस्त्र मिला, जिसका प्रयोग वे जीवनपर्यन्त अहिंसा और सत्य के सहारे करते रहे तथा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में हिंसक सत्ता के विरुद्ध किया और विजय पाई। चम्पारण के बाद के वर्षों में इन्हीं अस्त्रों का प्रयोग गाँधी जी ने ब्रिटिश राज के खिलाफ किया। चाहे वह खेड़ा में अनावृष्टि के कारण किसानों के पक्ष में खड़े होकर 'कर न दो आन्दोलन' (No Tax campaign) का आरंभ और अंततः किसानों व सरकार के बीच समझौता का होना।

अगली कड़ी में अहमदाबाद के मिल मजदूरों के लिए आमरण अनशन द्वारा मजदूरों की वेतन वृद्धि को प्राप्त करना। सत्याग्रह का यह प्रयोग सीमित होते हुए भी व्यापक असरदार था और गाँधी जी राष्ट्रीय पृष्ठभूमि में छाए जा रहे थे। गाँधी जी अब वकील न होकर एक सत्याग्रही के रूप में सरकार से लंड रहे थे तथा उसकी अन्यायपूर्ण नीतियों का जमकर विरोध भी कर रहे थे, चाहे वह रॉलेट एक्ट, जालियाँवाला बाग हत्याकांड 1919 की नृशंस हत्या हो। गांधी जी ने उस हत्याकांड के विरोध में तथा भारतीयों के प्रति बिटिश राज द्वारा दमन कार्य नीतियों के खिलाफ बिटिश ताज द्वारा दिया गया 'कैंसर-ए-हिन्द' को लौटा दिया। खलीफा की स्थापना के लिए खिलाफत आन्दोलन या असहयोग आंदोलन (1921) जिसकी





आप मानवता में विश्वास मत खोइए। मानवता सागर की तरह है अगर सागर की कुछ बूँदें गन्दी हैं, तो सागर गन्दा नहीं हो जाता।





शुरूआत स्वदेशी अपनाने, स्वदेशी उद्योगों की स्थापना, शिक्षण संस्थाओं तथा सरकार से असहयोगात्मक रवैया अपनाकर सरकार को झुकने को मजबूर करना, गाँधी जी का राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण कदम था। स्वतंत्रता आन्दोलन के अन्य पड़ावों में यथा साइमन कमीशन (1927) का बहिष्कार, सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930), दिलतों के उद्धार के लिए किए गए कार्य, गोलमेल सम्मेलन में भाग लेना, क्रिप्स प्रस्ताव, भारत छोडो आन्दोलन (1942) आदि की रूपरेखा तथा एक जनान्दोलन बनाकर ब्रिटिश हुकूमत को अंततः भारत छोड़ने पर मजबूर करना गाँधी जी के सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह (Passive Resistance) की ही जीत थी। चाहे वह जिन्ना की Two Nation Theory का विरोध हो या विभाजन से उपजे साम्प्रदायिक दंगे में जलता देश। गाँधी जी आजादी के दिन 15 अगस्त 1947 को अपनी अहिंसावादी नीति से साम्प्रदायिकता रूपी दंगे को शांत करने के लिए कलकत्ता में थे। तभी तो महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टीन ने कहा - 'आनेवाली पीढ़ियाँ शायद ही यह विश्वास करे की हाड मांस का बना कोई व्यक्ति गाँधी था।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में अप्रतिम योगदान के कारण ही भारतीय उन्हें महात्मा, राष्ट्रिपता तथा बापू के नामों से पुकारते हैं। अहिंसा का पालन ही गाँधी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजिल है। चम्पारण में गाँधी जी की यह पहली जीत थी जिसमें उन्होंने सत्याग्रह और अहिंसा को प्रयोग किया। बाद में यही सत्याग्रह भारतीय राष्ट्रीय आनदोलन का मूल मंत्र बना। चम्पारण के बाद खेडा, अहमदाबाद, रौलेट एक्ट, असहयोग आन्दोलन, साइमन बहिष्कार, सिवनय अवज्ञा, नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आन्दोलन और अन्ततः भारत की आजादी और विभाजन के उपरांत हुए दंगों में भी गाँधी जी ने उसी मंत्र का सफल प्रयोग किया एवं हिंसा पर विजय पायी। गाँधी जी द्वारा प्रयोग में लाए गए सत्याग्रह और अहिंसा आज के वैश्विक परिदृश्य में प्रासंगिक हैं।





राज पाण्डेय स्नातक (प्रमिष्ठा) अंग्रेजी, तृतीय वर्ष MGCU2017ENGL3014



एक कविता को ढूँढ़ रहा हूँ मैं शायद किसी ने लिखी नहीं जिसे या मैंने पढ़ी नहीं कहीं सबने इतिहास पढ़ा इतिहास लिखा शायद मैं भी लिख रहा हूँ वही

जहाँ कोई बड़ा कोई छोटा है कोई अगड़ा कोई पिछड़ा है कोई हिन्दू कोई मुस्लिम है कोई श्वेत कोई काला है कोई ब्राह्मण तो कोई शूद्र है

सबके अपने आदर्श हैं
अलग अलग आदर्श
इन आदर्शों के अलग-अलग
हैं पंडित मौलवी ज्ञानी
जो आए हैं अनेकों युग में
दिए हैं अनेकों ज्ञान
जिनके बड़े होने की प्रतिस्पर्धा
में न जाने कितनी अनहोनी हुई

में इस कविता से उस कविता को ढूँढ़ता हुआ किसी आदर्श का अनुचर जहाँ कवि इन सब से परे ढूँढ़ रहा है सत्य और असत्य की परिभाषा धर्म और अधर्म के बीच का अंतर इनसान और इनसानियत ।।





गर्व लक्ष्य को पाने के लिए किये गए प्रयत्न में निहित है, ना कि उसे पाने में।



गाँधी स्वच्छता और स्वच्छ भारत अभियान

शम्भु राज उपाध्याय शोधार्थी पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान MGCU2019LISC6003



एक पुरानी कहावत है 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।' स्वस्थता का संबंध साफ-सफाई से है। यह आंतरिक और बाह्य दो प्रकार की होती है। आंतरिक स्वच्छता का संबंध व्यक्ति के आध्यात्मिक तथा मानसिक आचार-व्यवहार से है। बाहरी स्वच्छता का संबंध घर-द्वार, पास-पडोस तथा पर्यावरण के प्रति हमारी स्वच्छ जिम्मेदारी से भी है कि हम जिस वातावरण में निवास करते हैं उसे कैसे स्वच्छ एवं मानव के निवास योग्य रखें। आज स्वच्छता व्यक्तिगत स्तर से सामाजिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बना हुआ है। महात्मा गाँधी के लिए स्वच्छता हमेशा से महत्त्वपूर्ण मुद्दा रहा है। चाहे वह दक्षिण अफ्रीका का प्रवास रहा हो या भारत। वापस लौटने तक पूरे जीवनपर्यन्त वे स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करते रहे तथा साफ-सफाई पर बल देते रहे। ब्रिटिश सरकार ने 1895 में दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों तथा एशियाई व्यापारियों से उनके स्थानों को गंदा रखने के आधार भेदभाव की नीति अपनाई। इस पर गांधी जी ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान स्पष्ट कहा 'स्वतंत्रता से अधिक महत्त्वपूर्ण स्वच्छता है।'

दक्षिण अफ्रीका से वापस भारत लौटने पर गांधी जी अपने राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले की सलाह पर पूरे भारत का दौर किया। इस दौरान वे उस समय के प्रमुख शहरों, धार्मिक स्थलों आदि की यात्रा की और पाया कि लोग स्वच्छता एवं सफाई के प्रति उदासीन हैं। उन्होंने स्पष्ट 'यंग इंडिया' में 3 फरवरी 1927 को बिहार के पवित्र शहर गया की गंदगी के बारे में लिखा कि उनकी हिन्दू आत्मा गया के गंदे नालों में फैली गंदगी और बदबू के खिलाफ बगावत करती है। अपनी भारत यात्रा के दौरान तृतीय श्रेणी के रेलवे डिब्बे में गंदगी की स्थिति देखकर गाँधी जी ने 25 सितम्बर 1917 को सबका ध्यान आकृष्ट करते हुए लिखा कि उस तरह की संकट की स्थिति में तो यात्री परिवहन को बंद कर लेना चाहिए क्योंकि जिस तरह की गंदगी और स्थिति उन डिब्बों में थी उसे जारी नहीं रहने दिया जा सकता, क्योंकि वह हमारे स्वास्थ्य और नैतिकता को प्रभावित करती है। (गाँधी वाङ्मय, भाग-13, पृष्ठ 222)

भारतीय रेलवे में गंदगी का आलम खासकर पैसेन्जर ट्रेनों में कमोवेश यही है। अपितु विगत कुछ वर्षों में भारतीय रेलवे ने स्वच्छता को अपने कार्यों में सर्वोपिर रखा है और सुधार भी दृष्टिगोचर होने लगा है। गाँधी जी के विचार में नगरपालिका का सफाई में महत्त्वपूर्ण योगदान है तथा वे पश्चिमी देशों की नगरपालिका के स्वच्छता संबंधी कार्यों की सराहना भी करते थे।

पंचायतों के कार्यों के संबंध में उनका विचार स्पष्ट था। भारत चूँकि गाँवों का देश है उनका कहना था कि गाँव में रहने वाले प्रत्येक बच्चे, पुरुष, स्त्री की प्राथमिक शिक्षा के लिए घर-घर में चरखा संगठित रूप से सफाई और स्वच्छता के लिए पंचायत की जिम्मेदारी होनी चाहिए। (गाँधी वाङ्मय, भाग-19, पृष्ठ 217)

गाँधी जी का मिलन बस्तियों में रहने वाले सफाई कर्मियों के प्रिति सम्मान का भाव था। वे कई अवसरों पर उन बस्तियों में गए और उन्हें सम्मान दिया। सरकार के अथक प्रयासों से गंदगी को सर पर ढोने की प्रथा तो समाप्त हो गई लेकिन फिर भी अभी बहुत कार्य बाकी है। हमारे शहरों में औद्योगिक इकाइयों द्वारा बिना शोधित अपशिष्ट पदार्थों का खुले या निदयों में निस्तारण जिसका परिणाम वायरस भी वृद्धि हमारी जलीय जीवों के लिए संकट पैदा करता है। चाहे वह कानपुर का चमड़े का अपशिष्ट हो या आगरा बनारस का नगरीय अपशिष्ट।

गाँधी जी कहते हैं कि आरोग्य के लिए स्वच्छता जरूरी है। वे स्वयं अपना शौचालय साफ करते थे तथा इस नियम को साबरमती और वर्धा आश्रम में पूरी तरीके से लागू किया। इतना ही नहीं वर्षों बाद कांग्रेस के स्वयंसेवकों ने सफाई दस्ते बनाना शुरू किया और लोगों को सफाई के प्रति जागृत किया। लोक सेवक संघ के कार्यकत्ताओं के संबंध में गांधी जी ने लिखा था- 'कार्यकर्त्ता को गाँव की स्वच्छता और सफाई के बारे में जागरूक करना चाहिए और गाँव में फैलने वाली बीमारियों को रोकने हेतु सभी जरूरी कदम उठाने चाहिए।' (गाँधी वाङ्मय, भाग-90, पृष्ठ 528)

वर्तमान नीत भारत सरकार के अथक प्रयास से 2 अक्तूबर 2014 को गांधी जी के जन्म दिवस पर भारत के प्रधानमंत्री द्वारा मिशन आधारित 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरूआत राजधाट से की गई। इस अभियान का लक्ष्य खुले में शौच से मुक्ति, ठोस कचरा प्रबंधन तथा लोगों को सफाई के प्रति दायित्व एवं आचरण को व्यवहत करना है। प्रधानमंत्री ने इस संदर्भ में गाँधी जी की ऐतिहासिक





आँख के बदले में आँख पूरे विश्व को अंधा बना देगी।



चम्पारण यात्रा एवं सत्याग्रह को लेकर नया नारा दिया 'सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह'। इस अभियान को जनान्दोलन बनाने का लक्ष्य इस प्रकार निर्धारित किया गया कि स्वयं प्रधानमंत्री ने नई दिल्ली में झाडू लगाकर इसकी महत्ता को बताया अपितु प्रत्येक जनप्रतिनिधि एवं जनता ने इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा गाँधी जी के स्वप्न गंदगी मुक्त भारत एवं स्वस्थ भारत की दिशा में प्रगतिशील कदम बढ़ाया जिसकी बानगी हमें सार्वजनिक स्थानों तथा छोटे-छोटे बच्चों में स्वच्छता के प्रति दिखती है। गाँधी जी के प्रति सच्ची विनम्र श्रद्धांजलि यही है कि हम उनके सपनों का स्वच्छ भारत का निर्माण करें।

भारत में गाँधी जी का पहला स्वच्छता संबंधी सार्वजनिक भाषण 14 फरवरी 1916 में मिशनरी सम्मेलन के दौरान दिया था। उन्होंने कहा था- 'देशी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा की सभी शाखाओं में जो निर्देश दिए गए हैं, मैं स्पष्ट कहूँगा कि उन्हें आश्चर्यजनक रूप से समूह कहा जा सकता है। गाँव की स्वच्छता के सवाल को बहुत पहले हल कर दिया जाना चाहिए। (गाँधी वाङ्मय, भाग-13, पृष्ठ 222)

सन् 1917 में नील की खेती करने वाले किसानों की समस्याओं के समाधान हेतु जब चम्पारण गए तब जाँच-दल के रूप में तैनात एक गोपनीय पत्र में उन्होंने स्वच्छता की महत्ता को स्वीकार किया था तथा यह चाहते थे कि अंग्रेज प्रशासन उनके कार्यकर्ताओं को स्वीकार करें, तािक वे समाज में शिक्षा और सफाई के कार्यों की शुरूआत कर सके। उन्होंने कहा कि वे गाँवों में रहते हैं इसिलए वे गाँव के लड़कों और लड़कियों को सिखा सकते हैं और वे स्वच्छता के बारे में उन्हें जानकारी भी दे सकते हैं। (गाँधी वाङ्मय, भाग-13, पृष्ठ 393)

यद्यपि कानून द्वारा कुछ हद तक समस्या को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। पंचायतों को व्यापक अधिकार दिए गए हैं तथा गाँवों को खुले में शौच से मुक्ति का अभियान चला है। स्वच्छता अभियान में जनभागीदारी आवश्यक है और इस अभियान में हम सभी एक दिन निश्चित ही सफल होंगे तथा हमारा मंत्र 'हम होंगे कामयाब एक दिन' अवश्य सफल होगा। हमें स्वच्छता को अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ ही साथ सार्वजनिक जीवन में अपने आस-पास गलियों कार्य-स्थलों तथा परिसरों की सफाई को दिनचर्या में शामिल कर गाँधी जी के सपनों का भारत स्वच्छता अभियान को अपनाकर पूरा कर सकते हैं और महात्मा गाँधी जी इस मामले में हमारे पथ-प्रदंशक हो सकते हैं।

गुमनाम सितारा

ऋचा पुष्कर परास्नातक हिन्दी, प्रथम वर्ष MGCU2019HIND4009



मेरा नाम भी गुमनाम होता अगर मैं भी उनकी तरह चुपचाप बैठा होता पर अफसोस, मेरा नाम हुआ क्योंकि हम उन लोगों में से नहीं थे जो चूपचाप बैठ जाते आज तो जमाने ने रोक रखा है वरना हम भी उन लोगों में शमार होते ख्वाहिश थी कि चाँद बनूँ, पर सितारों से ही काम चलाना पडा रोशनी कम थी मेरी पर बेदाग मेरा दामन रहा हम भी ख्वाहिशों की बाढ में बह लेते आज तो जमाने ने रोक रखा है वरना हम भी चाँद बनकर दुनिया में शुमार होते।







शांति का कोई रास्ता नहीं है, केवल शांति है।

एक औरत है वो





- 1. एक औरत है वो
 सहनशील है वो
 क्षमाशील है वो
 जननी है वो भिगनी है वो
 हर पल एक नई
 भूमिका अपनाती है वो
 पूजनीय नारी है वो
 जीवन के हर मोड़ पर साथ देती
 आदर्श पत्नी है वो
 शिंक है वो, प्रेरणा है वो
 सृष्टि की रचनाकार है वो
 क्योंकि खुद में ही सम्पूर्ण नारी है वो।
- 2. प्रेम ऐसा हो ना भय हो ना तमाशा हो ना दिखावा हो ना निराशा हो दो दिलों का जब चाहें मिलन हो प्रेम ऐसा हो एक परिभाषा हो मिलने की आशा हो बिन बोले सब कह डाले एक ऐसी ही भाषा हो
- 3. हिंदी हूँ मैं मातृभाषा तुम्हारी हूँ तुम्हारी जीवन आशा तुम्हारी। भारत की भाषा हूँ मैं भारत की जिज्ञासा हूँ मैं भारत की पहचान का माध्यम हूँ मैं भारत की आन बान शान हूँ मैं। हिंदी हूँ मैं मातृभाषा तुम्हारी

हूँ तुम्हारी जीवन आशा तुम्हारी देवनागरी लिपि हमारी व्याकरण हमारा उच्चारण हमारा और अक्षर हमारा। हिंदी हूँ मैं मातृभाषा तुम्हारी हूँ तुम्हारी जीवन आशा तुम्हारी।

अबला नहीं 4. नारी हूँ मैं, दुर्गा का स्वरूप हूँ मैं ममता की छाँव हूँ मैं मां-बाप की शान हूँ मैं बेटी हूँ मैं पापा की प्यारी हूँ मैं माता की दुलारी हूँ मैं अबला नहीं नारी हूँ मैं। फिर क्यों जन्म से पहले मार दी जाती हूँ मैं? मा, बहन, बेटी और पत्नी भी हूँ मैं फिर क्यों संसार में बलात्कारियों के सर चढ़ी जाती हूँ मैं? अबला नहीं नारी हूँ मैं। जननी हूँ मैं न जाने कितने युगों से पीड़ित हूँ मैं फिर भी जीवित हूँ मैं क्योंकि जीवन का आधार हूँ मैं? अबला नहीं नारी हूँ मैं।







पाप से घृणा करो, पापी से प्रेम करो। - महात्मा गाँधी



नई शिक्षा नीति का भविष्यः चुनौतियाँ, संभावनाएँ और आशंकाएँ

एम.फिल. शोधार्थी राजनीतिक विज्ञान विभाग MGCU2019POLS5001



शिक्षा व्यवस्था किसी भी देश की संपूर्ण व्यवस्था की आधारशिला व निर्माता होती है क्योंकि यह नागरिक समाज की एक महत्त्वपूर्ण संस्था है जो सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक मूल्यों को ना सिर्फ विकसित करती है बल्कि उन मूल्यों को मान्यता दिलाती है! यह सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में स्थायित्व को सुनिश्चित करती है और इसलिए किसी भी देश के लिए एक सशक्त और व्यावहारिक शिक्षा नीति का होना अति आवश्यक है। क्योंकि यह शिक्षा नीति संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था को एक आधारभूत ढाँचा प्रदान करती है, संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का मार्गदर्शन करती है, बदलते वक्त की जरूरतों को पूरा करती है, शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाती है व उसमें नवीनीकरण लाती है एवं शोध को बढ़ावा देती है और किसी भी देश को ज्ञान का सुपर पावर बना सकती है।

भारत में नई शिक्षा नीति का प्रारूप 1986 में तैयार किया गया था और 1992 में इसमें आवश्यकता अनुसार कुछ परिवर्तन किए गए! उसके पश्चात 21वीं सदी में सर्वप्रथम वर्तमान सरकार ने भारत के लिए नई शिक्षा नीति के निर्माण के लिए 31 अक्तूबर 2015 को पूर्व कैबिनेट सचिव टीएसआर सुब्रमण्यम की अध्यक्षता में 5 सदस्यीय समिति बनाई। समिति ने अपनी रिपोर्ट 27 मई 2016 को सरकार को सौंपी जिसे सरकार ने अस्वीकार कर दिया! उसके पश्चात सरकार ने 24 जून 2017 को इसरो के प्रमुख वैज्ञानिक कस्तूरींगन की अध्यक्षता में 9 सदस्य समिति को नई शिक्षा नीति का प्रारूप तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी जिसने अपनी रिपोर्ट 31 मई 2019 को मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल 'निःशंक' को सौंपी! इसके पश्चात् सरकार ने लोगों से सुझाव मांगे, जिस पर 2 लाख से अधिक लोगों ने अपने सुझाव दिए और अंततः 29 जुलाई को केंद्रीय कैबिनेट ने इस नई शिक्षा नीति को स्वीकार किया! अंततः इस आलेख के माध्यम से भारत की नई शिक्षा नीति के विभिन्न आयामों को समझने का प्रयास किया जाएगा।

नई <mark>शिक्षा नीति 2</mark>02<mark>0 के महत्त्वपूर्ण पक्ष</mark> -

यह शिक्षा नीति 21वीं शताब्दी की प्रथम और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शिक्षा नीति है जो इस आधुनिक दौर के अनुरूप भारत की शिक्षा-व्यवस्था का मार्गदर्शन करेगी। यह नीति 2030 के सतत विकास के एजेंडे से जुड़ी है जिसके प्रमुख स्तंभ है पहुँच, क्षमता, गुणवत्ता, वहनिता और जवाबदेही है।

नई शिक्षा नीति के अनुसार स्कूली शिक्षा में प्राथमिक से लेकर माध्यमिक स्तर की शिक्षा तक सार्वजनिक पहुँच सुनिश्चित की जाएगी, स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की वापसी हेतु अब संरचनात्मक सहयोग और नवाचार युक्त शैक्षणिक केंद्रों की व्यवस्था होगी, 2 करोड़ बच्चों को मुख्य धारा में वापस लाने का लक्ष्य है, शिक्षा के औपचारिक और अनौपचारिक मोड अपनाए जाएंगे, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग और राज्यों के ओपन स्कूलों के जरिए तीसरी, पाँचवीं और आठवीं के लिए ओपन लर्निंग की व्यवस्था की जाएगी 10+2 के स्थान पर 5+3+3+4 की स्कूली व्यवस्था होगी जिसमें 3-8, 8-11, 11-14, 14-18 वर्ष तक के बच्चों के लिया शिक्षा होगी, एनसीईआरटी 8 वर्ष तक के बच्चों के लिए नेशनल करिकलर एंड पेडागोजिकल फ्रेमवर्क फॉर अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन (एनसीपीएफईसीसीई) विकसित करेगा, दसवीं का बारहवीं की बोर्ड परीक्षा ऑब्जेक्टिव और सब्जेक्ट फॉर्मेट में वर्ष में दो बार होंगी, बोर्ड की परीक्षाओं की अहमियत घटाई जाएगी, पाँचवी तक की और संभव हो तो आठवीं तक की शिक्षा मातृभाषा, स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा में होगी, त्रिभाषा फार्मूला में कम से कम दो भाषाएँ भारतीय होंगी, स्कूलों के सिलेबस में बदलाव किया जाएगा, कक्षा 6 से ही बच्चों को वोकेशनल कोर्स पढ़ाए जाएँगे, 3 से 6 साल के बच्चों को खेल के तरीकों से सिखाया जाएगा और कक्षा एक से तीन तक के बच्चों को यानी 6 से 9 साल के बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखाया जाएगा, 9वीं कक्षा से बच्चों को अपने मनचाहे विषय चुनने व पढ़ने का अधिकार दिया जाएगा जिससे बच्चे अपनी आवश्यकता अनुसार 11वीं व ग्रेजुएशन में अपने विषय बदल सकेंगे, मल्टीडिसीप्लिनरी एजुकेशन सिस्टम होगा कोई स्ट्रीम नहीं होगी अपनी इच्छा अनुसार विद्यार्थी कोई भी विषय पढ़ सकेगा जैसे संस्कृत के साथ बायोलॉजी पढ़ी जा सकेगी, 2020 तक स्कूल से दूर रह रहे लगभग 2 करोड़ बच्चों को मुख्य धारा में वापस लाने का लक्ष्य है, बच्चों के रिपोर्ट कार्ड में मूल्यांकन सिर्फ टीचर ही नहीं लिख पाएँगे एक कॉलम में बच्चा खुद मूल्यांकन करेगा और एक में उसके सहपाठी मूल्यांकन करेंगें, बच्चों के लिए मिड डे मील के साथ सुबह के नाश्ते की व्यवस्था भी स्कूलों में की जाएगी, एनसीईआरटी की सलाह से एनसीटीई टीचर्स ट्रेनिंग के लिए एक नया सिलेबस एनसीएफटीई 2021 तैयार करेगा, 2030 तक शिक्षण कार्य करने के लिए कम से कम योग्यता 4 वर्षीय इंटीग्रेटेड बीएड डिग्री हो जाएगी, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय प्रोफेशनल मानक (एनपीएसटी) 2022 तक विकसित किया जाएगा, स्कूल के बाद कॉलेज में दाखिले के लिए एक कॉमन एंट्रेंस एग्जाम हो इसके लिए नेशनल एसेसमेंट सेंटर बनाए जाएंगे।

नई शिक्षा नीति के <mark>अनुसार</mark> देश के सभी विश्वविद्यालयों का

समान पाठ्यक्रम, कॉमन पेपर होगा, एक समय सभी विश्वविद्यालयों परीक्षा होगी, वर्तमान पाठ्यक्रम को भी बदल दिया जाएगा, दो प्रकार की ग्रेजुएशन होगी जिसमें जॉब करने वाले 3 वर्ष की व शोध करने वाले छात्र 4 वर्ष की ग्रेजुएशन करेंगे जिसके पश्चात 1 वर्ष का मास्टर और 4 वर्ष की पीएच.डी. होगी, मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया जाएगा. आईआईटी और आईआईएम की तरह मल्टीडिसीप्लिनरी एजुकेशन एंड रिसर्च यूनिवर्सिटी (एमईआरयू) की स्थापना होगी, उच्च शिक्षा में 3.5 करोड़ सीटें जोड़ी जाएंगी, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शोध संस्कृति और शोध क्षमता को निर्मित करने के लिए राष्ट्रीय शोध फाउंडेशन का गठन किया जाएगा, संपूर्ण उच्च शिक्षा के लिए भारत का उच्चतर शिक्षा आयोग सर्वोच्च निकाय होगा। इसमें मेडिकल और कानुनी शिक्षा को शामिल नहीं किया जाएगा, ग्रॉस इनरोलमेंट जो 2018 में 26.3 प्रतिशत था उसे 2035 तक 50 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा गया है, स्टैंडर्ड सेटिंग निकाय के तौर पर नेशनल एसेसमेंट सेंटर और परख की स्थापना होगी, डिजिटल लर्निंग के मद्देनजर नेशनल एजुकेशन टेक्नोलॉजी फोरम (एनईटीएफ) का गठन होगा! पाली, फारसी और प्राकृत जैसी देशी भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना होगी, देशभर की हर यूनिवर्सिटी के लिए शिक्षा के मानक एक समान होंगे यानी सेंट्रल युनिवर्सिटी हो या स्टेट युनिवर्सिटी या डीम्ड यूनिवर्सिटी सबका स्टैंडर्ड एक जैसा होगा, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ ट्रांसलेशन एंड इंटरप्रिटेशन की भी की स्थापना जाएगी। नई शिक्षा नीति के विपक्ष में तर्क और भविष्य की आशंकाएँ -

- 1. यह शिक्षा-व्यवस्था केवल आर्थिक रूप से संपन्न वर्ग को लाभान्वित करेगी ना कि पिछड़े, दलित, आदिवासी और महिला वर्ग को।
- 2. यह नीति शिक्षा के निजीकरण को बढ़ावा देगी जो संवैधानिक मूल्यों के विरुद्ध है।
- 3. इस नई व्यवस्था में शिक्षकों व कर्मचारियों के शोषण को रोकने संबंधी कोई प्रावधान नहीं है।
- 4. यह नई शिक्षा व्यवस्था भारत की संघीय व्यवस्था के भी अनुकूल नहीं है क्योंकि इसमें शिक्षा के केंद्रीकरण को बढ़ाकर राज्यों की भूमिका को कम किया गया है!
- 5. यह शिक्षा व्यवस्था आधुनिक वैश्वीकरण के युग के अनुकूल भी नहीं है क्योंकि यह व्यवस्था मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को

प्राथमिकता दे रही है! जबिक आज किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए अंग्रेजी मूलभूत आवश्यकता बन चुकी है साथ ही भारत जैसे बहुत सांस्कृतिक व बहुभाषी देश में इस प्रकार की व्यवस्था को स्थापित करना ना तो आसान है और ना ही आवश्यक!

- 6. इस नीति में शिक्षा पर जीडीपी का 6 प्रतिशत खर्च करने की बात कही गई है लेकिन अगर ऐसा नहीं किया जाता है जो की आज तक संभव नहीं हुआ है तो यह नीति मात्र नीति बनकर रह जाएगी।
- 7. आलोचकों का तर्क है की यह नई शिक्षा नीति विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में अपने मापदंडों पर काम करने की अनुमित देकर शिक्षा के क्षेत्र में एफ.डी.आई. को अनुमित दे रही है। 8. यह नीति शिक्षा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी के प्रयोग पर भी अत्यधिक जोर दे रहा है जिस कारण पिछड़े, गरीब और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों के शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ने की संभावना बढ़ जाएगी। 9. सरकार शिक्षा के क्षेत्र में सार्वजिनक-निजी भागीदारी को बढ़ाकर विश्वविद्यालयों को अपने स्वयं के संसाधनों को उत्पन्न करने के लिए मजबूर करेगी जो केवल छात्रों की फीस बढ़ाकर ही संभव है, इससे छात्रों पर फीस का बोझ बढ़ेगा और निम्न तबके के छात्र उच्च शिक्षा से दूर हो जाएंगे।

शिक्षा नीति किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था की निर्देशिका व मार्गदर्शिका होती है जिसे परिवर्तित समय की आवश्यकताओं के अनुरूप संशोधित करते रहना अनिवार्य है ताकि उस शिक्षा व्यवस्था की प्रासंगिकता बनी रहे। इसीलिए भारत ने भी 29 जुलाई 2020 को समय की मांग के अनुरूप नई शिक्षा नीति को स्वीकार किया जो सैद्धांतिक रूप से तो अत्यधिक श्रेष्ठ है लेकिन उसकी व्यावहारिकता को लेकर अभी भी आशंकाएँ हैं। जिस कारण आलोचकों ने उस इसकी कड़ी आलोचना भी की है। लेकिन अगर आलोचकों के तर्क पर सरकार द्वारा विचार किया जाता है व समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर चला जाता है और इस शिक्षा नीति को पूरी तरह व्यावहारिक रूप से क्रियान्वित किया जाता है तो भारत की शिक्षा व्यवस्था में एक बहुत ही बड़ा सकारात्मक बदलाव किया जा सकेगा।





चिलए सुबह का पहला काम ये करें कि इस दिन के लिए संकल्प करें कि मैं दुनिया में किसी से न डहाँगा, न ही मैं केवल भगवान से डहाँ। मैं किसी के प्रति बुरा भाव ना रखूँ। मैं किसी के अन्याय के समक्ष झुकूँ नहीं। मैं असत्य को सत्य से जीतूँ। और असत्य का विरोध करते हुए,

मैं सभी कष्टों को सह सकूँ।

- महात्मा गाँधी





1-15 सितम्बर 2019











कर्तात्य

डॉ. श्वेता सहायक प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग



मैं खेलता था, कचे कंकड़ से, गाँव की गलियों में, बचपन में झूले झूलते थे हर ऋतु में, माँ का आँचल था कुरान-गीता चाचा की चाय भी याद है, बचपन का वो भोलापन वो चोर-पुलिस का खेल खेलना मदमस्त पवन-सा चंचल मन मेरा बाबा के आम की बिगया में वो चोरी करना।

खट्टे-मीठे बेरों से जेबों को भरना लुक-छुप, लुक-छुप कुएँ पर चंपा, बेला, नैना की हम मटकी तोड़ा करते थे, जब पीछे दौड़ी आती वो, हम गोशाला में छिप कर ठंडी आहें भरते थे।

पापा के साथ, खेत में जाकर अलसी, अरहर छेड़ा करते थे, गेहूँ के बने गल्लों पर हम फिसलन पी की तरह चढ़ते थे अब कहाँ गया वो भोलापन ? किसने छीन लिया मेरा बचपन ?

खेल रहा हूँ, मैं बम, गोलों से घुट-घुट कर जीवन बीत रहा, मैं झूल रहा हूँ दुविधा में अपने देश का आँचल बचा रहा, इस पार मरे या उस पार मरे मरते हैं लाखों यार मेरे लुक-छुप, लुक-छुप कुएँ पर अब ठंडी लाशें मिलती हैं ये नन्हें जो मेरे हाथ थे लाशों की बोरी भरती हैं। यादें अब पीछा करती हैं, मेरे न आने पर आहें भरती हैं।

हर खेत अब सूखा है
लाखों घर अब खंडहर हैं पड़े
हर गाँव में माएँ तड़प रहीं
कितनी माँगें सूनी पड़ी,
इन सूनी-बिखरी माँगों को
ममता की उन छाहों को
बचपन के मेरे जीवन को
गाँवों की गलियों को, चंचल मन को,
कर्त्तव्य ने मुझसे छीन लिया
अब देश ही मेरा सब कुछ है,
कंचों से बहुत अब खेल लिया।



वे भावी मानवता के हैं आदर्श एक, असमर्थ समझने में है उनको वर्तमान, वर्ना सच्चाई और अहिंसा की प्रतिमा यह जाती दुनिया से होकर लहूलुहान !

<mark>- हरिवंशराय</mark> बच्चन







जो भी चाहे अपनी अंतरात्मा की आवाज सुन सकता है। वह सबके भीतर है।



किसानों हेतु एक कदम

अनादि कृष्ण अतुल एम.फिल. शोधार्थी, भौतिकी विभाग MGCU2019PHYS5001



'सर्वे भवंतु सुखिनः' वाक्य प्राचीन काल से ही हमारी परंपरा में शामिल रहा है। हमारा इतिहास साक्षी है कि अनेक बार अनेकानेक आक्रमणकारियों ने यहाँ आक्रमण किया और उन्हें हराकर बंदी बनाकर दंड देने के बजाय माफ कर दिया गया। जब कभी भी हमारे समाज पर, समाज के किसी भी समुदाय पर अथवा किसी व्यक्ति विशेष पर संकट आया है तो, समाज ने समस्या के निराकरण के लिए उसके अनुरूप कदम उठाए हैं। अंग्रेजी हुकूमत से मुक्ति हेतु किए गए अहिंसक प्रयास जैसे सत्याग्रह, असहयोग, सविनय अवज्ञा आदि आंदोलन इसके द्योतक हैं।

गौरतलब है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में चीन की कूटनीतियों के प्रत्युत्तर हेतु स्वेच्छा से चीनी उत्पाद सामग्रियों तथा विभिन्न मोबाइल ऐप बहिष्कार करके हमने अपनी परंपरागत संस्कृति का पालन किया है। आत्मनिर्भर भारत का संकल्प भी किसानों के बिना सम्भव नहीं है। परंतु इसी संस्कृति के संवाहक हमारा समाज अपने किसान समुदाय के उत्थान लिए कोई कदम नहीं उठा रहा है। ये बहुत ही दुखपूर्ण बात हैं, जिसके परिणामस्वरूप यह अन्नदाता समुदाय कृषि-कार्य के प्रति उदासीन है तथा आय बढ़ाने, लागत और समय पर नियंत्रण हेतु जहरीली दवाओं तथा अत्यधिक रासायनिक खाद का प्रयोग कर समाज को जहर खिलाने हेतु विवश हैं। सत्याग्रह के प्रारंभ में गाँधी ने कहा था, 'किसान मौत को हमेशा अपना तिकया बना कर सोने वाली महान प्रजा है। उसने मौत का डर छोड़ दिया है, अर्थातु सबका डर छोड़ दिया है।' उन्होंने यह भी कहा थाः 'हमें आजादी किसानों के बिना नहीं मिल सकती। आजादी वकील, डॉक्टर या संपन्न जमींदारों के बस की बात नहीं है।' उनका यह कथन स्पष्ट करता है कि गाँधी जी का सर्वाधिक विश्वास यहां के किसानों पर ही था। उन्होंने यहां के किसानों और गरीबों को भूखा नंगा देखने के पश्चातु स्वयं भी अपना सूट-बूट त्यागने का निश्चय किया और मात्र एक धोती धारण करके उनका प्रतिनिधि बन गए। परंतु वर्तमान परिदृश<mark>्य</mark> में हमारे प्रतिनिधियों के लिए यह विपरीत दृष्टिगोचर होता है। किसान भले ही मौत से नहीं डरते हो परंतु नाक कटने से डरते हैं। हरिशंकर परसाई जी ने लिखा है - ''छोटे आदमी की नाक बहुत नाजुक होती है। यह छोटा आदमी नाक को छिपाकर क्यों नहीं रखता? बड़े आदमी, जिनकी हैसियत है, इस्पात की नाक लगवा लेते हैं और चमड़े का रंग चढ़वा लेते हैं।" बिटिया बड़ी हो गई है, हाथ पीले करने हैं, जेब में पैसे नहीं है और नाक भी पड़ोसियों और रिश्तेदारों के बीच घूम रहा है। जरा-सा और देर हुई तो न जाने क<mark>ब कौन काटना शुरू कर दे। इसे वापस लाने हेतु साहुकारों</mark> से कर्ज लेकर खर्च करना अनिवार्य है। अभी नाक वापस नहीं आता, यह साहकारों की तिजोरी में कैद हो जाता है। अब इसे वापस लाने के लिए कुछ समय मिल जाता है। कीटों, पतंगों, मौसम, मवेशियों आदि में से किसी एक का भी दृष्टि पड़ी तो फसल खराब हो जाता है। फिर साहूकार प्रतिदिन थोड़ा थोड़ा नाक काटना शुरू करते हैं।

इन परिस्थितियों से छुटकारा पाने हेतु, किसान अपने सुनहरे भविष्य हेतु जिस स्वराज्य के स्थापना के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करना स्वीकार किया। आज उसी स्वराज्य में सौ वर्ष बाद भी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ किसान मौत को गले लगा रहा है। उसे अपने ही किसान स्वराज्य में अपनी ही फसल का उचित मुल्य नहीं मिल पा रहा। जिस जमीन पर वह खेती करते हैं वह भी अपने नाम से नहीं है। भूमि सुधार और राजस्व विभाग के शिथिलता के फलस्वरूप किसान खेती से विवाद की ओर अग्रसर हो गए। आश्चर्य होता है कि बिहार लगान पूर्ण तरह डिजिटल माध्यम से चुकाया जाता है परंतु अब तक भूमि का विवरण अपलोड नहीं हो सका है। जो अनपढ़ किसान 15 रुपये प्रति घंटा के दर से असंगठित क्षेत्र में काम करता है। वह बाबू के दफ्तरों का चक्कर लगाने के लिए पैसे कहाँ से लाए। इस सौ साल में ज्यों-ज्यों महंगाई, लोगों का जीवन-स्तर विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विकास होता गया, किसान उपेक्षित होते चले गए। देश को आधार प्रदान करने वाला किसान आज आधारहीन होकर खैरात लेने के लिए और शहरों में जिल्लत की जिंदगी जीने के लिए मजबूर है। जिस अन्न से हमारा भरण पोषण होता है, जो हमें आरोग्य, ऊर्जा प्रदान करती है, उसके उत्पादक अन्नदाता को सम्माननीय दर्जा प्रदान करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है। उन्हें खैरात नहीं, अपने कच्चे सोने का उचित दाम चाहिए। एक किसान खाद, बीज, डीजल आदि प्रत्येक आवश्यक वस्तुएं खरीद कर ही अपना कार्य संपादित करता है, इन्हें पूरा करते-करते पर्व त्योहारों में भी बच्चों तक के कपड़े आदि नहीं खरीद पाता है, अगली फसल के भरोसे छोड़ देता है और उसी वक्त पूजा या अन्य उद्देश्य हेतू लोग उसकी फसल बर्बाद करते हैं और उनके बच्चों के सपने भी बिखर जाते है। जैसे बिहार में प्रसिद्ध छठपूजा जिसमें प्रत्येक व्रती लोग 12 या 25 गन्ने का इस्तेमाल करते हैं जिसका मूल्य लगभग 100 रु. से 200 रु. होगा। जिसको बचाने के लिए बेचारा किसान अपने विभिन्न खेतों में चक्कर लगाते हैं। यदि हम सभी वस्तुओं की तरह बिना किसी व्यंग्य के स्वेच्छा से उचित मूल्य पर गन्ना भी खरीद कर पूजा संपन्न करने लगें तो प्रत्येक किसान के घर का उत्सव और बढ़ जाएगा और उनके बच्चों को नया भी कपड़ा मिल जायेगा। इस प्रकार से किसानों की रुचि कृषि-कार्य में बढ़ेगी और उनका पलायन भी नियंत्रित हो सकेगा। स्वधर्म में निष्ठा सुखद होती हैं परन्तु अपनी सामर्थ्यानुसार ही उचित है, भाग्य भरोसे नहीं। किसान अपनी कर्मठता के लिए प्रसिद्ध रहे हैं, भाग्य हेतु नहीं। धर्म हमेशा स्वस्थ जीवन जीना सिखाता है। बहरहाल इस स्थिति से निपटने के लिए विभिन्न क्षेत्र जैसे शिक्षा, स्वास्थ, परिवहन आदि के समान किसानों को भी पूर्णतः व्यावसायिक हो जाना चाहिए और व्यवसाय हेतु संतुलन नितांत आवश्यक है।

गाँधी और हिन्दी कविता

मनीष कुमार भारती पीएच.डी. शोधार्थी हिन्दी विभाग MGCU2019HINDI6004



चले पड़े जिधर हों डग, मग में चल पड़े कोटि पग उसी ओर गड़ गई जिधर भी एक दृष्टि गड़ गए कोटि दृग उसी ओर युग-परिवर्तन, युग-संस्थापक, युग-संचालन, हो युगाधार युग-निर्माता, युग-मूर्ति तुम्हें युग-युग तक युग का नमस्कार।
- सोहन लाल दिवेदी

संसार के अधिकांश लोग गाँधी को एक महान राजनीतिज्ञ ही मानते हैं, परन्तु उन्होंने देश की राजनीतिक उन्नति की अपेक्षा सामाजिक उन्नति को अधिक आवश्यक समझा। गाँधी जी का विश्वास था कि दूषित समाज में किसी आदर्श राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती। अतः उन्होंने राजनीतिक क्रांति के साथ-साथ सामाजिक क्रांति को भी जन्म दिया जिसमें शिक्षा, स्वच्छता, सर्वोदय, अस्पृश्यता आदि विचार समाज के लिए गहरी छाप छोड़ते हैं। गाँधी जी हमेशा इस बात पर बल देते थे कि तुम्हारे द्वारा किये गये हर अच्छे या बुरे कार्यों का समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। यानी तुम्हारे द्वारा किया गया कार्य समाज को क्या लाभ पहुँचाएगा। क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है। गांधी जी का सपना था कि देश के विकास में समाज का अंतिम व्यक्ति भी बराबर का भागीदार बने और ऐसा तब संभव है जब विकास के लाभ का अवसर देश के अल्पसंख्यकों, दलितों, महिलाओं और आदिवासी समुदायों सहित समाज के सभी वर्गों को एक समान रूप से उपलब्ध हो और कोई भी व्यक्ति पीछे नहीं छूटना चाहिए। समाज का अंतिम पंक्ति में खड़ा अंतिम व्यक्ति भी बराबर का हिस्सेदार हो।

इन आँखों को था बुरा देखना नहीं सहन जो नहीं बुरा कुछ सुनते थे ये वही श्रवण मुख यही कि जिससे कभी न निकला बुरा वचन यह बापू की गर्बीली ऊँची पेशानी बस एक हिमालय की चोटी इसकी सानी इससे ही भारत ने अपनी भावी जानी

- हरिवंश राय बच्चन

गाँधी जी के शब्दों में ''शिक्षा से मेरा तात्पर्य है कि बालक एवं मनुष्य में निहित शिक्तियों का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास सर्वोत्तम रूपेण है। साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है और न ही प्रारंभ। यह तो स्त्री-पुरुष को शिक्षित करने का साधन मात्र है।'' इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गाँधी जी ने लिखने-पढ़ने के साधारण नाम को शिक्षा न मानकर व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व के विकास को शिक्षा माना है। गाँधी जी के शब्दों में सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों की आध्यात्मिक, बौद्धिक एवं शारीरिक शंकाओं को अनेक प्रकार उनके अंदर से बाहर की ओर प्रकट करती है एवं उत्तेजित करती है।'' इस प्रकार गाँधी जी का शिक्षा दर्शन मानव के समग्र विकास पर बल प्रदान करती है।

आज देश में रोजगारोन्मुख शिक्षा की चर्चा जोरों पर है, जिसका उल्लेख स्पष्ट रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के 5+3+3+4 के फार्मूले में नजर भी आता है। गाँधी जी कहते थे कि शिक्षा किसी लाभप्रद दस्तकारी से प्रारंभ होनी चाहिए, जिससे बालक अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं कर सके। सभी प्रकार की शिक्षा किसी न किसी उत्पादन उद्योग के माध्यम से ही दी जानी चाहिए तथा इसका उद्योग से सहसंबंध स्थापित किया जाना चाहिए। सभी विषयों की शिक्षा किसी स्थानीय उद्योग के माध्यम द्वारा दी जानी चाहिए। उद्योग ऐसा हो जिससे बालक को क्रिया द्वारा अनुभव प्राप्त हो सके। किसी उद्योग के द्वारा शिक्षा को स्वावलंबी बनाना चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसे प्राप्त करके बालकों को कोई न कोई रोजगार मिल जाए। स्कूल ऐसा होना चाहिए जहाँ बालक अनेक प्रकार के प्रयोगों द्वारा नयी-नयी खोजें करता रहे तथा शिक्षा को उपयोगी नागरिकों का निर्माण करना चाहिए।

"किसी समाज में स्वच्छता, स्वतंत्रता से अधिक महत्त्वपूर्ण है। हमारे जैसे समाज में तो स्वच्छता एक साझा आध्यात्मिक प्रयास की तरह है और यह एक मूल अधिकार है।" - महात्मा गाँधी

गाँधी जी के इस उद्धरण से पता चलता है कि बापू मानव जाति के अस्तित्व के लिए स्वच्छता की आवश्यकता पर कितना अधिक जोर देते थे। स्वच्छ हिन्दुस्तान को लेकर गाँधी जी का सपना शौचालय बनाने और खुले में शौच से मुक्ति से कहीं ज्यादा व्यापक है। हालांकि ये दोनों चीजें इस दिशा में पहला और काफी महत्त्वपूर्ण कदम है। गाँधी जी हिन्दुस्तान को स्वच्छ देखना चाहते थे। वह तन





पहले वो आप पर ध्यान नहीं देंगे, फिर वो आप पर हँसेंगे, फिर वो आप पर हँसेंगे, फिर वो आप से लड़ेंगे, और तब आप जीत जाएँगे।



और मन दोनों की स्वच्छता के हिमायती थे। उन्हें देश के लोगों के रहन-सहन की स्थिति और घरों-मोहल्लों में साफ-सफाई की हालत को देखकर पीड़ा होती थी। उन्हें कचरा और मलमूत्र की सफाई करने वाले समुदायों के साथ होने वाले बर्ताव को लेकर भी दुख होता था। गाँधी जी को इस बात का भी अहसास था कि बीतते वक्त के साथ स्वच्छता को लेकर गाँधी जी का रवैया काफी अवैज्ञानिक हो गया। कचरे और मल-मूत्र की सफाई करने वाले लोगों और अन्य के बीच खाई पैदा करने के लिए यही रवैया जिम्मेदार था। गाँधी जी सफाई को एक 'व्यक्तिगत कर्म' के रूप में चिहिनत करते थे।

एक बार की बात है गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद जब वे शांतिनिकेतन पहुँचे तो उन्होंने देखा कि नित-प्रतिदिन के कार्य करने के लिए सहायक रखा हुआ है। गाँधी जी ने इसका विरोध किया और स्वयं झाडू से अपना कमरा साफ किया, झूठे बर्तन धोये, स्वयं मैला उठाकर निस्तारण स्थल तक फेंका। यह इतना प्रभावशाली था कि शांतिनिकेतन के छात्र स्वयं इसे करने लगे। इस संदर्भ में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने कहा, ''जो मैं वर्षों से नहीं कर सका गांधी जी ने कुछ ही दिनों में कर दिया।''

छिपा दिया है राजनीति ने बापू तुमको लोग समझते यही कि तुम चरखा-तकली हो नहीं जानते वे विकास की पीड़ाओं से वसुधा ने ही विकल तुम्हें उत्पन्न किया था।

- रामधारी सिंह दिनकर

कहा जाता है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' जिसका अर्थ है कि जहाँ महिलाओं की पूजा की जाती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

गाँधी जी महिला सशक्तीकरण के सबसे बड़े पैरोकार थे। उन्होंने खुले तौर पर महिलाओं की शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह और पर्दा व्यवस्था को समाप्त करने का समर्थन किया। उन्होंने महिलाओं को उनके घरों से निकाल कर मुख्य धारा में शामिल होने का अवसर उपलब्ध कराया।

गांधी जी भारतीय सभ्यता को पश्चिमी सभ्यता से श्रेष्ठ बताते हुए 'हिन्द स्वराज' में लिखते हैं -

''सभ्यता वह आचरण है जिससे आदमी अपना फर्ज अदा करता है। फर्ज अदा करने का अर्थ है नीति का पालन करना। नीति के पालन करने का मतलब है अपने मन और इन्द्रियों को वश में रखना। ऐसा करते हुए स्वयं को पहचानते हैं, यही सभ्यता है। इसके जो उल्टा है वे बिगाड़ करने वाले हैं।"

गाँधी जी का मानना था कि आदर्श व्यवस्था वह है जहाँ आवश्यकता के हिसाब से उत्पादन हो और यही भारतीय सम्भ्यता का मर्म भी है। पश्चिमी सभ्यता ने मशीन आधारित जिस उत्पादन प्रणाली को जन्म दिया उससे आज पूरा विश्व संकट में है।

गाँधी जी ने भारतीय उत्पादन प्रणाली की सराहना करते हुए गाँव को उत्पादन का केन्द्र माना जहाँ उत्पाद आवश्यकता के अनुरूप निर्मित होते हैं। भारतीय दर्शन के मूल से उपजा गाँधी जी का यह विचार उस समस्या का समाधान दिखाता है जिससे आज पूरा संसार संघर्ष कर रहा है।

संसाधनों के अंधाधुंध उपभोग से उत्पन्न पर्यावरणीय संकट से जूझ रहे वर्तमान विश्व को गाँधी जी ने काफी पहले आगाह करते हुए कहा था, ''पृथ्वी के पास इनसान की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सब कुछ है, पर लालच को पूरा करने के लिए नहीं।''

गाँधी जी ऐसा समाज देखना चाहते थे जो वास्तव में भारतीय हो। इसका अर्थ केवल स्वतंत्र भारत से नहीं, बल्कि भारत का, भारत के रूप में विकसित हो जाना था।

> एक देश में बाँध संकुचित करो न इसको, गाँधीजी का कर्त्तव्य क्षेत्र दिक नहीं, काल है। गाँधी हैं कल्पना जगत् के अगले युग की, गाँधी मानवता का अगला उद्विकास हैं। - रामधारी सिंह दिनकर







चिंता से अधिक कुछ और शरीर को इतना बर्बाद नहीं करता, और वह जिसे ईश्वर में थोड़ा भी यकीन है उसे किसी भी चीज के बारे में चिंता करने पर शर्मिंदा होना चाहिए। - महात्मा गाँधी



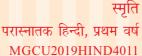
मैं चाहता हूँ...

डॉ. कुंदन किशोर रजक सहायक प्रोफेसर जंतु विज्ञान विभाग



मैं चाहता हूँ, आपकी याद में कुछ लिखूँ पर यह सोचकर रुक जाती है कलम कि इसकी शुरूआत मैं कहाँ से करूँ? में चाहता हूँ, आपकी याद में कुछ कविताएँ लिखूँ पर यह सोचकर रुक जाती है कलम कि इसका शीर्षक में क्या लिखूँ? मैं चाहता हूँ, आपकी सुंदरता पर कुछ लिखूँ पर यह सोचकर रुक जाती है कलम कि इसकी तुलना मैं किससे करूँ? में चाहता हूँ, आपकी सरलता पर कुछ गीत लिखूँ पर यह सोचकर रुक जाती है कलम कि इसके बोल मैं क्या लिखं ? मैं चाहता हूँ, आपकी इन मुस्कराहटों को, कुछ वाक्यों में व्यक्त करूँ पर यह सोचकर रुक जाती है कलम कि इनमें कौन-कौन से शब्द इस्तेमाल करूँ ? मैं चाहता हूँ, आपके कुंदन से चित्र को कागज पर उतारूँ पर यह सोचकर रुक जाती है कलम कि इसकी शुरूआत मैं किस कोमलांग से करूँ ? में चाहता हूँ, आपकी हर एक अदा पे कुछ लिखूँ पर यह सोचकर रुक जाती है कलम कि इसकी शुरूआत मैं किन अदाओं से करूँ ? में चाहता हूँ, आपकी याद में हमेशा कुछ लिखता ही रहूँ पर यह सोचकर रुक जाती है कलम कि आप पर मैं क्या-क्या लिखूँ ?

रिश्ते





इनसान से बड़े होते हैं रिश्ते समंदर से गहरे होते हैं रिश्ते. कहीं खून के होते हैं तो कहीं आसमान से ऊँचे होते हैं रिश्ते. कोई दर्द के होते हैं. तो कोई प्यार के होते हैं रिश्ते. दिल के अंधेरे को मिटाते हैं ऐसे होते हैं रिश्ते. रिश्तों को निभाने की खातिर लोग बलिदान चढा देते हैं अपनी ख्वाहिशों. लुटा देते हैं अपनों के एक इशारे पर जान ऐसे होते हैं रिश्ते किंतु आज वैयक्तिक स्वार्थों ने सोख ली है कशिश सारे रिश्तों की कभी धन की खातिर बेटा बाप को मारता है कभी धर्म के नाम पर पड़ोसी-पड़ोसी का दुश्मन हो जाता है ऐसे क्यूँ कभी उलझ जाते हैं रिश्ते, एक ही जीवन में अनेक होते हैं रिश्ते, इन्हें ना तोडो बडे अनमोल होते हैं रिश्ते अंतिम सांस तक हमसे जुड़े होते हैं रिश्ते।





एक कृत्य द्वारा किसी एक दिल को खुशी देना, प्रार्थना में झुके हजार सिरों से बेहतर है।



चिड़िया



डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव सह आचार्य, हिन्दी विभाग

चिडिया-1

फिर आऊँगी
फिर बनाऊँगी घोंसला
फिर चहकूँगी
फिर थिरकेंगे पत्ते
फिर खिलखिलाएँगे फूल
तुम्हारे ही घर की मुंडेर पर
फिर बैठूँगी
उड़ जाऊँगी दूर देश
पर लौटूँगी जरूर ----जब सारे पत्थर खत्म हो जाएंगे!

चिडिया-2 जरूर सुनी होगी एक छोटी चिड़िया की कहानी एक दाल का दाना चिड़िया की चोंच से गिर खूँटे में फँस गया चिड़िया बढ़ई के पास पहुंची -----बढई बढ़ई खुँटा चीरो, खुँटे में दाल है क्या खाऊँ क्या पीऊँ क्या लेके परदेश जाऊँ बढ़ई ने खूँटा नहीं चीरा चिडिया दौडती रही -----राजा रानी साँप लाठी आग सबके पास ----राजा ने बढई को नहीं डाँटा रानी ने राजा को नहीं समझाया साँप ने रानी को नहीं डँसा लाठी ने साँप को नहीं मारा आग ने लाठी को नहीं जलाया एक छोटी चिड़िया तब भी लड़ती रही

दुनिया के किसी संघर्ष से
उस छोटी चिड़िया की कहानी क्या छोटी थी?
मैं उडूँगी, लडूँगी
आउंगी दूर देश से भी
अपनी उसी डाल पर
उसी हौसले के साथ गाऊँगी खूँटे में दाल है, क्या खाऊँ,
क्या पीऊँ,
क्या लेके परदेश जाऊँ
तुम्हारे पत्थर खत्म हो जाएँगे।

आदमी और जानवर



अवधेश कुमार परास्नातक हिन्दी, प्रथम वर्ष MGCU2019HIND4005

मैं अक्सर चहारदीवारी
और
दो चार छिपकलियों के बीच बैठे सोचता हूँ,
आदमी होना कितने गर्व की बात है।
मेरी संवेदनाएँ!
यहाँ पर खिले रंग-बिरंगे फूलों को देखकर,
बादलों की भांति उमड़ती-घुमड़ती रहती हैं।
फिर मैं,
सभ्यता की सँकरी गलियों से देखता हूं
कुछ जानवर
जिनका जानवर होना महज इत्तेफाक नहीं!
वह नोच रहे हैं....
जैसे गिद्ध नोचता है,
किसी मरे हुए जानवर के,
मांस के लोथडे को!





खुद वो बदलाव बनिए जो दुनिया में आप देखना चाहते हैं।

महात्मा गाँधी का ग्राम स्वराज्य

प्रो. सुनील महावर आचार्य एवं अध्यक्ष गाँधी एवं शांति अध्ययन विभाग



विकास को अक्सर शहरीकरण और औद्योगीकरण के रूप में परिभाषित किया जाता है, जितना अधिक शहरीकरण और औद्योगीकरण होगा विकास की दिशा उतनी ही अधिक तीव्र होगी। इस अवधारणा के मद्देनजर भारत में विकास की राह भी कुछ ऐसी बनी जिसमें शहरीकरण और औद्योगीकरण की लहर चल पड़ी। इस लहर के फलस्वरूप भारत में ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों का पलायन अच्छे जीवन की आशा में शहरों की ओर हुआ, जिसका परिणाम यह हुआ कि ग्रामीण क्षेत्र पर जो ध्यान दिया जाना था वह नहीं दिया जा सका। जब चीन से जन्मी महामारी कोविड-19 का विस्फोट सम्पूर्ण विश्व में हुआ तो भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। ऐसे में ग्रामीण क्षेत्रों से मानव शक्ति का जो पलायन शहरों की ओर हुआ था वह पुनः ग्रामीण क्षेत्रों की ओर होने लगा। इससे यह तो स्पष्ट हो गया कि पाश्चात्य विकास प्रतिमान व्यक्ति को सुरक्षा की गारण्टी प्रदान नहीं करते। भारत में इस महामारी के फैलाव ने यह सिद्ध किया कि आज भी ग्रामीण क्षेत्र सुरक्षा और आत्मनिर्भरता की दृष्टि से अत्यन्त प्रासंगिक हैं। यदि भारत को विकास की राह पर अग्रसर करना है तो गाँव को नजरअंदाज करना एक भारी भूल होगी। इस दृष्टि से ग्राम स्वराज आधारित विकास का गाँधीय प्रतिमान आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना पूर्व में था। वस्तुतः ग्राम स्वराज आधारित विकास का गाँधीय प्रतिमान ही वह विकल्प है जिसके आधार पर भारत को विकास के पथ पर अग्रसर किया जा सकता है। गाँधीय प्रतिमान न केवल भारत वरन विश्व में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को सुलझाने और एक नई, शांति आधारित, अहिंसक विश्व-व्यवस्था को स्थापित करने में सक्षम है।

गाँधीय प्रतिमान पश्चिमी प्रतिमानों से नितान्त भिन्न हैं। जहाँ पश्चिमी मॉडल भौतिक विकास को अधिक महत्व प्रदान करते हैं गाँधी का मॉडल भौतिक के साथ नैतिक विकास को अधिक महत्त्व प्रदान करता है। गाँधी जी किसी भी तरह की हिंसा का निषेध करते हुए सम्पूर्ण समाज का सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक

उत्थान के साथ नैतिक उत्थान चाहते हैं। उनकी विकास अवधारणा मुख्यतः व्यक्ति केन्द्रित है जिसमें व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वतंत्र रहकर स्वराज कायम करने को उद्यत है। जहाँ पश्चिमी अवधारणा से द्वेष को प्रोत्साहन मिलता है वहीं गाँधीय अवधारणा प्रेम को स्थापित करती है। विकास का प्रत्येक आयाम गाँधीय प्रतिमान में निश्चित रूप से दृष्टिगत होता है। बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति से लेकर राजनीतिक सहभागिता, आर्थिक समानता और सामाजिक समरसता सभी गाँधीय प्रतिमान का महत्त्वपूर्ण भाग है। आज भारत जिन समस्याओं से जूझ रहा है वे सब पश्चिमी प्रतिमान के फलस्वरूप ही उत्पन्न हुई हैं यदि हमें इन समस्याओं से छुटकारा पाना है तो गाँधीय प्रतिमान को उचित स्थान प्रदान करना होगा इससे ये समस्याएँ स्वतः ही हल हो जाएँगी और एक सच्चा स्वराज कायम होगा।

गाँधी विकास को नीचे से प्रारम्भ करने के पक्ष में हैं वे केन्द्र को अधिक महत्त्व न देकर परिधि को अधिक महत्त्व देते हैं। इसी कारण उनका विकास प्रतिमान ग्राम से प्रारम्भ होता है वे ग्राम को इतना स्वावलम्बी व आत्मनिर्भर बना देना चाहते थे कि किसी भी वस्तु के लिए किसी ग्रामवासी को बाहर न जाना पड़े। ग्राम स्वराज्य की उनकी कल्पना एक ऐसे पूर्ण प्रजातंत्र के रूप में परिकल्पित होती है जिसमें कोई भी व्यक्ति अपनी अहम् जरूरतों के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहेगा तथापि जहाँ अन्य ऐसी आवश्यकताएँ होंगी जिनमें दूसरों का सहयोग अनिवार्य होगा उनमें सभी व्यक्ति परस्पर सहयोग और तालमेल से काम लेंगे। इस तरह उनकी कल्पना के ग्राम को उन्हीं के शब्दों में इंगित किया जा सकता है। वे कहते हैं ''इस तरह हर एक गाँव का पहला काम यह होगा कि वह अपनी जरूरत का तमाम अनाज और कपड़े के लिए कपास खुद पैदा कर ले। उसके पास इतनी सुरक्षित जमीन होनी चाहिए, जिसमें पशु चर सकें और गाँवों के बड़ों और बच्चों के लिए मन बहलाव के साधन और खेल-कूद के मैदान इत्यादि का बन्दोबस्त हो सके। इसके बाद भी जमीन बची तो उसमें वह ऐसी उपयोग फसलें बोयेगा, जिन्हें बेचकर वह आर्थिक लाभ उठा सके, यों वह गाँजा, तम्बाक, अफीम इत्यादि की खेती से बचेगा।"

उन्होंने विकसित ग्राम का ऐसा चित्र उकेरा है जो पूंजीवादी या समाजवादी विचारधारा में सम्भव ही नहीं है। वे भारत के समस्त गाँवों को पूर्ण आत्मनिर्भर बना देने के पक्ष में थे, इसके लिए वे हर





मैं किसी को भी गंदे पाँव के साथ अपने मन से नहीं गुजरने दूँगा।



एक गाँव में नाट्यशाला, पाठशाला, सभा भवन, वाटर वर्क्स इत्यादि निर्मित करने की बात करते हुए कहते हैं ''सत्याग्रह और असहयोग के शस्त्र के साथ अहिंसा की सत्ता ही ग्रामीण समाज का शासन-बल होगी।'' जहाँ तक ग्रामीण शासन एवं प्रशासन का प्रश्न है वे ऐसी ग्राम पंचायत निर्मित करने की बात करते हैं जिसमें हर साल पाँच आदिमयों का चयन किया जाएगा और इनका चुनाव निर्धारित योग्यता वाले वयस्क स्त्री-पुरुष करेंगें। इस पंचायत को सब प्रकार की आवश्यक सत्ता और अधिकार रहेंगे। इस तरह वे स्वतंत्रता और विकास को नीचे शुरू करने के पक्षधर थे हर एक गाँव स्वतंत्र, आत्मिनर्भर, स्वावलम्बी, सच्ची स्वतंत्रता का भोग करने वाला और नैतिकता पर आधारित सच्चे स्वराज को स्थापित करने वाला होगा।

उपर्युक्त ग्रामीण व्यवस्था को व्यवहार में स्थापित करने और विकास के सभी सूचकांकों को प्राप्त करने के लिए गाँधी ने अपनी एक अचूक रणनीति प्रदान की है। जिसके आधार एक विकसित समाज को न केवल प्राप्त किया जा सकता है वरन् उसे बनाये रखा जा सकता है। उनके अनुसार विकास का मूल उद्देश्य आत्मनिर्भरता एवं आत्मसंतुष्टि है। इसके लिए उन्होंने स्वदेशी पर बल दिया। ग्रामों के आर्थिक विकास हेतु वे लघु एवं कुटीर उद्योगों के पक्ष में थे। इसका आशय यह कतई नहीं है कि वे तकनीक के विरुद्ध थे। वे ऐसी तकनीक नहीं चाहते थे जो मनुष्य को गुलाम बना दे कुछ को रोजगार दे और अधिकांश बेरोजगार हो जाएँ। वस्तुतः उनकी विशेष चिन्ता ग्रामीण बेरोजगारी और गरीबी से सम्बन्धित थी। वे असमानता पैदा करने वाली समस्त तकनीकों का विरोध करते हैं किन्तु ऐसी तकनीक के पक्षधर भी हैं जो गरीबी एवं बेरोजगारी का उन्मूलन करे। पश्चिम से आयातित तकनीकों के परिणामस्वरूप ग्रामीण अर्थव्यवस्था को हानि पहुँचती है, चाहे राष्ट्रीय स्तर पर उत्पादन में वृद्धि होती हो तथापि ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी मात्र भी बढ़ती जाती है। उनका कहना था ''मैं यह नहीं चाहता कि मानव मशीनें बेकार पड़ी रहें। हमारे यहाँ बड़ी मात्रा में मानव शक्ति बेकार पड़ी है और बिजली द्वारा संचालित मशीनों के लिए कोई स्थान नहीं है।" वस्तुतः गाँधी जी मशीन के विवेकपूर्ण एवं न्यायोचित प्रयोग के पक्षधर थे। जो मशीन अधिक मनुष्यों को रोजगार प्रदान करे और पारम्परिक रोजगार के स्थान पर नये रोजगार का सृजन करे वह उपयोगी हो सकती है किन्तु जो मशीनें

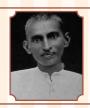
पारम्परिक रोजगार को नष्ट करती है, ऐसी मशीनों को उपयोग ग्राम स्वराज्य में नहीं होगा।

गाँधी जी हर प्रकार के शक्ति संचय के विरुद्ध थे, इसलिए उन्होंने राजनीतिक और आर्थिक दोनों ही स्तरों पर विकेन्द्रीकरण का समर्थन किया। 'राजनीतिक सत्ता के विकेन्द्रीकरण से उनका तात्पर्य स्थानीय संस्थाओं को अधिक से अधिक बलशाली बनाना एवं स्वायत्त शासन की स्थापना करना है। आर्थिक विकेन्द्रीकरण का अर्थ उत्पादन के साधनों पर स्वयं उत्पादकों के अधिकार से है। यह कुछ-कुछ साम्यवादी दृष्टिकोण के समान दिखाई पडता है किन्तु यह पूर्णतः आध्यात्मिक एवं नैतिक है जबिक साम्यवाद भौतिक है। यह धनवान व्यक्तियों से सम्पति को छीनता नहीं बल्कि उनके हृद्य परिवर्तन का प्रयास करता है। इसके लिए गाँधी जी ने एक नया सिद्धान्त दिया जिसे उन्होंने ट्रस्टीशिप कहा है। इसमें प्रत्येक धनी व्यक्ति अपनी सम्पति का ट्रस्टी होगा और उस धन का उपयोग समाज कल्याण के लिए करेगा।

गाँधी जी के विकास की अवधारणा अत्यन्त व्यापक है जिसमें उन्होंने समग्र विकास को समाहित किया और उसकी प्राप्ति हेतु एक कार्ययोजना तैयार की जो रचनात्मक कार्यक्रम के तहत दृष्टिगत होती है। इसमें उन्होंने बुनियादी शिक्षा, जन स्वास्थ्य, ग्रामीण सफाई, गाँवों एवं नगरों में संतुलन की स्थापना, नैतिकता को महत्व, कार्यिक श्रम, अस्पृश्यता निवारण, साम्प्रदायिक सद्भाव, आर्थिक समानता, खादी का प्रयोग, स्त्री सशक्तीकरण, किसान, मजदूर, आदिवासी एवं विद्यार्थी आदि सभी क्षेत्र में उन्नित की चर्चा की। इसी को आधार बनाकर विनोबा जी ने ग्राम स्वराज्य की सम्पूर्ण संरचना एवं उसके व्यावहारिक पहलुओं का एक सम्पूर्ण प्रारूप तैयार किया तथा बताया कि ग्रामीण क्षेत्र में स्वराज्य की स्थापना सम्भव है।

निष्कर्षतः वर्तमान में जो कुछ भी दृष्टिगत हो रहा है वह हमें विकास के विपरीत विनाश की ओर ले जा रहा है। कोविड-19 के पश्चात् तो यह और भी विकराल रूप में प्रकट हुआ है। समस्त मानवीय समाज एक ऐसे जाल में जकड़ा है जिससे निकल पाना असम्भव दिखाई दे रहा है। आधुनिकता एवं विकास की पश्चिमी धारणाओं ने मानव को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। कहीं-न-कहीं वर्तमान संकट उसी पश्चिमी सभ्यता की देन है





जब तक गलती करने की स्वतंत्रता ना हो तब तक स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है।



जिसे गाँधी जी वर्षों पहले खारिज कर दिया था। मनुष्य भौतिकता का गुलाम होता जा रहा है और उसकी सच्ची स्वतंत्रता छिनती जा रही है, निरन्तर परनिर्भर होता जा रहा है। कदाचित इसी तथ्य के मददेनजर पश्चिम में एक नये समाज के आविर्भाव की कल्पना की गयी जिसे उत्तर आधुनिक समाज कहा गया है। यह उत्तर आधुनिकता उन समस्याओं के विरुद्ध एक नया प्रतिमान प्रस्तुत करती है जो आधुनिकता की वजह से उत्पन्न हुई थी। यह अवधारणा पर्यावरण संरक्षण से लेकर स्थानीय समस्याओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करती है तथा मार्क्स, वेबर और दुर्खीम इत्यादि द्वारा प्रतिपादित महान वृत्तांतों को वर्तमान समाज के लिए अप्रासंगिक बताती है। गाँधी जी ने इसी उत्तर आधुनिक विचार को वर्षों पूर्व महसूस कर लिया था। उन्होंने न केवल औद्योगीकरण के खतरों से अवगत कराया वरन् पर्यावरण के क्षरण पर भी चिन्ता व्यक्त की। जैसे आज उत्तर आधुनिकतावादी विचारक स्थानीय वृत्तांतों एवं समस्याओं की बात करते हैं गांधी जी ने वर्षों पूर्व इस अवधारणा के मुल विचार को प्रतिपादित कर दिया था। अन्ततः कहा जा सकता है कि यदि हमें एक वास्तविक विकसित नैतिक समाज की ओर जाना है तथा मनुष्य को मुक्त व स्वनिर्भर बनाना है तो गाँधी की ओर मुड़ना ही होगा। वर्तमान में गाँधी ही एक आशा की किरण है।

महात्मा गाँधी को सर्वप्रथम चम्पारण को ही सत्याग्रह का सफल प्रयोग-स्थल बनाना पड़ा। यहाँ के किसानों को अंग्रेज निलहों के अत्याचार से मुक्ति दिलाने में गाँधी जी को अपूर्व सफलता मिली। ऊपरी तड़क-भड़क की निरर्थकता और बाह्याडंबर के ढकोसले का खोखलापन दिखाकर उन्होंने आंतरिक पवित्रता और सत्यनिष्ठा की महिमा प्रतिष्ठित की। साम्राज्यवादी शोषण तथा प्रपीड़न के विरुद्ध जनता की आंतरिक शक्ति को जगाकर, सत्याग्रह का एक अहिंसात्मक अस्त्र प्रदान कर भारत की धरती पर मानव समुदाय के अभ्युदय की सम्भावना को उन्होंने बल दिया।

> - ब्रज किशोर सिंह (पूर्व राज्यमंत्री, बिहार सरकार) की पुस्तक 'चम्पारण में बापू' की भूमिका से

धुमिल गाँव

डॉ. आशा मीणा सहायक आचार्य हिंदी विभाग



गाँव की तरफ दौड़ती पक्की सड़कें बिजली और टॉवर उसे शहर होना सिखा रहे हैं बम्बा भी सुख रहा है लोगों की तरह सिमट रही है दुनिया पर उससे कहीं अधिक सिमट गया है गाँव बूढ़े होते गूलर के पेड़ के साथ बुढ़ा गया है बहुत कुछ न दोपहर कढी खा कर बाहर निकलने पर टोकता है कोई न कोई पछता है आने वालों से कि किसके यहाँ आये हो पगडंडियों के चेहरों पर धूल और झुरियाँ पड़ गयी हैं अब तो उनके दोनों तरफ अनायास उगने वाली भांग भी उनसे रूठ कर कहीं एकान्त में समाधि पर है अब गाँव आंचलिकता भरे उपन्यासों में है उनके अंचल में है असल में जो दिख रहा है वो न गाँव बचा है न गाँव का आँचल वो शहर की धूमिल एक छाया है जो जल्द ही और धूमिल हो जाएगी...।





में हिंसा का विरोध करता हूँ क्योंकि जब ऐसा लगता है कि वो अच्छा कर रही है तब वो अच्छाई अस्थायी होती है। और वो जो बुराई करती है वो स्थायी होती है।

महातमा गाँधी और सामाजिक समता

श्रीप्रकाश पीएच.डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग MGCU2019HINDI6007



राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी का व्यक्तित्व आदर्शवादी रहा है। विश्व के अधिकांश लोग महात्मा गाँधी को महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जाने जाते हैं। पर महात्मा गाँधी जी का यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण सहयोग होता है।

महात्मा गाँधी जी का सामाजिक समता के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष योगदान रहा है। गाँधी जी का मूलमंत्र शोषणविहीन समाज की स्थापना करना था। सामाजिक समता के लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक भाईचारे के समाज का निर्माण असम्भव है। भारत की आजादी में महात्मा गाँधी जी ने अग्रणी नेता के रूप में बड़ी तन्मयता से भागीदारी निभायी थी। महात्मा गांधी ने राजनैतिक आजादी के साथ-साथ सम्पूर्ण सामाजिक समता की स्थापना का लक्ष्य भी सामने रखा था। भारत गुलाम क्यों बना, इसके कारणों की खोज करते हुए महात्मा गाँधी जी ने पाया कि जाति भेद, अस्पृश्यता, सामाजिक अन्याय, महिलाओं को दोयम दर्जा, परिश्रम करने वालों को नीच समझना आदि बहुत से कारण थे जिसके कारण समाज कमजोर बन गया। उन सभी कारणों को दूर करने हेतु महात्मा गाँधी जी ने समाज की उन्नति में सहायक होने वाले सभी कार्यक्रम आजादी की लड़ाई के साथ-साथ अन्य महत्त्वपूर्ण सामाजिक समतायुक्त कार्यक्रम भी चलाए।

महात्मा गाँधी ने अस्पृश्यता निवारण को आजादी की लड़ाई के लिए लड़ने वाले हर व्यक्ति को अछूतों से छुआछूत मिटाने के कार्य पर भी लगाया। अस्पृश्यता निवारण कार्य को व्यवस्थित रूप से प्रारम्भ करने के लिए महात्मा गाँधी ने 1932 में हरिजन सेवक संघ की स्थापना की और भारत के अधिकतर सम्मानित नेताओं को अस्पृश्यता निवारण को दूर करने के लिए जोर दिया। गाँधी जी ने हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष होने के नाते प्रसिद्ध उद्योगपित श्री घनश्यामदास बिरला को अस्पृश्यता निवारण कार्य की प्रेरणा दी।

श्रीमित रामेश्वरी नेहरू ने वर्षों तक इस संस्था का दायित्व सम्भाला। पं. गोविन्द वल्लभ पंत, सी. राजगोपालाचारी, पं. गोपीनाथ बरदौले, राजेन्द्र प्रसाद तथा जगजीवन राम, मोरारजी देसाई, पं. वियोगी हरि, सेनापित बापट आदि अनेक नेता अस्पृश्यता निवारण कार्य के नेता बने। सामंतवादी समय में छुआछूत चरम सीमा पर था परन्तु महात्मा गाँधी जी की प्रेरणा से हजारों लोगों ने इस काम को अपने कन्धों पर लेकर अनेक विपदाएँ झेलीं। गाँधी जी ने अपने नेक उद्देश्य में काफी सफलता भी पाई। गाँधी जी द्वारा चलाए गए अस्पृश्यता निवारण और सामाजिक समता की स्थापना के पीछे एक आदर्शवादी सोच प्रायश्चित का था। महात्मा गाँधी जी कहा करते थे कि जिस विचारधारा ने अस्पृश्यता चलाने का पाप किया है, उन्हीं लोगों को प्रायश्चित के रूप में अस्पृश्यता निवारण का कार्य करना चाहिए और अछूत माने जाने वाले मनुष्यों की सेवा कर उन्हें समानता की भूमिका पर लाना चाहिए।

समाज में सामाजिक समता को लाने के लिए कई उच्चवर्णीय जाने माने व्यक्तियों ने इस कार्य का भार अपने कन्धों पर उठाया। मध्यप्रदेश के स्व. दाते, तमिलनाडु के वैद्यनाथ अय्यर, महाराष्ट्र के काका साहब बर्वे जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने समाज में सामाजिक समता को लाने हेतू अपना पूरा जीवन अर्पित किया। सामाजिक समता को अहिंसा द्वारा समाज में परिर्वतन लाने की अहम् हथियार माना जाता है। शोषक को सेवक बनाती है, क्रोध को नहीं, दया को परिर्वतन का साधन बनाती है, संघर्ष द्वारा नहीं, हृदय की सरलता पर आधारित सहयोग द्वारा समाज की गलत मान्यताओं में बदलाव लाती है। गाँधी जी ने अंग्रेजों की हुकूमत को मिटाने के लिए अहिंसा, सत्याग्रह की पद्धति अपनायी और अंग्रेजों के साथ मित्र बनाये रखे। ठीक उसी तरह सामाजिक अस्पश्यता निवारण कार्य को सरलता के साथ-साथ दोनों समाजों प्रेम बनाये का ही प्रयास जारी रखा। गाँधी जी का सिद्धान्त था कि समाज पर हो रहे जुल्म को मिटाना है। जुल्म करने वाले का हृदय परिवर्तन करना है। महात्मा गाँधी जी कहा करते थे कि पाप से घृणा करो पापी से नहीं, उसे बदलने का प्रयास करो।

गाँधी का विचार था की जिस मन्दिर में शूद्रों का प्रवेश वर्जित है उस मन्दिर में मेरा भी जाना उचित नहीं शूद्रों को मन्दिर प्रवेश कराने के लिए अनेक कार्यक्रम गाँधी जी की प्रेरणा से चलाए





पूंजी अपने-आप में बुरी नहीं है, उसके गलत उपयोग में ही बुराई है। किसी ना किसी रूप में पूंजी की आवश्यकता हमेशा रहेगी।



गए केरला के वायकोम मन्दिर प्रवेश हेतु सत्याग्रह चला जिसके लिए गाँधी जी ने आचार्य विनोबा भावे को भेजा था। मदुरै के मीनाक्षी मन्दिर में प्रवेश कार्य के लिए माता रामेश्वरीय नेहरू पहुँची थी। इस कार्य में वैद्यनाथ अय्यर आदि सेवकों को पंडों की लाठियों शिकार होना पड़ा था। बिहार के वैद्यनाथ धाम में शूद्र भाइयों को विनोबा जी साथ लेकर प्रवेश कराते समय पंडों ने विनोबा जी पर प्रहार किया जिससे विनोबा जी सदा के लिए श्रवण शक्ति खो बैठे थे।

गाँधी जी अहिंसा की संकल्पना न केवल भारत को स्वतंत्रता दिलाने में सहायक हुई। बिल्क अहिंसा के माध्यम से विश्व भर में शोषण और अत्याचार से छुटकारा पाने के लिए एक और हिथार मिला परन्तु आज ऐसा समय आ गया है जब विश्व के अधिकतर लोग गांधी जी और उनके विचारों की आवश्यकता को ही नकार रहे हैं और वर्तमान समय में गाँधी जी की प्रासंगिकता पर प्रश्न उठाया जा रहा है। आज गांधी जी को सिर्फ 2 अक्तूबर के दिन ही याद किया जाता है। आज के समय में गाँधी के अहिंसक विचारों को बेकार समझकर अलग रखकर हिंसा का सहारा लेकर अनेक तरह के हितों को साधने का प्रयास किया जा रहा है।

कुछ लोगों का मानना है कि गाँधी जी के विचारों को वर्तमान समय में सबसे प्रासंगिक है जब लोगों को लालच, चारों ओर फैली हिंसा और भाग दौड़ भरी जीवन शैली का हल करने की कोशिश कर रहे हों, गाँधी जी की अहिंसा और सत्याग्रह की अवधारणा की आज सबसे अधिक आवश्यकता है, क्योंकि वर्तमान समय में जब मात्र बदले के नाम पर किसी की भी हत्या कर दी जाती है और अपने आलोचकों को दुश्मन से अधिक कुछ नहीं समझा जाता है। दक्षिण अफ्रिका में नेल्सन मंडेला, संयुक्त राज्य अमेरका में मार्टिन लूथर किंग जैसे लोगों के नेतृत्व में दुनिया भर में कई उत्पीड़ित समाजों द्वारा लोगों को जुटाने की गाँधीवादी अहिंसा को सफलतापूर्वक धारण किया गया है। जो कि इन सब बातों की गवाही देता है की गाँधी और उनके विचार वर्तमान समय में भी जिन्दा है।

मेरी आदत है!





परों को काट देना और हँसना तेरी मर्जी है नंगे पांव चलना, चलते रहना मेरी आदत है।।

सच है हवा का रुख बहुत ही तेज है लेकिन दीये सा रोज जलना, जलते रहना मेरी आदत है।।

उसी के हाथ में खंजर है जो बनता मसीहा है जमीं में रोज उगना, उगते रहना मेरी आदत है।।

मेरी आँखों से अश्कों का कोई रिश्ता पुराना है संभलकर रोज हँसना, हँसते रहना मेरी आदत है।।

मुझे मालूम है दूरी कभी मिटने नहीं वाली क्षितिज को रोज तकना, तकते रहना मेरी आदत है।।

मेरी दहलीज पर काँटों की चादर है बिछी लेकिन गुलों-सा रोज खिलना, खिलते रहना मेरी आदत है।।







केवल प्रसन्नता ही एकमात्र इत्र है, जिसे आप दूसरों पर छिड़कें तो उसकी कुछ बूँदे अवश्य ही आप पर भी पड़ती हैं।



शिक्षक दिवस @2020



प्रो. आशीष श्रीवास्तव अधिष्ठाता, शिक्षण संकाय अध्यक्ष, शिक्षण अध्ययन विभाग

आजाद भारत में भारत के विकास की दिशा व दशा तय करने वाली शिक्षा, शिक्षा व्यवस्था, शैक्षिक नीतियाँ, शैक्षिक कार्य योजनाएं तथा शिक्षकों की भूमिका पर आज आजादी के लगभग 73 वर्षों के बाद जब भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 आई है, पर देश के लगभग सभी कोनों में, शिक्षा के सभी स्तरों पर तथा समाज के विभिन्न बौद्धिक वर्गों के बीच चर्चा-परिचर्चा तथा बहस जोरों पर है। आजादी के बाद से लेकर आज तक हम सभी शिक्षा व्यवस्था पर. शिक्षकों की गुणवत्ता पर, शिक्षकों की तैयारी पर, शिक्षकों के समाज में स्थान पर, शिक्षक के गिरते सम्मान पर, शिक्षक की विश्वसनीयता पर, अच्छे शिक्षकों की खोज पर तथा इस तरह के शिक्षकों से संबंधित सभी पहलुओं पर चिंता करते नजर आए हैं। यह चिंता कितनी सार्थक रही, यह एक शोध का विषय है, हालांकि शिक्षक-शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2009 की आख्या को देखें, तो इसकी शुरूआत विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) द्वारा व्यक्त की गई चिंता, 'हमारे देश में शिक्षा को एक पेशे के रूप में पहचानने तथा यह मानने में कि शिक्षा में भी गहन तैयारी की आवश्यकता है, में बहुत धीमे रहे हैं', भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66) द्वारा व्यक्त की गई चिंता, 'भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है' और इसी तरह से व्यक्त की गई अन्य चिंताओं द्वारा हमने पिछले सात दशकों से ज्यादा समय में केवल चिंताएँ ही व्यक्त की हैं। आज जब नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 हमारे सामने है, तब यह नीति हमें वह अवसर उपलब्ध कराती है, और एक ऐसा मौका देती है, जबकि हम आजादी के बाद से व्यक्त की गई सभी चिंताओं को पीछे छोड़ते हुए आने वाले भविष्य में शिक्षा व्यवस्था तथा शिक्षकों का स्थान एक बार पुनः तय करने की स्थिति में है। लेकिन आजादी के बाद से आज तक का इतिहास हमें कई तरह से सशंकित करता है। आजाद भारत में जब हम अपने संविधान का निर्माण कर रहे थे, तब खंड-23 को भारतीय संविधान से हटाना तथा उसके स्थान पर संविधान के भाग-4 में अनुच्छेद-45 को रखना यह हमें हमारी अदूरदर्शिता का एक ऐसा सबक दिखाता है, जिसकी भरपाई अगर असंभव नहीं तो अत्यंत

कठिन अवश्य है। हम सभी भारतीय संविधान के भाग-4 में प्रक्षेपित अनुच्छेद-45 की उस विफलता को जानते हैं, जिसे हमारे देश का कोई भी राज्य चार से ज्यादा दशक बीत जाने के बावजूद प्राप्त नहीं कर पाया था। भारतीय शिक्षा आयोग (1964-66) द्वारा अनुमोदित समान स्कूली व्यवस्था का भी हश्र हम सभी जानते हैं। भारतीय समाज में शिक्षा हमेशा से समाज का विषय रही थी. लेकिन अंग्रेजों के आगमन के पश्चातु इसे राज्य के अधीन कर लिया गया। राज्य के अधीन करने के पीछे अंग्रेजों की मंशा पूर्णतया स्पष्ट थी, भारत को बौद्धिक रूप से गुलाम बनाने के लिए शिक्षा को राज्य का विषय बनाया जाना तथा शिक्षकों को राज्य के नियंत्रण में लाना अंग्रेजों के लिए एक अति आवश्यक कदम था, जिसको उन्होंने बहुत सुनियोजित तरीके से सफल परिणाम में परिणत किया। आजादी के बाद भारत के नीति नियंता भारतीय शिक्षा के उद्देश्यों को भारतीयता की दृष्टि से, भारत के विकास की दृष्टि से, भारत की मौलिकता की दृष्टि से तथा गुलामी की मानसिकता से भारतीय समाज को मुक्त किया जा सके, इस तरह के सफल परिणामों में परिणत ना कर सके अपित इसके विपरीत एक लंबे समय तक शिक्षा में मैकाले की व्यवस्था को ही जीवित रखा। इसका सबसे दुखद परिणाम यह हुआ कि शिक्षा राज्य के नियंत्रण में ही रही तथा यह नियंत्रण दिन प्रतिदिन बढ़ता ही चला गया। भारत की संकुचित राजनीति कुछ भ्रष्ट व्यवस्थाओं तथा भारत के उज्ज्वल भविष्य के प्रति अनिभज्ञ समाज के एक छोटे से, लेकिन ताकतवर तबके ने, शिक्षा तंत्र की जडों पर ऐसा आघात किया जिससे समाज के प्रति एक वृहद् उद्देश्य को प्राप्त करने के बजाय, शिक्षा ज्यादातर उस समूह के उद्देश्यों को पूरा करने का एक हथियार मात्र बनकर रह गई। इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक जो कि या तो राज्य के नियंत्रण में था, या शिक्षा प्रक्रिया को नियंत्रित कर रहे पंजीवादियों के नियंत्रण में था, जिसका परिणाम यह हुआ कि शिक्षकों की जवाबदेही जो कि समाज के प्रति होनी चाहिए थी वह उनके आकाओं के प्रति होने लगी और इस बदली हुई जवाबदेही के परिणामस्वरूप शिक्षक समाज में अपना स्थान धीरे-धीरे खोने लगे। समाज में सम्मान खोने की इस प्रक्रिया में 1995 में बनी राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद जिसका उद्देश्य शिक्षक-शिक्षा को व्यवस्थित करना तथा इसकी गुणवत्ता को बनाए रखना था, ने इस दिशा में एक ऐसा कुठाराघात किया जिससे पूरी की पूरी शिक्षा व्यवस्था विशेषकर शिक्षक-शिक्षा की व्यवस्था तथा परिणामस्वरूप स्कूली शिक्षा की व्यवस्था चरमरा उठी। राष्ट्रीय





अहिंसात्मक युद्ध में अगर थोड़े भी मर मिटने वाले लड़ाके मिलेंगे तो वे करोड़ों की लाज रखेंगे और उनमे प्राण फूँकेंगे। अगर यह मेरा स्वप्न है, तो भी यह मेरे लिए मधुर है। - महात्मा गाँधी

शिक्षक शिक्षा परिषद ने 21वीं सदी के पहले दशक में भारतीय शिक्षा व्यवस्था को जो नुकसान पहुँचाया है, समाज में शिक्षकों के प्रति जो पूर्वाग्रह उपजा है, स्कूली शिक्षा व्यवस्था में इसके चलते जिस तरह के शिक्षकों को स्थान मिला है तथा इन सब के परिणाम स्वरूप जो सबसे बड़ी समस्या उत्पन्न हुई है वह शिक्षकों का समाज में स्थान को लेकर हैं । हालाँकि इस पूरी व्यवस्था में, पूरी व्यवस्था से टकराते हुए शिक्षकों का एक छोटा सा समूह ऐसा भी है, जिसने शिक्षकों के अस्तित्व के प्रति अपना समर्पण दिखाते हुए, राज्य तथा समाज के बीच में संतुलन बनाते रखते हुए, किसी तरह से अपने दायित्वों का निर्वहन करने में सफल रहे और शायद यही कारण है कि 21वीं सदी के दो दशक बीत जाने के बावजूद भी समाज के एक तबके में आज भी शायद यह आशा है कि शिक्षक अपना वह सम्मान पुनः प्राप्त कर सकें। नव उदारवाद के आगमन के पश्चात हालांकि यह आशा एक बेमानी सी लगती थी लेकिन नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों के सम्मान. शिक्षकों का समाज में स्थान तथा शिक्षकों की गुणवत्ता को लेकर गंभीर दिखाई पडती है। शिक्षा नीति में शिक्षकों के प्रति व्यक्त की गई चिंता तथा उसके उपचार स्वरूप किए गए कई प्रावधान फिर से एक आशा की किरण जगाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की विद्यालयों में पाठ्यचर्या तथा प्रस्तावित नया विद्यालयी प्राकल्प जोकि विद्यार्थियों के समग्र विकास की दिशा में पूरी कार्य-योजना बनाता है तथा भाषा की दृष्टि से उत्पन्न होने वाले व्यवधानों को समाप्त करते हुए, विभिन्न विषयों के बीच चयन की स्वतंत्रता देकर विद्यार्थियों को मानसिक रूप से जिस तरह की स्वतंत्रता देता है वह न सिर्फ चली आ रही रूढिवादी, जटिल तथा कठोर व्यवस्था को तोडेगा बल्कि छात्रों को एक ऐसी अभिवृत्ति प्रदान करेगा जिससे वे शिक्षा के प्रति एक सहज दृष्टि से देखेंगे और इसका परिणाम अंततः शिक्षक के प्रति उनके समर्पण, उनकी सोच तथा उनके व्यवहारों को प्रभावित करेगी। अतः यही वह मौका है जब शिक्षकों को बीते हुए सभी बुरे अनुभवों तथा व्यवहारों को भुलाकर एक नई शुरूआत करनी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पूरी स्पष्टता के साथ समाज में शिक्षकों की कमी तथा शिक्षकों की गुणवत्ता को स्वीकार करते हुए एक निश्चयात्मक तरीके से शुरूआत करती दिखाई पड़ती है। अतः 21वीं सदी का शिक्षक जिसे कई मापदंडों पर खरा उतरना है, को भी अब यह चिंता करनी होगी कि तमाम तरह के संतुलन बनाते हुए कैसे वे देश के विकास को, देश के भविष्य को तथा आने वाली पीढ़ियों को संवारने में अपना बहुमूल्य

योगदान देंगे। यह चुनौती, और भी अधिक बढ़ जाती है जब शिक्षकों से तकनीकी ज्ञान, शिक्षणशास्त्र का ज्ञान तथा विषय वस्तु का ज्ञान समान रूप से रखने की अपेक्षा की जाती है। शिक्षक दिवस, राष्ट्रीय शिक्षा दिवस इत्यादि जैसे अन्य महत्त्वपूर्ण दिवस हमें यह सोचने, विचारने, चिंतन करने तथा निर्णय लेने में ना सिर्फ एक प्रेरणात्मक मदद करते हैं बल्कि एक रचनात्मक मदद भी करते हैं। अतः 2020 में जब हम बहुत सारी तरह की परेशानियों के मध्य से गुजर रहे हैं, जब हम विश्व की एक बहुत बड़ी महामारी के दौर से गुजर रहे हैं, जब हम एक लंबे समय से अपने घरों के अंदर बंद हैं, जब हमने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में हमारे मौजूदा चाल चलन से इतर एक वैकल्पिक व्यवस्था को ना सिर्फ देखा है, बल्कि महसूस भी किया है, ऐसे कठिन समय में आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समय में पडने वाले शिक्षक दिवस पर एक व्यापक चिंतन किया जाना समीचीन मालूम होता है। यह चिंतन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की उद्घोषणा के बाद भारत के प्रधानमंत्री ने देश के शिक्षकों के कंधों पर एक बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है। यह जिम्मेदारी शिक्षक तभी पूरी कर पाएंगे जब भारत के सभी राज्य अपनी-अपनी संकीर्ण राजनीतिक आकांक्षाओं से ऊपर उठकर न सिर्फ एक राजनीतिक पहल करेंगे बल्कि भारत के आने वाले भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए शिक्षकों के ऊपर विश्वास कर उन्हें उनके दायित्व का निर्वहन करने के लिए मुक्त छोड़ेंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रतिपादित सबसे महत्त्वपूर्ण कदम शिक्षक शिक्षा में आने वाले छात्रों की गुणवत्ता को लेकर है, जिसे यह नीति छात्रवृत्ति के माध्यम से भी संपोषित करना चाहती है। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की वह चिंता जिसमें शिक्षा को एक पेशे के तौर पर ना देखे जाने की प्रवृत्ति पर भी यह नीति कार्य करती दिखाई पडती है। एक आशावादी सोच रखते हुए, आइए हम सब यह उम्मीद करें और इस शिक्षक दिवस पर एक राष्ट्रव्यापी चर्चा करें, शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में शिक्षक शिक्षा, शिक्षक, शिक्षक के प्रति दृष्टिकोण, शिक्षकों का समाज में सम्मान, शिक्षकों का उत्थान और इसके परिणामस्वरूप होने वाले भविष्य के कायाकल्प पर अपनी समझ नीति नियंताओं के साथ साझा करें, शायद यही इस शिक्षक दिवस-2020 को मनाने की सही रीति होगी।





कोई भी संस्कृति जीवित नहीं रह सकती यदि वह अपने को हम दबाव से अनुशासन नहीं सीख सकते।



लौट आ ओ धार!

(शमशेर बहादुर की स्मृति में)

सोनू कुमार ठाकुर एम.फिल. हिन्दी शोधार्थी



में काम पर लौटना चाहता हूँ जैसे कविता लौटती है अपने पाठक के पास मैं जाना चाहता हूँ फिर से किताबों के जंगल में चुनकर ला सकूँ कुछ सुंदर जंगली फूल ओस की बूंदें कोयल की मौसमी आवाज़ का जादू जैसे बुढ़ापा लौटता है जवानी की मधुर यादों में मैं पाना चाहता हूँ वही विश्वास असीम संभावनाओं से भरी ऊर्जा खेलकर लौटे बच्चों की उजली शाम माँ की आँखों में अपने लिये चमक बाबा की झिडकी में प्यार दीदी के आँसुओं में नमक जैसे हवा की गोद में धूल पाती है जिंदगी यहाँ-वहाँ उडने की चाहत लिये।

मौसम खुश्क है आँखों में नमी नहीं भारी दोपहरी गोद में बीमार बच्चा हाँफ रही है औरत सामने डॉक्टर की क्लिनिक बंद है कोई खुलकर सामने नहीं आता

भरी सडक पर खाली लोग मुँह उठाये जा रहे हैं क्षितिज के पार ऐसे में मैं भी अकबकाया हूँ थोडा-थोडा बीमार एक बगल में बैठी औरत हिसाब-किताब वाली बड़बड़ा रही है अपने रिश्तेदारों संग चालीस रुपये किरासिन तेल बाईस रुपया गोटी दवाई पाँच रुपया छोटका बउआ बिस्कुट एक भी रुपया नहीं बचा गाल फुलाकर बैठ गया है पोता। जहाँ भी जाता हूँ अपने संग लिये चलता हँ कविताओं से भरा रेतीला बोरा उसी बोरी में पाब्लो नेरुदा हैं जिसके 'कैण्टों जनरल' पर फिदा थे चे-ग्वेरा सामने फर्श पर मिक्खियाँ भिनभिना रही थीं खोलता हूँ बोरी का मुँह बिखर जाती है फर्श पर कुछ रेतीली यादें पाब्लो नेरुदा, नाजिम हिकमत, केदारनाथ सिंह सब के सब संग में अरुण कमल भी वहीं बैठ गए हैं हमारे साथ क्लिनिक खुलने के इंतजार में।

सामने की पहाड़ पर मुँह बाये चट्टानों से दाँत में फँसे तिनके की तरह निकल आये हैं छोटे-छोटे घास जिनमें छुपा बैठा होगा कई शताब्दियों का कीड़ा मेरी कोशिश है यहाँ से भागने की पैरों ने जवाब दे दिया है न मेरी हार हुई है





भूल करने में पाप तो है ही, परन्तु उसे छुपाने में उससे भी बड़ा पाप है।





न ही जीत का स्वाद चखा है बीच में ही कहीं अटका हुआ गले में फँसा हुआ है मछली का काँटा निगलने को भात के लड्डू केले की कतरन कुछ भी तो नहीं है पास में।

मैं वापस जाना चाहता हूँ
विचार की भीड़ में
कंधा टकराने
गलबहियाँ डाले बातें बनाने
जहाँ सड़ांध भी हो तो
सफाई लिये हुए
मुझे उड़ने दो
विचार के जंगल में
बाहर खुले आसमान में
गुलेल लिये बैठे हैं हजार शिकारी

मुझे मत मारो सादगी के सौदागरों मुझे मत घसीटो अनुशासन के फर्श पर मुझे मत लपेटो आदर्शवाद के कंबल में

मुझे डूब जाने दो जैसे डूबती हैं नदियाँ समुद्र में।















गुलाब को उपदेश देने की आवश्यकता नहीं होती है। वह तो केवल अपनी खुशी बिखेरता है। उसकी खुशबू ही उसका संदेश है।



संविधान दिवस समारोह

26 नवम्बर 2019













गाँधी भवन उद्घाटन समारोह

9 दिसम्बर 2019









संकाय अनुप्रेरण कार्यक्रम

13 - 20 जनवरी, 2020









केविवि के मीडिया अध्ययन विभाग में स्नातक 'पत्रकारिता एवं जनसंचार' पाठयक्रम शरू

प्रतिनिधि । मंतिसरी

मात्रमा गांवे बेडोव विश्वविद्यालय में साम १९९० है। के लिए प्रोठा और संप्रत क्रांच हो एके हैं, 2 जुलाई में अनिलंहर एसोबेशन क्षेत्रे क्षत्रे के लिए विश्वविद्यालय पर चेटेल एक किया है. रिजीवास्तर में यूने, फेर्क, एम्पिन और वे एवं ही समेत बुत का होता में एडमिशन के लिए 31 जूनकों तक अनिनक्षत्र पार्टि को जाने जो करने शाबें के लिए एक संख्या अवसा है जो प्रवर्कत भी जलांचा वो प्रदर्भनान भागों हैं, मेरियर अध्यक्त विश्वन में चे ं यूजी, पीजी, एम फिल प्रीर पीएवडी समेत कृत 67 प्रोगाम में प्रवेश की लेकर आवेदन शुरू

🗅 ३१ जलाई तक होगा प्राप्ताई

कर जनावा से साथ हुए को से कर नहां चलाक्रम वी ए एकालील एवं अन्तरेका goe it in it is troffice we रिवर्डवेरी के लिए केरण विकास है जे अस्य ४एए ने चलाव कि नवाका संबंधे रेकियी क्षेत्रकार का महिला अववन रच ही, एम फिल और एम ए परवर्तात जिल्हार तरती में परवर्तात जिल्हा का

मेर्जिया और नक्त्रोशी भीतन रीवें विकास बार्स को द्वा संबक्तित है क्षंप्रभ में मंदिय अध्यक्त विकास मंत्रिको के बहुआ क्षेत्र विक्री देश दवन राजवाद क्षीमा में संपर्धन हो तह है. मेरिया अन्याम विश्वत मे विश्वविक वर्ष 2020-21 में नामका भी लेकर में एवं ही में 30 मीट एम फिल में 10 मीट, एम ए (पामारिक एवं जनावार) में 33 सेंट और वी वः (पत्रकारित वर्ष असरियाः) में 53 air; f. fault for union store कर है. अबेटर देश महत्त्व शंखें केंग्रेड विकास के विकास पर अवस्था

प्रभात खबर, 09 जुलाई, 2020

MGCU to adopt five villages for growth

SOCIAL RESPONSIBILITY A team of professors will undertake a survey of socio-economic condition of villages for their growth



ऑनलाइन सामग्री उपलब्ध नहीं होना चिंता का विषय

मोविसरी. व्यात्म गांधी केंद्रीव विश्वविद्यालय के कंप्यूटर विस्तान विभाग द्वारा व्यास्त्राम नृंशाना का ईटीवीएपएस का शुधारंभ शनिवार को हुआ, उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति थे. संजीव कुमार शर्मा ये व मुख्य बना अवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के भी. ये विश्वव कृत्वर थे. कुल्पनि ने कंप्यूटर विज्ञान विभाग को ऐसे कार्यक्रमी को सार्थक बनान के कुछ चिद् रखे. उन्होंने कंप्यूटर के निरंतर बंदले प्रवोग के बाजजूद कई विश्ववी पर उपत्रक सामग्रे ऑन्स्ट्रिन उपलब्ध न हो पनि पर चिता जलाहो. उनका मानम है कि मधुबनी करता, लोगी, सत् और स्थानीय विश्ववी पर प्रसारिक व राजक लेख ऑगलाइन डाले जार्ये तो अनिलाइन सामारी का दायरा और व्यापक में सकेश. मुख्य बस्त्र ने हिट सहोग व मनीन लर्निन को कुनवादी बातों पर प्रकात हाला. कार्यक्रम के शुभारंथ में विभाग के यह अचार्य जी पत्रन चीर्गयात ने अतिथियों का रचागत किया, विभागान्यक हो विकास पारीक ने इस कार्यक्रम सह परिचय दिया विभाग के हाँ मुनील कुमार सिंह ने मुख्य जन्हा का परिचय दिया. इसके बाद संकाराध्यक्ष हो, जनग कुम्बर भयत ने विभाग को इस आयोजन के लिये शुभकागना थे. कार्यक्रम में शुभम कुमार हाँ जुगल किशोर उपस्थित व

केविवि के छह विद्यार्थियों का हुआ प्लेसमेंट

मोतिहारी. महारमा गांधी बेंद्रीय विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थियों का चडन चैतन्य इंडिया फिल क्रेडिट प्राइवेट लिमिटेश कंपनी में ब्रांच मैनेजर वे पद पर हुआ है, इसमें प्रबंधन विज्ञन विभाग के शैलेंद्र रंजन, आंराम कमार व ऑपेंट राज और समाज कार्य विधान के शांबंद्र प्रसाद कुलावात, दिवाकर कुमार सिंह व प्रकाश कुमार राय शामिल है कुलवति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने राज्ये को सफलना पर बधाई दी है, उन्होंने कार कि विधि के अन्य विद्यपियों को थम सरकानक से फिरण लोगी पालिए वर्ती प्रकारन विकास विभाग के अध्यक्ष घो. प्रवनेश कुमार ने विद्यार्थियों की इस सफलता पर प्रसन्तता जताते हुए विधानियों के परिवास और एमबीए व एमएसडब्ल् पाटकामों के अध्यपकी के कुशल मार्गदर्शन को इस सफलता ना श्रेय दिया. मामजिक विज्ञान संस्थाय के अधिकात प्रे. राजीय कुमार, समाज कार्द विभाग के अध्यक्ष हो एम. विजय कुमार शर्मा, सहायक प्रोफेसर हाँ अनुपम श्रमार वर्मा, उपमेश तालवार, व्हें रिस्मता राय, प्रबंधन जिल्लान विभाग के ध्रीफेसर मुचीर कुमार साह्, रक्ष प्रेफेसर डॉसपना मुगंधा, सत्तवक जेनेसर डॉ स्वाति कुमरो, डॉ अल्का ललाल, कमलेश कुमार समेत विवि के अन्य विक्रकों. अधिकारियों य कर्मचारियों ने छात्री की

केविवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्टी आज से

महातमा गांची किर्दाय विश्वविद्यालय के राजनेति विज्ञान विध्यय एवं भारतीय राजनीति विज्ञान परिषट के संबक्त तस्त्रवधान में 'धारतीय माम्बासीन राज्यसम्भा और अधिकासन विषयक से दिससीय राष्ट्रीय क्रेब मंगोची का आशीवन 27 एवं 29 जनर्श को होगा.

इस ही दिवसीय राष्ट्रीय संगोध्ही की आजधान महत्त्वा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति हो मंजीव कुबार जर्मा करेंगे. संगोध्हों में मुख्य वर्तनीय एवं वास्तवी वे लेखा गांची राष्ट्रीय जनजातीत विश्वविद्यालय के कुलपात प्रोफेसर ओडकाल मापि विकारी, नार्थ बंगाल युनिवसिटी के पूर्व कुलपति प्री समीर कृतार साथ केरान केरीय विश्वविकालय के कुलपति प्रेपेसर जी,गोद कुमार, पारतीह राजनीति विद्यान परिषद् के अध्यक्ष हो के जग्रहमार ओसमानिया यूनिवासिटी विद्याबाद के

ofestión matem a भागंकारी कुलाति हो चंडकोत एम. बारान्त, इलायबाद विश्वविद्यालय के मानव संसाधन शिकास केंद्र के निरंगक यो एच के शर्म क्रिजेस्क सन्दिशीरों पिजीस के प्रति करणाति प्रो जे के पटनायक, भारतीय राजनीति विज्ञान गरेवद् के पूर्व अध्यक्ष क्री अगल विश्रोत मिला, नेशनल युक राट के चेतारीय के चेतिर प्रवाह शर्मा, हिमान्तन प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के कुलपति हो गर्नेड सिंह चीतान आदि शामिल देवि, मातला and leite fourteeren is musto विज्ञान विभाग के अध्यक्ष वर्ष ग्रामान विज्ञान संबाध के अधिष्टाला एवं इस संगोधी के निदेशक प्रेराजीय कुनाis upone the sample constraints management after afference figure पर आवेतिम इस हि-दिवासीय राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग से रहे. अतिथियों के साथ प्रतिभाषियों के द्वारा शोध पत प्रकार किया जाएवा

भारतीय स्त्री विमर्श का सिद्धांत अधिकारों से अनुप्राणित कर्तव्यों पर आधारित है : प्रो. शशिप्रभा

मोतिहारी महात्मा गांधी केंद्रीय विवि के संस्कृत विभाग की ओर से सोमवार को स्त्री-विमर्श विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इसकी अध्यक्षता विवि के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने की। बतौर मुख्य अतिथि सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, मध्यप्रदेश के प्रो. शशिप्रभा कमार ने वैदिक वाङ्मय में स्त्री-विमर्श पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसके अलावा वक्ता के रूप में उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपित प्रो. महावीर अग्रवाल ने धर्मशास्त्र में स्त्री-विमर्श पर अपना व्याख्यान प्रस्तत किया। विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. मनलता शर्मा (अध्यक्ष, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) ने संस्कृत साहित्य में स्त्री-विमर्श विषय पर अपना वक्तव्य दिया। मुख्य अतिथि प्रो. शशिप्रभा कुमार ने कहा कि वैदिक वाङ्मय में स्त्रियों का स्थान सम्मानजनक व प्रतिष्ठित था। भारतीय स्त्री विमर्श का सिद्धांत अधिकारों से अनुप्राणित कर्तव्यों पर आधारित है। संगोष्ठी का संचालन डॉ. विश्वेश ने किया। इसमें डॉ. श्याम कुमार झा, प्रो. राजीव कमार, प्रो. राजेन्द्र प्रसाद आदि मौजुद थे।

कार्यशाला शुरू

मोतिहारी, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय बिहार के अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित पांच दिवसीय साहित्य और संस्कृति विषयक कार्यशाला मंगलवार को शुरू हुआ , कार्यशाला का उदघाटन जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली के पूर्व प्रो , वाइस चांसलर प्रो , कपिल कपूर ने किया . प्रो कपूर ने साहित्य और संस्कृति पर सार्वक वर्चा की तथा शोध और अनुसंघान को बदाने पर जोर दिया , बनारस हिंद् विश्वविद्यालय की प्रो. अनीता सिंह ने परफॉर्मैंस ऐंड रेडिकल इंटरवेशन पर अपना वक्तरव दिया. डॉ नीरजा ए गुप्ता, प्रधानाचार्य भावंस आर्ट एंड कॉमर्स कॉलेज अहमदाबाद ने भारतीय नटय शास्त्र तथा भाव और रस के सिद्धंत पर अपना वक्तव्य दिवा , कार्यशाला की अध्यक्षता कुलपति प्रो , संजीव कुमार शर्मा तथा अतिथियों का स्वागत झें बिमलेश कमार सिंह ने किया ,वहीं कार्यक्रम का संचालन डॉ.उमेश

स्थानीय विषयों पर डालें ऑनलाइन रोचक लेख

महात्या गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर सिकान विचान के बाद एक नवे व्याखात शंक्रत का इंटीसीएसएस का शुभारं प शनिवार को हुआ। इसके समन्वयक हाँ विभिन्न कुमार ने बताना आयोजन के संबंध में चर्च करे।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपीत दी मंत्रीय कमार समी व मुख्य लक्षा अवहर लाल . नाम विस्थविद्यालय के प्रो दो विजय कुमारथे। कार्यक्रम के आरम्प में विभाग . साह आचार्च डॉ पबन चौर्तसमा ने अतिवियों का औपपारिक स्वागत किया। विभागान्यक प्री विकास परीक ने इसकार्वक्रमका परिचयदिया।विभाग के डॉ युनील कुमारिक्ट ने मुख्य सब्ता का परिचय दिया। इसके चंद संकाय तथ्यक्ष हो अरूप कुनार भगत ने विधान को इस आयोजन के लिये सुभवरमना दे। कुलपति हो संजीव कुमार गर्मा ने कम्प्यूटर के निर्मात बदले प्रयोग के

- इंटा सहन्त व मशीन लॉनेंग की बुनिवादी बातों पर हाला प्रकाश
- लर्निंग के विविध प्रकारों को विस्तार है समझाता

बावजद वर्त विषयों पर तपयवत सामग्री ऑनल्डन उपलब्ध न हो चने पर चित्र व्यक्त को। इस दिला में उनहोंने पालीन भाषाओं व लोकोपवोगी स्वानीग किस्से पर सामग्री निर्माण की आवश्यकता पर बलदिशाः। उनका मास्य वाकि मधुबने कला, तीचाँ,सत् जैसे स्थानीय विकर्षे परप्रामाणिक व रीचक लेख ऑनलवन हाले जावें तो ऑनल्झन समग्री का दायर और व्यापक हो सकेगा। मुख्य बन्त हो दो वो विजय कमार ने हेटा साहमा व स्त्रीय लॉमेंग को समिखदी बातों पर प्रकास डाला। इसके बाद उन्होंने लर्निंग के विविध प्रकारों को समझायाः इसन्देशनः विद्यार्थे, क्रिप्रक व श्रीधार्थी कार्यक्रम में मौजन हो।

राष्ट्रीय सुरक्षा के बारे में सचेत रहने की जरूरत है

केविवि में करमीर मुद्दे पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

स्कृतेका रिवेटर गाँउको

केंद्रीय विथि के जनसंपर्क प्रकीश्च की और में पास अस्तिका जाय-कवर्षा और बर्गासन्तर जात है अपन अग' प्रियम पर बार्ट्रम संब मोप्ती अमीतित की मी इसकी अभावता कुलपीत हो। संजीव रूमा रूमा ने की।

कुलाबीर ने कहा कि इस तम के राष्ट्रीय पूर्व पर वेहित सम्बागिक विषय पर वर्गों के जिल्ला एवं प्रमासीकारों के बीच से तने के रेना मदेव नेवर हैं। इस परन्तरर्प विकार को जिल्लानियालय ओ औरक बिस्तर के साथ चर्च के लिए अप्रधान असे को प्रशिवद है। प्रे. प्रभी ने बतमा कि राष्ट्रीय मुक्ता के बारे में हमें मानेत रहने की जरूरत है। एंग्रेसी के मुख white proper forms were इस्ता ने पता कि यक अधिकृत बदावीर पर पत्रिकातन का अरीच बक्तो है, जो भारत का अर्थना

प्रस्ता है। सबसे उसे जन्म श होने से इसका स्वमारक महत्व है। उन्होंने बहा कि पवित्ततान ने चीन SHOW YOU SHOULD WIND WAS A को प्रशास सबसे विस्ता है है। इसके अलाब एकएअएएनस्स के स्ट्रीय कार्याच्य केन्द्र बिको ने भी अगन्य विश्वय पश्च । इसमें शहरे वेस मंगेष्ट्री के निर्देशक और जनसंबर्क प्रशेष्ट के प्रमुख थे, प्रवरंश कुमार

ने अरिवियों का स्थापत किया। सार्थकार में हो असराम आगा, र्ख, अध्य विक्रम देख, र्डी प्रसंद कुमर, है, सुरीत महाझ र्च. जुन्न वर्षन हो. अंदर्न कुमा कीवसक हो एम विश्व कुम्म गर्म प्रे अनंद करण प्रे. राजिन कमा डी. सरन सुरेव, जी प्रमाना कुमर विश्व सबेत साथ, इं. अस्स, इं. प्रकार रोच्या क्षेत्रक भी स्वर बाद्या, डॉ. आगा मीन, डॉ. बॉट्र कुमता सिंह, जी, दिनेक छक्रम महित्र हव में मौतह थे।

बीरी से अधिकारियों व शिक्षको राज की बैठक

कोर्स वर्क की ऑनलाइन कथाएं शीघ्र शरू करें

SCHOOL SECTION

were no lide trains वे कुल्लीन प्रो. राजेश प्रया राज् भी आजवार में प्रतिन्ता की अप afrege ná afosáhí) si kos अभिन्यून एवं अधिकारी को सेवल हुं। देशक में मित्रकों, उत्पंतन स्थानीकी को स्थान व प्रकार की स्थानीकी के बीच पार्ट, कार्या के संस्थान को पार्टी कार्यों देशकों अभिन्यून के मित्रकों की स्थानका किसी के स्थान प्रकार के सिप्पांत की स्थानका

अगान तथा पूर पर्याप वर विशेष विश्व. बोर्च पार्च को परीवा बाब और बिह्म



कारे का निर्देश निष्ठ ग्रहः तक ही जा में निर्देश हुआ कि उस जीवान गर्ने विकासित के मोबता (दिनेश मूर्ज)

HERW GOT DE THAT AND gifte, then history that the service is a report from other freedings with advantage and advantage and advantage of the service of advantage of the service of advantage of the service of



अनुक्रमणिका

विषयाः	रचनाकाराः	पृष्ठसंख्या
1. सम्पादकीयम्	गिरि अनिलप्रतापः	69
2. आत्मनिर्भराः भवेम	प्रो. प्रसूनदत्तसिंहः	71
3. राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020 संस्कृतञ्च	डॉ. विश्वेशः वाग्मी	73
4. संस्कृतामृतम्	डॉ. श्यामकुमारझा	75
5. विजयतां पुदुच्चेरी (एकं भारतं श्रेष्ठं भारतम्)	डॉ. अनिलप्रतापगिरिः	77
6. गुरुचरितम्	डॉ. बबलूपालः	77
7. गान्धिदर्शनम्ः एकमनुशीलनम्	प्रो. प्रसूनदत्तसिंहः	78
8. गान्धिमहोदयस्य पर्यावरणचिन्तनम्	श्रीविश्वजितवर्मन्	81



सम्पादकीयम्

गिरिःअनिलप्रतापः सह-आचार्यः संस्कृतविभागः



महदिदं प्रमोदस्थानं यत् महात्मा-गाँधी-केन्द्रीय-विश्वविद्यालयेन वार्षिकपत्रिकेति नाम्न्यस्यां पत्रिकायां हिन्दी-अँग्रेजी-भाषाभ्यां सह दैवीवाचि संस्कृतभाषायां रचनात्मकलेखाःअपि सर्वाङ्गीणरचनात्मककौशलविकासार्थं स्रभारतीसम्पासकेभ्यः ज्ञानपिपास्भ्यः अभ्युदयनिःश्रेयसाधिगमार्थञ्च प्रकाश्यन्ते। पत्रिकेयं शास्त्रीयरचनाभिः सह समकालिकविषयाणामुपरि नवनवोन्मेषशालिनीप्रज्ञाप्रतिभया नवाधुनिकभाषाशैल्यां मौलिक्यःरचनाः प्रस्तूय सहृदयान् साधारणीकृत्य ज्ञानसहितरसानन्दमाविर्भावयन्ती ज्ञानविज्ञानात्मिका संस्कृतभाषेयं शाश्वती सनातनी तथैव नवाधुनिकी भाषा चेत्यपि प्रमाणीकरिष्यितीति मे दृढविश्वासः। अस्मिन् अङ्के मुक्तच्छन्दसा एकं भारतं श्रेष्ठं भारतमिति शीर्षके या रचना सङ्कलिता अस्ति यस्यां भारतराष्ट्रस्य पाण्डिच्चेरीकेन्द्रशासितप्रदेशस्य दिव्यमतीतं भव्यं वर्तमानञ्च वर्णितमस्ति। "भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा" इत्यनेन वाक्येन प्रमाणी भवति यत् ज्ञान एव अहर्निशं रतस्य भारतस्य प्रतिष्ठा सम्पूर्णे विश्वरिमन् संस्कृतेनैव भवति । संस्कृतस्य ज्ञानं विना भारतस्य रहस्यं न ज्ञातुं शक्यते। भारतविषयकज्ञानार्णवे प्रवेशाय संस्कृतमेव मुख्यं द्वारं यस्मिन् प्रविश्य भारतस्य वैशिष्ट्यमभिज्ञायते। भारतीया संस्कृतिः ज्ञानमीमांसायाः वस्तुरूपेण सम्पूर्णभारतस्यैकसूत्रनिबन्धनरूपेण च सर्वविधविश्वकल्याणं कुर्वती भोगरहिता योगात्मिका च संस्कृतभाषाश्रितैव, यस्यां मूले वस्धैवकुटुम्बकमित्यस्य संकल्पना अवस्थिता वर्तत एव। अनित्यं मानवजीवनं नित्यम्पुनस्संस्कृतम्। नित्येन अनित्यस्य रक्षणं न त्वनित्येन नित्यस्य, अत एव आत्मना संस्कृतस्य रक्षणविषयकपुराणं पन्थानं परित्यज्य संस्कृतेनात्मानमभिरक्षणमित्येव पन्थाः श्रेयस्करः। प्रसङ्गेऽस्मिन् महाकविकालिदासस्येयं भणितिरपि युक्तियुक्ता -

पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम् । सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥ - मालविकाग्निमत्रम् - 1.2

इत्थं 2019-2020 अङ्कात्मिकां वार्षिकपत्रिकामिमां सर्वेभ्य एव विद्वत्तल्लजेभ्यः सहदयरिसकेभ्यः संस्कृतोपकारिशासकेभ्यः संस्कृतानुरागिभ्यः पाठकेभ्योऽध्यापकेभ्यश्च सादरं सप्रश्रयं प्रस्तुवन् भूरिशः कोटिशश्च वर्धापनं प्रयच्छामि ।

जयतु संस्कृतं भारतीयभाषामूलम्! जयतु भारतीया संस्कृतिः! जयतु अखण्डं भारतम्!

गणतंत्र दिवस समारोह

26 जनवरी 2020













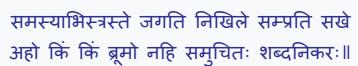




आत्मनिर्भराः भवेम

(इयं कविता केन्द्रीयसाहित्य-अकादमी, दिल्ली द्वारा आयोजितायां कविसंगोष्ठ्यां प्रवाचिता)





क्वचिद्हारोगाणां प्रबलतमकोपः प्रसरति अतिक्रान्ता भवति परराष्ट्रैर्हिमगिरौ॥

वयं निष्ठावन्तो धृतिमतियुताः कौशलपराः स्वयं नैर्भर्यं स्यात्प्रतिपदमहो उज्ज्वलमिह॥

मुखं वस्त्रेणैवं भवतु परिवृत्तं प्रथमतः करौ बारम्बारं कृमिहननकैर्निर्मलतमौ॥

विना कार्यं बन्धो ! निह बिहरहो गच्छ नगरम् गृहे तिष्ठन्तो भोः स्वकुशलतया कार्यगृहजम्॥

वयं कृत्वा नूनं विविधविधिभिः कर्मसकलम् स्वदेशं रक्षित्वा भुवि विजयिनः स्याम सुमतम्॥

समस्याभिस्त्रस्ते जगति निखिले सम्प्रति सखे अहो किं किं ब्रूमो निह समुचितः शब्दिनिकरः॥

मीडिया ने हर संकट का किया है चुनौतीपूर्ण सामना

मोतिहारी विज प्रतिनिधि

महात्मा गांधी केंद्रीय विवित्र के बिहार के मीडिया अध्ययन विभाग दारा 'आपदाकाल में पत्रकारिता का राष्ट्र धर्म' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस राष्ट्रीय वेब संगोध्टी की अध्यक्षता कर रहे महात्मा गांधी केंद्रीय विवि के कुलपति प्रो. संजीव कमार शर्मा ने कहा कि आज सबसे व ही समस्या जनसंख्या विस्फोट है। पत्रकारिता के माध्यम से इस गंभीर समस्याओं को उठाने का कार्य सर्वोपरि होना चाहिए। आज कोरोना संकट ने हमें यह बता दिवा कि आपदा का कारण जनसंख्या भी है।

बतौर मख्य अतिथि भारतीय जनसंचार संस्थान, दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय हिबेदी ने कहा कि भारतीय मीडिया ने हर संकट का चुनौतीपूर्ण सामना किया है। आपदा काल में संकटों से जुझने का अध्यास किसी को नहीं है। इन संकटों में राजनीतिक अवसर भी तलाशे जाते हैं। आज देश की बड़ी आबादी भी एक संकट है। उनके अनुसार पत्रकारिता के नाम पर किसी खास विचारधारा के प्रचर को रोकना अत्यंत जरूरी है।

मुख्य वक्ता के तौर पर पत्रकार

बोले कुलपति

- आज सबसे बडी समस्या है जनसंख्या विस्फोटः कुलपति
- पत्रकारिता के माध्यम से गंभीर समस्याओं को उठान सर्वोपरि

हितेश शंकर ने कहा कि भारत के संदर्भ में आपदाकाल को देखें तो कम से कम तीन ऐसे आपद काल हुए जब पत्रकारिता की अग्निपरोक्षा हुई। पहला - स्वतंत्रता आंदोलन, दसरा- 1975 का आपावकाल और तीसरा-कोरोनाकाल। अगर हम इतिहास देखें तो जब देश में संकट आया या जब समाज को जगाना हुआ तो पत्रकारिता हो एक सफल माध्यम बना। 1975 के आपातकाल को 1971 से देखना चाहिए। मीडिवा के छात्रों का मार्गदर्शन करते हुए उन्होंने कहा कि अगर आप पत्रकारिता ग्लैमर और चकाचौंध के चक्कर में कर रहे हैं तो इस क्षेत्र में न आएं। विवि के मीडिया अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रशांत कमार ने सभी अतिवियों एवं प्रतिभागियों का आधार व्यक्त किया। संचालन डॉ. अंजनी कमार इव व धन्यवाद झपन मीडिवा अध्ययन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर

कार्यक्रम 🔾 कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने की सराहना, आगे भी वेबिनार कराने पर दिया जोर

'उद्यमिता, चूनौतियां और अवसर' पर वेबिनार

मान्यमा वर्धी केविय विश्वविद्यालय के प्रकंप विकास विभाग हार जरिवार को भीवतः १० के बद्ध सहीताः स्ट्रेस्ट्रा और आवार' दिवस पा ऑक्स्ब्राइन वेविका स्ट असो उनकिया गाउ

हम अरोजन में उसीना जिल्हा गंस्यान, आग्नद्रश्नद के डॉ आसीप पटनार, प्रीवर गांची राष्ट्रीय जनवारीय Softmore stories is all give ग्राम जो क्या और पीडीए मद्दम, व्यवस्थि के द्वी वक्षक्रमा सिंह प विशेष भगे विश्वविद्याल, आहोर वे जो सरोज रोका में करीर विशेषत



बतात कि बोरान एक देविक मंतर है इससे बात में नमें इसके के उसन देश कुर से हैं. यो राज्युनार तिले ने अस्य वि हा राज रेजन मर्चवर में की निर्देश भी भीतान हैं. ही शिक्ष हमफ पहें ने भूगा कि शर समय सम्बद्ध को यह संबंध जिंत जाने की संबंध

माध्यम हिल, वह आक्रीय बद्धानमा ने - है, जिस के सलाबी हो, पोतीन प्रमार शर्म ने प्रसंदर विजय विभाग हार आवीं का इस विकास की सर्वाक काले हुए महाला की और विश्वमान्यत है। प्रकार कवा में आहे भी हुए तरह के देविका असोतित करने के जिए करते. विवास के आद्या हो। एवंका क्रमर ने इसकार्यक्रम को बहुत है सरस्त करावा. आवेज्य संघ्य हो अस्य तस्त्रत ने

ऑनलाइन पढ़ाई कर रहे पीजी के छात्र

नक सारमण्य राज्यों ४५ आने स और नक प्राट्सप्य पुण्य २० व्या केसपुक राज्यसम्बद्धन पर एक दर्जन

र्राश्चीयक वीचियों उस्ते गा पूर्व है.

अपने एक बढ़ बार्ड तक लॉक्ज़रन

शक्ता को जो अभी तक गुरू से नहीं

बर १६०७७७९७० गर नामक र पर्वी

जुड़ घर है, ऐसे गार्च को मोबाइत

विस्तार की देखते हुए उस सभी

की फोरंपने बंग दे

व्यर्ध का तक तथा ते रहे हैं. विश्वविद्यालय के इतिहरून विश्वन के विभागायमध्ये , अनीः कुमार ने ऐसे विक्रीन करें कर कहा कि स्नतद्योत्तर स्वरीय छता- छात्राज के लिए हाए सहय हुए का के सबूक टक्क्य बाद कर बात अधित से निवामित वराय रामनिया अली जा स्वीते आधी

मार्चाम का मंत्रासन किया, जी स्वति

निवारियों और रिपम से जुड़े चिरिएकों मनेश ने वर्त संस्था में हुए अवादकों, का वनवार तपन किस

22.0° 9.02°

मोतिहारी जागरण

सहकारिता का आंदोलन बेरोजगारी दूर करने में सक्षम : सतीश

वर्षाताचे में महत्वपाता जा महत्वपूर्व रोजान रहा है। जान भी भारत के करेंच 60 से 70 प्रतिशा अनता संसादनें जो कर्ष ने शुरू को है। गारी के साथ छड़ने क्षेत्र में भी गाउंचे क्यों है। ऐसे में सम्पोर्ट क्रिक्ट के तिम् सर्वेद्रतिकः स्टाब्यूपी भूमिका रिच्यं सन्दर्भ है। प्रस्त आरो स्वर्धान front during Artist shift in Driven मार्थन नवती ने पराच्या गांधी निर्देश विकाम विकास के मंद्रिया अवस्था विना हर अमेरिता राष्ट्रीय परेसरता में बढ़ी। वो गरारी से बारा कि सरकार है। क्रांसन से प्रियमित्र की समस्य से विपदने के तिल सहस्रातित को आरोतका



वेदीति में अस्तिमा नवार्यने निवासको नेपानको नेप्यूदिकोतिक संस्ति में मुख्यासाम् कर्षे व दूसने सर् स्वादी क्रीका कैतिका क्राँको अस्ति संस्ति कृतिकोतिक संस्ति कृतिकारी स्वादिक

to an it went at appearant when eacher the retire it and है। इसके जिल्हा कृषि अक्टबरिश वर्धाः जगानवा है। परिस्तवार का सुधारं वा इक्टिरेशन की आमाने की केंद्र व राज्य जाति के वित्र पर साध्ययंत्र कर और सामानों को अध्यक्तकता है। इनके लिए। योच प्रश्यतिक बात लिया गया। इस पानप से सर्वावित कर विना Scotte : char challen

गर और संग्रंका बार में सहकारिय को परिचारित करता है। करायी

विश्वविद्यालय में अन्तर्वारिक रक्ष्मीय परिशायक में बरावाओं में रसीअभी स

ufforger on flow, parky save on के अला करार भाग ने बता है।

विशेष अधिक व प्रदेशन अपने दे बिटार प्रत्य के अनुधा रीमक चौनीसव वे बारा कि जानाराया के समाप्ता से \$1 semient we if figuriations is पुरस्पति हो, सारोच कुमार सामी ने प्रकृत कि पर और सम का चंद्रकों स्थावतील को परिचालित करता है। बरोबान में देश ik turka din ili ditermi di ina के विद्याविकालयें में ही लगावा बाव बाल लाख रिवेलको हैं। बार परिवरण में मानारेत भागे विद्यार योग्या मा Police are no Ry Mile or drivers diene frage ube if, alreb कुमार झा सहायक प्रोतेकार उपलेखा है।

वेबसाइट,यू-ट्यूब व फेसबुक से जुड़े रहें छात्र

मोतिहारी विज प्रतिनिधि

महात्मा गांधी केन्द्रीय विरुवधिद्यालय के कुलपीर प्रो. संनीव कुमार शर्मा ने लॉकडाउन की स्थिति को देखते हुए छात्रों से विश्वविद्यालय के आधिकारिक वेबसाइट, यू-ट्यूब, टवीटर हिंडल, फेसबुक पेन आदि से नुडे रहने का अखान किया है।

उन्होंने बयान जारी कर कहा है कि छात्र अपने शिक्षकों को फोन, मैसेन आदि के माध्यम से अपनी जिज्ञासाओं व प्रश्नों को लेकर कांटेक्ट में रहें। उन्होंने बड़ा कि छात्र अपनो किसी भी समस्य के समाधान के लिए उनसे संपर्क करने के लिए स्वतंत्र है।

बोले कुलपति

- शिक्षकों से फोन व मैसेज के माध्यम से प्राप्त करें जानकारी
- यू-ट्यूब पर उपलब्ध करावा गया है ई-विमर्श

अधिक समय से विश्वविद्यालय परिसर में कक्षओं के स्थिति होने से उत्पन अमृविधा सेथे पूरी तरह अवगत हैं। उन्हें छात्रों के अध्ययन व अनुसंधान की भी अत्यंत चिंता है। इसलिए वे खुद नियमित रूप से शिक्षकों से संवाद करते रहते हैं। साथ ही उन्हें ऑनलहन माध्यमें से छात्रों से निरंतर संपर्क के लिए प्रेरित करते रहते हैं। उनके अनुसार

सी में अधिक सम्राह से अधिक देविनान उपलब्ध समय से बिवि में कराये गर्वे हैं कक्षाएं है स्वर्मित

अवधि में गुरल हैंगआउट, जुम आदि अनेक ऑनलाइन प्लेटफार्म का सम्बन्धत उपयोग कर हाओं के पाठवक्रम व अध्ययन से संबंधित सामग्री उन तक पहुंचाने का प्रवल किया है। अनेक शिक्षकों ने युट्यूब परई-विमर्श बोजना के तहत व्याख्यन प्रसारित किया है। विञ्चविद्यालय की वेबसाइट पर भी सी से अधिक पावर प्वाइंट प्रेनेटेशन

उपलब्ध कराये गरे हैं।

केविवि की अपूर्वा टीसीएस के ग्लोबल कोडिंग कंपीटीशन में विजेता

स्रोतिहारी, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कंप्यूटर विज्ञान विभाग की छात्रा अपूर्वा राज टाटा कंसल्टेसी सर्विस द्वार दिल्ली में आयोजित कोडविटा के विजेता दल की सदस्य हैं. कोडविटा का आयोजन टीसीएम विश्व स्तर पर करती है और कड़े मुकाबले और अनेक चरणों के बाद विजेता चुने गए, कंप्यूटर विज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो. विकास पारिक ने बताया कि उन्हें टीसीएस से इसकी सूचना इमेल द्वारा प्राप्त हुई है, उन्होंने बताया कि अपन्नों विजेताओं में से अकेली महिला हैं, विश्वविद्यालय के कलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने इस उपलब्धि पर अपूर्वी, केयूटर विज्ञान विभाग के सभी शिक्षकों व विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्वों को बधाइं दी है. a soft शिक्ष

जीवन की कोई परिभाषा नहीं होती : बीके पुनिया



2-0 की हुई श्रीरुआत

उनके अनुसार विवत तीन सन्ताह से विश्वविद्यालय के कई शिक्षकों ने इस

राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020 संस्कृतञ्च

डॉ. विश्वेशः वाग्मी सहाकाचार्यः, संस्कृतविभागः



"भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा"

स्वतन्त्रभारतस्य शैक्षिक-इतिहासे प्रथमेयं शिक्षानीतिः या सनातनभारतीयज्ञानपरम्परायाः आलोके सज्जीकृता अस्ति। भारतीयपरम्परायां शिक्षायाः लक्ष्यं भौतिकसुखसाधनामेकत्रीकरणमेव न अपितु आत्मज्ञानं मोक्षप्राप्तिः वा विद्यते। अत एवोच्यते अस्माकं शास्त्रेषु- "सा विद्या या विमुक्तये" इति। नूतनशिक्षानीत्याः परिचयात्मकपृष्ठेषु एतदेव संकल्पितं यत्- तक्षशिला-नालन्दा-विक्रमशिला-वल्लभीसदृशैः प्राचीनभारतस्य विश्वस्तरीयैः संस्थानैः विभिन्नेषु विषयेषु अध्ययनाध्यापनशोधानामुच्चप्रतिमानानि स्थापितानि आसन्। एतेषु संस्थानेषु विभिन्नेभ्यः देशेभ्यः विद्यार्थिनः समागत्य विद्यालाभं कुर्वन्ति स्मा- (राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020, पृ० 4 एवं 10.2 खण्डः) मनुस्मृताविप एतन्निर्दिश्यते-

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः"॥ -

(मनुस्मृतिः, 2.20)

नूतनराष्ट्रियशिक्षानीतौ निर्दिष्टं यत्- अनया एव सनातनभारतीयशिक्षाव्यवस्थया चरक-सुश्रुत-आर्यभट्ट-वराहमिहिर-भारकराचार्य-ब्रह्मगुप्त-चाणक्य-चक्रपाणिदत्त-माधव-पाणिनि-पतञ्जलि-नागार्जुन-गौतम-पिंगल-शंकरदेव-मेत्रेयी-गार्गी-थिरुवल्लुवरसदृशाः विश्वविश्रुताः विद्वांसः उत्पादिताः, यैः वैश्विकस्तरे ज्ञान-विज्ञानस्य विविधेषु गणित-खगोलविज्ञान-धातुविज्ञान-चिकित्साविज्ञान-वास्तुशास्त्र-भवननिर्माण-नौकानिर्माण-योग-कला-शतरंजक्रीडादिक्षेत्रेषु प्रामाणिकरूपेण महत्त्वपूर्णं योगदानं प्रदत्तम्। येन कारणेन सम्पूर्णे विश्वे भारतीयसंस्कृतेः दर्शनस्य च माहात्म्यम् अत्यन्तं प्रसिद्धम्। ज्ञान-विज्ञानस्य क्षेत्रे यदि भारतवर्षं वैश्विकमहत्त्वस्याः अस्याः स्वात्मानं संस्थापयितुं वाञ्छति चेत् वैश्विकमहत्त्वस्याः अस्याः

समृद्धसांस्कृतिकपरम्परायाः संरक्षणं संवर्धनं परमावश्यकम्। तदेव अस्माकं वैज्ञानिकबुद्धिसम्पन्नाः युवानः भाविसन्ततयश्व भारतस्य विविधाभिः समसामयिक-सामाजिक-सांस्कृतिक-भौतिक-व्यावहारिक्यावश्यकताभिः सह समृद्धस्य प्राचीनभारतीयैतिह्यस्य, ज्ञानपरम्परायाः, ललितकलानाम्, भाषाणाञ्च सम्यक् अध्ययनं कर्तुं समर्थाः भविष्यन्ति। एतदस्माकं राष्ट्रियगौरवस्य, आत्मविश्वासस्य, आत्मज्ञानस्य, परस्परसहयोगस्य, एकतायाश्च दृष्ट्या परमवाश्यकं विद्यते। (राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020, पृ० 4-5 एवं 22.1, 22.2, 22.4 खण्डाः)

अस्याः नीत्याः माध्यमेन एतादृशानां भारतीयनागरिकाणां निर्माणमभीष्टमस्ति ये न केवलं आकृत्या अपितु विचारेण व्यवहारेण चापि सांस्कृतिकगौरवसम्पन्नाः भवेयुः। यतोहि व्यक्तिगतभूत्यै सामाजिककल्याणाय च सांस्कृतिकजागरुकतायाः अभिव्यक्तेश्व योगदानं महत्त्वपूर्णं भवति। एतल्लक्ष्यं संस्कृतभाषायाः न केवलं संरक्षणेन अपितु संवर्धनेनैव सम्पत्स्यते।- (राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020, पृ० 6 एवं 4.15,4.16,4.27,22.2,22.4 खण्डाः)

नूतनराष्ट्रियशिक्षानीतौ प्रथमवारं संस्कृतस्य संवर्धनाय प्रसाराय च महच्चिन्तनं प्रस्तुतं तदर्थञ्च ये समसामयिका उपायाः यानि वा आवश्यकसंशोधनानि परिवर्तनानि चापेक्षितानि तेषामपि विस्तृतः उल्लेखः विहितः। वयमधोलिखितबिन्दुभिः तान्यवगन्तुं शक्नुमः-75

9. नूतनराष्ट्रियशिक्षानीतौ स्पष्टतया एतिन्नर्दिष्टं यत् संस्कृतभाषायाः भारतीयज्ञानपरम्परायाः वा अध्ययनं केवलं संस्कृतच्छात्रा एव न अपितु अन्यान्याधुनिकविषयाणां छात्रा अपि कर्तुं शक्नुवन्ति।- (राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020, 4.17, 4.19, 4.27, 4.29 खण्डाः)

२. एतदर्थं अनया नीत्या प्राथमिकस्तरीयशिक्षायामेव त्रिभाषासूत्रस्य समुचितव्यवस्थापनं क्रियते, येन माध्यमेन छात्राः बाल्यकालादेव संस्कृतं जनभाषारूपेण अथवा वैकल्पिकरूपेण पठितुं शक्नुवन्ति। अवधेयं यदस्यां शिक्षानीतौ तृतीयकक्षातः आरभ्य एव मातृभाषायां क्षेत्रीयभाषायां वा शिक्षणस्य संकल्पः निधारितोऽस्ति येन कारणेन छात्रेभ्यः





श्रद्धा का अर्थ है आत्मविश्वास और आत्मविश्वास का अर्थ है ईश्वर में विश्वास।

- महात्मा गाँधी



संस्कृतभाषायाः विकल्पः सुलभः भविष्यति । यद्यपि त्रिभाषासूत्रे काः भाषाः कदारभ्य कुत्रपर्यन्तं पठनीयाः पाठनीयाः वा भविष्यन्ति अयं निर्णयः छात्राधीनः राज्याधीनश्च वर्तते तथापि अस्यां शिक्षानीतौ संस्कृतभाषामभिलक्ष्य विशिष्टः आग्रहः प्रदर्शितोऽस्ति। - (राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020, 4.12, 4.13, 4.17 खण्डाः)

 प्रत्येकं छात्रः स्व-अध्ययन-काले भारतीयभाषाणां विषये (The Languages of India) एकरिमन् परियोजनाकार्यक्रमे भागं ग्रहिष्यति यत्र भारतीयभाषाणां विशिष्य च संस्कृतभाषायाः उद्भवविकासयोः ऐतिह्यं तस्य वैशिष्ट्यञ्च अवगमिष्यति।- (राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020, 4.16

खण्डः)

४. भारतीयशैक्षिक-इतिहासे प्रथमवारम् अस्यां शिक्षानीतौ संस्कृतज्ञानप्रणाली (Sanskrit Knowledge System) इति शब्दस्य प्रयोगो विहितः। भारतीयबौद्धिकजगति अद्यपर्यन्तं भारतीयज्ञानप्रणाली (Indian Knowledge System) इति पदं प्रचलितमासीत्। किन्त् संस्कृतज्ञानप्रणाली (Sanskrit Knowledge System) इति कथनेन संस्कृतवाङ्मये विद्यमानज्ञानपरम्परायाः विशिष्टः उल्लेखः भवति। शिक्षानीतौ उक्तं यत्- संस्कृतभाषा संविधानस्य अष्टम्यामनुसूच्यां वर्णिता एका महत्त्वपूर्णा आधुनिकी च भाषा विद्यंते यस्याः शास्त्रीयं साहित्यं लैटिनग्रीकभाषयोः समग्रसाहित्यादपि विशालमस्ति। गणित-दर्शन-व्याकरण-संगीत-संस्कृतसाहित्ये राजनीति-चिकित्सा-वास्तुकला-धातुविज्ञान-नाटक-काव्य-कथासाहित्य-ललितकला-

आभियान्त्रिक्यादिसम्बद्धानां ग्रन्थानां विशालः आगारः विद्यते, यः संस्कृतज्ञानप्रणालीरूपेण ज्ञायते। समसामयिकरूपेण प्रासङ्गिकपद्धतिभिः अस्याः प्रणाल्याः उपयोगार्थं विद्यालयस्तरादारभ्य उच्चतरशिक्षापर्यन्तं सर्वत्रैव संस्कृतं महत्त्वपूर्ण-समृद्धविकल्परूपेण समुपस्थापयिष्यते। -(राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020, पृ० 7 एवं 4.17, 11.1,

22.1 खण्डाः)

५. संस्कृतपाठ्यपुस्तकिनर्माणं सरल-मानक-संस्कृतमाध्यमेन (S S S) छात्राणां स्तरानुगुणं रुच्यनुगुणञ्च भवेत्। यदि संस्कृतपाठ्यपुस्तकानि दुरूहव्याकरणनियमैः, किनैः श्लोकैः, मन्त्रेः, स्तोत्रेः वा युतानि भवन्ति चेत् छात्रः तानि प्रति आकृष्टः न भवति येन छात्रसंख्या अल्पा भवति। केन्द्रसर्वकारस्य राष्ट्रियसंस्कृतपरिषद्पि एतदेवानुशंसितमासीत् यत् संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां निर्माणं सरलया विशुद्धया (Standard) भाषया एव भवेत्। - (राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020, 4.17 खण्डः)

माध्यमिकस्तरपर्यन्तमपि ६. प्राथमिकस्तरादारभ्य संस्कृतस्याध्यापनं संस्कृतमाध्यमेनैव (S T S) भविष्यति। उल्लेखनीयं यत् प्रायशः सर्वेषु देशेषु सा सा भाषा तत्तत्भाषामाध्यमेनैव पाठ्यते किन्तु भारते संस्कृतभाषायाः अध्यापनम् अधुनापर्यन्तमपि प्रायः अन्यैः माध्यमैः एव भवति। भूतपूर्वशिक्षानीतिषु कि पाठनीयमिति विषयस्तु चर्चितः आसीत् किन्तु अस्यां शिक्षानीतौ संस्कृतं कथं पाठनीयमित्यस्मिन् विषयेऽपि ध्यानं दत्तम्। एतंदर्थं शिक्षकप्रशिक्षणं तादृशं स्यात् येन संस्कृतशिक्षकाः परिवर्तितपाठ्यक्रमानुसारं सरलया पद्धत्या आकर्षकरूपेण च संस्कृतस्य पाठने समर्थाः स्युः। तदैव अन्यविषयाणा छात्राः अपि आकृष्टाः भविष्यन्ति अपेक्षानुरूपञ्च तेषां कौशलविकासः अनेन रूपेण संस्कतसंवर्धने सम्पत्स्यते। संस्कृतशिक्षकाणामपि महती भूमिका विद्यते। -(राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020, 4.17, 22.7 खण्डाः)

७. नूतनशिक्षानीत्याः 22.15तमे संस्कृतविद्यामधिकृत्य महत्त्वपूर्णाः निर्देशाः सन्ति, संस्कृतभाषायाः येषामनुसारेण महत्त्वपूर्णं साहित्यिकम्, सांस्कृतिकम्, वैज्ञानिकञ्च महत्त्वमभिलक्ष्य संस्कृतस्याध्ययनाध्यापनं केवलं संस्कृतपाठशालां विश्वविद्यालयं यावद्वा सीमितं न भविष्यति अपितु मुख्यधारायामपि तस्याः पठन्-पाठनं भविष्यति। उच्चतरशिक्षायां समकालीनप्रासङ्गिकविषयैः सह तस्याः संयोजनम् संस्कृतविश्वविद्यालयाः भविष्यति। उच्चतरशिक्षायाः बह्विषयीसंस्थानत्वेन संस्थापयिष्यन्ते। संस्कृतपाठशालास्विप माध्यमिक-उच्चमाध्यमिकस्तरे संस्कृतविद्यया सह गणित-विज्ञान-भूगोल-

इतिहासादीनामाधुनिकविषयाणामध्यापन

संस्कृतमाध्यमेनैव भविष्यति। स्नातकस्तरे संस्कृतविषये चतुःवर्षीय-बहुविषयी-बी.एड-पाठ्यक्रमद्वारा संस्कृतशिक्षकेभ्यः व्यावसायिकशिक्षा प्रदास्यते। - (राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020, 22.15 खण्डः)

८. एतदतिरिच्य अधुनापर्यन्तमुपेक्षितानां संस्कृते अन्यासु वा शास्त्रीयभाषासु उपलब्धपाण्डुलिपीनाम्, हस्तिलिपीनाम्, अभिलेखानाञ्च सङ्ग्रहणस्य,





पूर्ण धारणा के साथ बोला गया 'नहीं' सिर्फ दूसरों को खुश करने या समस्या से छुटकारा पाने के लिए बोले गए 'हाँ' से बेहतर है।

- महात्मा गाँधी



संरक्षणस्य, अनुवादस्य, अध्ययनस्य च विशिष्टः प्रयासः करिष्यते। - (राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020, 22.16 खण्डः)

नूतनशिक्षानीतौ एतदपि संकल्पितं यत्- संविधानस्य अष्टम्यामनुसूच्यामुल्लिखितभाषाणां जीवन्ततां प्रासङ्गिकतां च द्रढियतुं विश्वस्य आधुनिकभाषाः इव भारतीयभाषाणामपि नवीनतमशब्दकोषाणां निर्माणम्, सततं नूतनमुद्रितसामग्रीणां प्रकाशनम्, अन्तर्जालीयपाठ्यसामग्रीणां व्यवस्था, अकादमीनाञ्च स्थापना विशिष्य करणीया येन समसामयिकविषयाणाम् अवधारणानां वा चर्चा एतासुभाषासु निरन्तरं भवेत् । - (राष्ट्रियशिक्षानीतिः 2020, 22.6, 22.18, 22.19 खण्डाः)

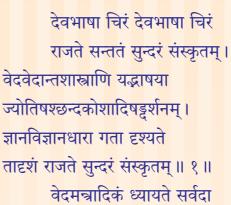
एवम्प्रकारेण एतद्भक्तं शक्यते यदस्याः शिक्षानीत्याः उपर्युक्तप्रावधानानामालोके संस्कृतशिक्षकाणां विदुषां चैतत् परमकर्त्तव्यं यत्ते भारतस्य समसामयिक-आकाङक्षाः निपूणं निरीक्ष्य समर्थभारतनिर्माणाय, आवश्यकताश्च आत्मनिर्भरभारतनिर्माणाय, कुशलभारतनिर्माणाय सनातनभारतीयज्ञानपरम्परायाः, भारतीयसंस्कृतेः, संस्कृतस्य च उपयोगितां साधयेयुः। नवाचारग्रहणपूर्वकं तस्य प्रचाराय प्रसाराय च अहर्निशं सन्नद्धाः स्युः। तदैव वयं नूतनशिक्षानीत्याः भारतीयमूल्याश्रितशिक्षाप्रणाल्यात्मकं विशिष्टं लक्ष्यं लप्स्यामहे यस्य माध्यमेन भारतं पुनरेकवारं ज्ञानस्य वैश्विकमहाशक्तिरूपेण सम्मानं प्राप्स्यतीति। उक्तञ्च महाकविना कालिदासेन -

पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्। सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥ (मालविकाग्निमित्रम्, 1.2)



संस्कृतामृतम्

डॉ. श्यामकुमारझा सहाचार्यः संस्कृविभागः



व्यासदेवस्य काव्यं महाभारतम्। आदिकाव्यं पुराणञ्च संस्मर्यते राजते सन्ततं सुन्दरं संस्कृतम्॥ 2॥

देवभाषा मता पाणिनीया सदा शब्दस्रोतो नवं मानसोल्लासनम्। संस्कृता या दिगन्ते सदा भूतले राजते सन्ततं सुन्दरं संस्कृतम्॥ 3॥ काशकृत्स्नादयः सेनकः पूर्वजाः

पाणिनीयं महाभाष्यसंकीर्तितम्। भाति तत् संस्कृतं सर्वदा भारते राजते सन्ततं सुन्दरं संस्कृतम्॥४॥

काशिकादीपिकाकौमुदीवृत्तयः शेषकृष्णादिनागेशभट्टाभिधः। भट्टजीदीक्षितेनापि सज्जीकृतं राजते सन्ततं सुन्दरं संस्कृतम्॥ 5॥





जब तक गलती करने की स्वतंत्रता ना हो तब तक स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है।





मेघशाकुन्तले श्रेष्ठकाव्ये मते
स्वप्नवासादिनाट्यं यथाभाषितं
राजते सन्ततं सुन्दरं संस्कृतम् ॥ 6 ॥
नाटकं नाट्यशास्त्रं कथा सर्जिता
गद्यपद्यात्मका गीतिचम्पू तथा।
श्रव्यदृश्यं तु काव्यं सदा वन्दितं
राजते सन्ततं सुन्दरं संस्कृतम् ॥ 7 ॥
भोजराज्याङ्गणे काव्यचर्चा यथा
उज्जियन्यां सभायां सुसंवर्धिता।

काञ्चिकाशीनगर्यां यया भाषया

राजते सन्ततं सुन्दरं संस्कृतम्॥ 8॥

योगवेदान्तशिक्षा नु यत् दीयते न्यायवैशेषिकं सांख्यमीमांसकम्। आस्तिकं नास्तिकं दर्शनं योजितं राजते सन्ततं सुन्दरं संस्कृतम्॥९॥ आर्यभट्टः वराहस्य सिद्धान्तकं ज्ञानगङ्गा यया मानवः प्रादिशत् । यस्य शास्त्रं समग्रं जगत् शिक्षयेत् राजते सन्ततं सुन्दरं संस्कृतम्॥ 10॥ (छन्द- स्नग्विनी)



फॉर्म IV (नियम 8)

समाचार पत्र पंजीकरण (केन्द्रीय नियम 1956 तथा खण्ड-बी.) के नियम अंतर्गत विश्वविद्यालय पत्रिका 'ज्ञानाग्रह' के स्वामित्व तथा अन्य विषयक घोषणा-पत्र

ज्ञानाग्रह

1. प्रकाशन स्थान

2. प्रकाशन अवधि

3. मुद्रक का नाम

राष्ट्रीयता

पता

4. प्रकाशक का नाम

राष्ट्रीयता

पता

5. सम्पादक का नाम

राष्ट्रीयता

पता

6. उस व्यक्ति को जो समाचार पत्र के स्वामी तथा भागीदार या कुल लागत के एक प्रतिशत से अधिक भाग के हिस्सेदार हों, का नाम एवं पता। मोतिहारी, बिहार

वार्षिक

कुलसचिव, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी, बिहार

भारतीय

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय,

मोतिहारी, बिहार - 845401

कुलसचिव

भारतीय

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय,

मोतिहारी, बिहार - 845401

प्रो. राजेन्द्र बड़गूजर

(अधिष्ठाता, मानविकी एवं भाषा संकाय)

भारतीय

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय,

मोतिहारी, बिहार - 845401

कुलसचिव, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार - 845401

में कुलसचिव महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार - 845401, यह घोषणा करता हूँ की मेरी सर्वोत्तम जानकारी के अनुसार उक्त तथ्य सही हैं।

30 सितम्बर 2020

हस्ताक्षर कुलसचिव

केवल निजी वितरण के लिए



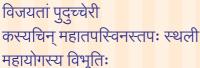


समाज में से धर्म को निकाल फेंकने का प्रयत्न बांझ के पुत्र करने जितना ही निष्फल है और अगर कहीं सफल हो जाय तो समाज का उससे नाश होता है। - महात्मा गाँधी



विजयतां पुदुच्चेरी (एकं भारतं श्रेष्ठं भारतम्)

डॉ. अनिलप्रतापगिरिः सह-आचार्यः संस्कृतविभागः



श्रीमातुः साधनाभूमिः देववाण्या महिमभूमिः भारतराष्ट्रस्य पञ्चवटी दाक्षिणात्याऽभिनवा पञ्चवटी यत्र सुरक्षिता तिष्ठति विदेहजा यत्र न प्रवञ्चयति कनकमृगो राघवम् यत्र नाऽतिचरति कामरूपिणी सूर्पणखा यत्र न रूपयन्ति विध्वंसलीलां खर-दूषण-त्रिशिरसः यत्र विलसन्ति पदे पदे मतङ्गमुनेराश्रमाः यत्र समुत्पतन्ति नभसि परोपकारपरायणा जटायवः यत्र जीवनि सम्पातिनः शबर्यश्च !! १॥ विजयतां पुदुच्चेरी सर्वधर्मसमभावस्थली प्राच्यपाश्वात्यज्ञानसङ्गर्भथली शिक्षासंर-कृतिधर्मसमन्वयर-थली अगस्त्यऋषेः आविष्कारस्थली महर्षिश्रीअरविन्दस्य निःश्रेयसस्थली मनकुलविनायगरस्य सिद्धिभूमिः महाकविभारतीयारस्य कर्मभूमिः मातृमन्दिरस्य दिव्यभूमिः



औरोविलनाम्नी कुटुम्बभूमिः॥२। विजयतां पुदुच्चेरी पुदुच्चेर्यां प्रभवति अरविन्दस्य प्राणाहुतिः पुदुच्चेर्यां प्रभवति केवलम् अध्यात्मस्पन्दनम् पुदुच्चेर्यां प्रवहति हिन्दमहासारस्य समीरः जलतरङ्गाणां कोलाहलः कागादिपक्षिणां कलरवः यत्राऽद्यापि श्रूयन्ते नीरवा वेदोद्घोषा श्रूयन्ते चोपनिषद्देशनाः श्रूयन्ते तथागतवचनानि श्रूयन्ते महावीरवचनानि आगच्छत आगच्छत बन्धवः। इयं पुदुच्चेरी सादरं समाह्वयति भवतः सादरं समाह्वयति भवतः॥३॥

गुरुचरितम्

डॉ. बबलूपाल: सहायकाचार्य: संस्कृतविभाग:



मातृतुल्यां बुद्धिरूपां हितविधायिनीं सदा। साक्षाद्वागीश्वरीभूतां गुरुवर्यां नमाम्यहम्॥१॥

वेदादिशास्त्रनिष्णाता विशुद्धाचारविश्रुता। विद्वत्सु कीर्तिर्यस्याः ख्यातानुकार्या हि सर्वेदा ॥२॥

शिष्याणामादिशक्तिः या सकलशास्त्रपारगा। वेदादिज्ञानदानेन विद्युदिव प्रकाशिका॥३॥

सकलाचारमूलायाः सुचरितां पश्याम्यहम्। तस्याःशशिप्रभायास्तां सुप्रभां नु वदाम्यहम्॥४॥





गुलाब को उपदेश देने की आवश्यकता नहीं होती है। वह तो केवल अपनी खुशी बिखेरता है। उसकी खुशबू ही उसका संदेश है। - महात्मा गाँधी



गान्धिदर्शनम् : एकमनुशीलनम्

प्रो. प्रसूनदत्तसिंहः अध्यक्षः, संस्कृतविभागः



महामानवरूपेण महत्मागान्धिमहोदयः न केवलः भारतः अपि तु सम्पूर्णविश्वः सर्वतो भावेन आदर्शपुरुषरूपेण स्वीकरोति। जनसंहारकशस्त्राणां युगे विश्वशान्तेः स्थापनायाः स्वप्नः निरस्त्रीकरणं तथा अहिंसां विना साकारमसम्भवमेव। सत्याग्रहरूपेण संघर्षस्य समाधानाय अयं मार्गः परमाणुयगेऽस्मिन् एकमात्रविकल्पः एव।

गान्धिमहोदयः केवलं आङ्गलशासनात् विमोचियतुं पुरोधारूपेण विश्लेषणं तेन साकमन्याय एव। सः न केवलं राजनैतिकस्वतन्त्रतायाः स्वप्नं दृष्टवान्, अपि तु सामाजिक - आर्थिकपरिवर्तनाय न्यायपूर्णभारतिनर्माणस्य स्वप्नमपि दृष्टवान्। अस्पृश्यतायाः उन्मूलनं, साम्प्रदायिकसौहार्दम् ट्रस्टीशिप बुनियादी शिक्षा, दिलतजनानामुत्थानं, आर्थिकविषमतायाः समाप्तिः, आर्थिकस्वावलम्बनम् इत्यादिनानाविषये सः एकस्मिन्नेव समये कार्यं कृतवान्। सम्पूर्णमानवजातेः कल्याणस्य चिन्तनमेव तस्य सर्ववादीदर्शनस्य आधारः वर्तते। स्वराज्यविषये सर्वोदये च एतदर्शनं तस्य मानवीयगौरवं प्रति सम्मानं प्रदर्शयति।

गान्धिमहोदयः स्वीयजीवनकाले गीता, कुरान्, रामायणं, बाइबिल् आदिग्रन्थानामध्ययनं सूक्ष्मरूपेण कृतवान्। श्रीमद्भगवद्गीतोपनिषद्भ्यञ्च सः कर्मयोगिशक्षां लब्धवान्। कर्मयोगस्य प्रभावः गान्धिमहोदयस्य आचारे, विचारे, व्यवहारे, दर्शने च अधिकतया द्रष्टुं शक्नुमः। इतः एव गान्धिमहोदयः सत्य-अहिंसा-सत्याग्रहसदृशानां मार्गाणामनुसरणं कृतवान्। गान्धिमहोदयः स्वयं कथयित - "अहं सत्यज्ञानाय गीताम् अद्वितीयपुस्तकरूपेण स्वीकरोमि।"

अनेन स्वहत्याकारिणां विषये कथयति – "हे ईश्वर ! तान् क्षमस्व, यतो हि न जानन्ति ते किं कृतवन्तः" – अस्य वाक्यस्य प्रभावोऽपि अहिंसात्मकगान्धिनः स्वरूपं प्रदर्शयति। सः बौद्धजैनदर्शनाभ्यां प्रभावितः आसीत्। अतः सः दया-प्रेम-अहिंसानां मार्गं स्वीकृत्य विनम्रतया भीत्या च मानवमुक्तेः मार्गमन्विष्टवान् ।

सः आत्मशुद्ध्या हि ईश्वरीयगुणान् विकासियतुम् इच्छिति।
महादार्शिनिकेषु 'लियो टॉलस्टाय' इत्यस्य "जीवतु तथा जीवितुं
ददातु"- इति वाक्यात् ज्ञातं यत् ईश्वरस्य साम्राज्यमस्माकं पार्श्वे एव
अस्ति। सः आत्मानं टॉलस्टाय इत्यस्य शिष्यः इति चिन्तयित। अनेन
सः डेविडथोरो महोदयस्य विचारेण प्रभावितः आसीत्।
सहयोगासहयोगयोः प्रेरणा सः थारेमहोदयादेव प्राप्तवान्। महोदयस्य
चिन्तने शुद्धान्दोलनस्य प्रभावोऽपि भूयो दृश्यते।

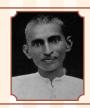
अस्य महोदयस्य दर्शनं संसारस्य महान् दार्शनिकेषु पिवत्रनैतिकाध्यात्मिकसत्यनिष्ठश्च वर्तते । तथा सार्वभौमिकोऽपि । सः सत्यस्य अहिंसायाः च श्रेष्ठपुजारी आसीत् । तेषां समस्तदर्शनं मानवतावादी, प्रेमवादी, कल्याणवादी आदिभावनानामुपिर वर्तते । अतः सः राजनैतिकक्षेत्रेण सह सामाजिकार्थिकसांस्कृतिकक्षेत्रेऽपि ख्यातिप्राप्तो महान् दार्शनिको आसीत् । सः मानवजीवनम् उत्तममार्गं प्रदर्शयन् आत्मशुद्धेरुपिर विशेषसामर्थ्यं प्रदर्शितवान् ।

महोदयस्य दर्शनं प्रत्ययवादी दर्शनम्, यः भौतिकवादस्य विपरीते वर्तते। सः ईश्वरं सर्वव्यापी आध्यात्मिकसत्तारूपेण विश्वासं करोति। सः शङ्करसदृशं निर्गुणब्रह्मणं न, अपि तु रामानुजसदृशसगुणीश्वरस्य सत्तां स्वीकरोति। तस्य एतादृशस्य ईश्वरस्योपिर विश्वासः वर्तते, यः भक्तानां प्रार्थनां श्रिणोति। महोदयः इतोऽपि कथयति यत् ईश्वरस्य अनुमितं विना पर्णोऽपि न पति। अस्मिन् विषये गान्धिमहोदयः निमित्तवादीति वक्तुं शक्यते। किन्तु तस्य नियतिवादः भाग्यवादे न परिवर्तितः। सः गीतायाः उग्रकर्मवादपुरुषार्थवादयोः अधिकाधिकसमर्थकः आसीत।

प्रत्ययवादीति कारणेन महोदयः नैतिकमूल्यानां सर्वोच्चतायां विश्वासं स्थापयति। तस्य उक्तसार्वभौमसत्यस्य नैतिकनिरपेक्षतायाश्च विचारः 'सर्वोदयदर्शनम्' उद्भावयति।

'सर्वोदयः' इति शब्दः सर्व तथा उदयः इति द्वाभ्यां शब्दाभ्यां निष्पन्नः यस्यार्थः सर्वेषाम् उत्थानम्। उत्थानेऽस्मिन् शारीरिकोत्थानेन भौतिकोत्थानेन च सह चेतनात्मकाभिबोधः अधिकः महत्त्वपूर्णः अस्ति। गान्धिमहोदयस्य सर्वोदयीविचारे पाश्चात्यपूञ्जिवादिव्यवस्थां प्रति प्रतिक्रियायाः अपि योगदानं वर्तते।





प्रार्थना या भजन जीभ से नहीं हृदय से होता है। इसी से गूंगे, तोतले और मूढ़ भी प्रार्थना कर सकते हैं। - महात्मा गाँधी



गान्धिमहोदयस्य अभिमतं वर्तते यत् व्यक्तेः समीपे स्वीयसम्पत्तः भवितुमर्हति, किन्तु केवलं सा सम्पत्तिः स्वीयोपयोगाय न, अपि तु समाजस्य अपेक्षापुरणाय । अत्र तात्पर्यमेवमस्ति धनिकानां धनं न्यूनीकृत्य समस्तरे व्यवस्थापनम्, येषां हस्ते देशस्य अधिकः धनसञ्चयः वर्तते, तद्धनम् अन्यस्मिन् पक्षे लक्षशः अभुक्तनिर्वस्त्रस्थजनेभ्यः प्रदानम् । यावत् पर्यन्तं धनिकानां धनरहितानां मध्ये सागरव्यवधानमस्ति तावत् सर्वोदयसमाजकल्पना व्यर्थमेव ।

गान्धिमहोदयः व्यक्तेः स्वीयापेक्षेयां सीमितां कर्तुं बलं ददाति स्म । अयं विषयः वर्तमानपर्यावरणसंकंटसन्दर्भे विशेषं महत्त्वं भजते । अपेक्षाणां विस्तारः पर्यावरणस्य सपक्षसंकटम् उत्पादयति तथा च अनेन इतरप्राणिनाम् अस्तित्वं संकटावस्थायां पातयति । उपनिषद्वाक्यं "तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम्" इति वचनानुपालनेन हि पर्यावरणस्य समस्यायाः समाधानं दृश्यते । सर्वोदयसमाजस्य स्थापनाहेतुः गान्धिमहोदयस्य इदं मौलिकानुसन्धानम् । महोदयः सर्वोदयसमाजे औद्यगिकप्रविधेरुत्रतिः अपि आवश्यकी इति मन्यते स्म, किन्तु तत् मानवीयसन्तुलनतः बहिः न गन्तव्यम् । अर्थात् पर्यावरणस्य सन्तुलनं नष्टं न स्यात् ।

महात्मागान्ध्यनुसारं संघर्षः केवलं अहिंसासत्यार्थमेव। अहिंसकसंघर्षार्थं कदापि सत्यात् न प्रमदितव्यम्। सत्याग्रहीणां कृते विजयापेक्षया सत्यमतिमूल्यम्।

संसारस्य कस्यचित् वस्तुनः मनसा वाचा कर्मणा च रक्षणम्, कठोरशब्दस्य अप्रयोगः, ईर्ष्या, क्रोधः, घृणा, क्रूरतादीनां त्यागः तथा शत्रूणां विषये अपि हितचिन्ता अहिंसेति उच्यते। यथा हिंसा पशूनां स्वभावः तथैव अहिंसा मानवानां स्वभावः। अहिंसा एका पूर्णावस्था यस्यां मानवाः स्वभावेन आकृष्टाः भवन्ति। अर्थात् अस्मिन् संसारे चेतनसत्ता ब्रह्मैव इतरे सर्वेऽपि तस्यैव अंशभूताः अतः हिंसा न करणीया।

गान्धिदर्शनानुसारम् अहिंसा प्रायः त्रिप्रकारकः तद्यथा जागृतः, औचित्यपूर्णः, भीरुणाञ्च। गान्धिना महोदयेन राजनैतिकक्षेत्रे अहिंसायाः विचारं कार्यान्वयनाय या कार्यपद्धतिः आश्रिता सैव सत्याग्रहः इत्युच्यते। स्वस्य विरोधिनां कृते पीड़ापेक्षया स्वस्य पीडनम्, सत्यस्य रक्षणम्, अहिंसया नैतिकदृढतया सह सत्याग्रहः शोषणस्य विरोधः विशुद्धातमात्मशक्तेः प्रयोगः अहिंसा एव। गान्धिमतानुसारं सत्ये प्रेम अन्तर्निहितं वर्तते तथा तस्मिन्नेव आग्रहः उत्पद्यते यत्र एका महती शक्तिः विद्यते। भारतीयांदोलनानि सत्याग्रहः एतदर्थमुच्यते यतो हि अत्र या शक्तिः अस्ति सा सत्यात् प्रेम्णः अहिंसायाः वा प्रादुर्भूता। असहयोगः प्रकारत्रये सम्भवति तद्यथा- उपवासं कृत्वा मार्गे अवतिषष्ठन्ति (हरताल), सामाजिकबहिष्कारः तथा धरना इति गान्धिमहोदयस्याभिप्रायः।

गान्धिमहोदयस्य पूर्णस्वराज्यस्य आदर्शोऽस्ति "रामराज्यम्" अत्र सम्पूर्णप्रजातन्त्रमस्ति यत्र सम्पत्तिः वर्ण-जाति-धर्म-लिङ्गादीनाम् आधारेण कस्यापि असमानतायाः स्थानं नास्ति । अस्मिन् भूमिः राज्यञ्च जनतायाः सम्पत्तिः तथा न्यायः मानवीयः । यत्र सर्वेषां पूजायाः प्रेम्णः च अधिकारः भविष्यति ।

महात्मना गान्धिना स्वतन्नतांदोलनं राजनैतिकान्धोलनत्वेन अंग्रेजीस्वयत्ततायाः मुक्तिरूपेण च कदापि न स्वीकृतम्, अपि तु सामाजिकार्थिकंदोलनस्य मौलिकस्वरूपेण समादृश्यत । अस्पृशत्वम्, हिंदूमुसलमानैस्सहैकत्वम् हस्तिशिक्षा, परिवेषीकरणम्, ग्राम्यराज्यव्यवस्था, श्रमस्य गरिमेत्यादयस्स्वतन्नत्वाद्भूयो भूयो महत्त्वपूर्णरूपेणामुना महात्मना गान्धिना मन्यन्ते स्म । एते महाशया काङ्ग्रेससङ्गोष्ठ्या परमपि रचनात्मककार्यहेतवे प्रतिबद्धस्थापनाय पक्षस्वीकर्तार आसन् । अवसरेऽमुष्मिन् गान्धिना महोदयेन एकराजनैतिकसंगोष्ठ्याः रूपेण समाप्तये वार्तालापः कृतः आसीत् । गान्धिमहोदयः साम्प्रदायिकसद्भाववान् पक्षधर्ता अवर्तत । तस्माद्धि मुस्लिम इत्याख्या तत्सम्प्रदायतुष्टिकरणारोपः तत्कृते कृतः आसीत् ।

गान्धिमहाशयः राज्यस्य पक्षस्वीकर्ता न भूतवानिपतु
अहिंसासमुपासकः। यतु राज्यन्तावत् बलप्रयोगनीतौ
हिंसायाञ्चाधारितमासीत्। यत् नृणां व्यक्तित्विकासाय महते
क्लेशाय प्राकल्पत्। तेन च वक्तव्यमासीत् यत् अहिंसावती समाजे
राज्यं नावश्यकम्। कुतः इति चेत् राज्यस्य प्राथमिकं कार्यं यत्
सामाजिकाचरणमनुशासितवत्स्यात् किन्तु राष्ट्रियजीवनं
स्वाभाविकरीत्यानुशासनवद्भवेच्चेत् राज्यस्य का आवश्यकता





शारीरिक उपवास के साथ-साथ मन का उपवास न हो तो वह दम्भपूर्ण और हानिकारक हो सकता है।

- महात्मा गाँधी

भविष्यति । आदर्शतोऽयं राज्यविरोधी किन्तु व्यावहारिकावसरे यत्र नरः अहिंसामैत्र्यादिस्तद्गुणान्सदैव न स्वीकर्तुं इच्छन्ति अतस्तदुपरि नियन्त्रणाय राज्यस्य आवश्यकतास्ति किन्तु, इमे च राज्यं सीमितत्वेन भवित्ततीच्छन्ति स्म । तस्य सम्यक् विश्वासः यदसौ सर्वकारस्सर्वोत्तमो वर्तते यतो हि अनुशासनं सम्यक् करोति ।

सोऽमन्यत यत् विकेन्द्रीकरणं जनान् कारणीभूतरूपेणाहिंसकत्वेन च भवितुं प्रेरयति । जनेषु उपकारभावना समुत्पद्यते। ते च राज्यस्याधस्संगोष्ठ्याः भूयः स्वायत्तत्वमकथयन्। गान्धिमहाशयानामनुसारेण केन्द्रीकृतव्यवस्थायां सीमितो भवति स्म । एवञ्च समाजस्याधस्स्थाने विद्यमानानां जनानां न किमपि सहभागभूतत्वं न च लाभः लभ्यते। स्वतन्त्रतासमये कतिपयराजनेतारः ग्रामसभा नोचिता इति मन्यन्ते स्म । किन्तु सम्प्रति गान्धिनः ग्रामसभायाः विषये यदवधारणमस्ति यदि ते जनाः अद्य स्यः तर्हि अवश्यं विषयममुं स्वीकुर्युरिति। तेषां विचारोऽपि परिवर्तितस्स्यात्। गान्धिमहाशयस्य चिन्तनमिदमासीत् यत् ग्रामशिक्षा-स्वास्थ्य-स्वच्छादीनां विशेषभारः वोढव्यः स्यादिति। अस्पृश्यतासमापनं कृत्वा पुनः निर्माणं कुर्यादिति । राष्ट्रियान्धोलनस्य तेनायं महाशयः विदेशीबहिष्कारविषयात्प्राक् आगम्यमानैः विचारैस्सह अहिंसान्धोलनस्य विचारेण सह एको विलक्षणोऽर्थः प्रदत्तः। अस्मिन् सर्वेऽपि जनाः राष्ट्रियान्धोलने अन्तर्भृताः। अयं महोदयः उग्रवादिभ्यः पुनरुत्थानवादिभ्यो भिन्नः आसीत्।

दक्षिणाफ्रिका इत्यस्मिन्देशे श्वेतसर्वकारस्य विपक्षे व्यापकान्धोलनात्परं महात्मना गान्धिना 1913 तमे वर्षे भारतं प्रत्यावर्तितः। तत्र महाशयानां महत्संघर्षत्वात् तत्साफल्यात् च अस्मद्भारतदेशे महतीं लोकप्रियतां लब्धवान्। न केवलं शिक्षितानां परिचितोऽयं अपि तु समाजस्य सर्वेस्साकं परिचितं आसीत्। गान्धिमहाशयः समग्रे भारते सुपरिचितः तदस्माभिः सम्यक् ज्ञातोऽपि।

'शैल्ट एक्ट' इत्याख्यसत्याग्रहस्य प्रारम्भात्प्राक् 1917, १९१८ तमवर्षस्य चारम्भे गान्धिमहोदयः संघर्षत्रये चम्पारणान्धोलने, अहमदाबादे, खेडासत्याग्रहे तदंशरूपेणासीत्। स्वकीयप्राक्तनाभियानेभ्यः अदम्यसाहसवान् महाशयः 1919 तमवर्षे फरवरीमासे प्रस्तावितस्य रैलटनियमविरोधप्रदर्शनाय देशव्याप्यान्धोलनमकारयत्। संविधानीयप्रतिरोधस्य यदा सर्वकारे कोऽपि प्रतिक्रिया नासीत् तदा गान्धिमहाशयेन सत्याग्रहान्धोलनस्य प्रारम्भः अकारि। अस्मिन्नवसरे एकस्याः सत्याग्रहसभा प्रारब्धा जाता तथा होमरुललीगदलस्य युवानः अङ्ग्रेजीशासनेन सह संघर्षमकरोत्।

१९१९ तः १९२२ पर्यन्तं अंग्रेजशासनस्य विरोधे खिलाफत् आन्धोलनम् असहयोगान्धोलनञ्च इति द्वे सशक्तजनान्धोलने आस्ताम् । द्वे अपि भिन्नभिन्नविषयेषु प्रारब्धे आस्ताम्, परन्तु उभयोः साधनम् अहिंसा-असहयोगश्चासीत् । एतयोः आन्धोलनयोः महात्मना गान्धिना हिन्दुमुसल्मानजनैस्सह एकतायै सर्वेऽपि प्रोत्साहिताः ।

अमुष्मात्संघर्षात् प्रागेव मुख्यनायकः गृहीतः। विदेशिभिः कारागारे इमे निबद्धाश्च। इदं चान्धोलनं तावद्व्यापकमभूत् यत् माउन्टवेटेन इति व्यक्त्या सह एटली नाम्ना व्यक्तिः मिलिता। तस्मादुभाभ्यां काचित् योजना कृता यत् माउन्टवेटेन-योजना इत्यख्या। यस्मात् भारतस्य कश्चिदशः पाकिस्थानरूपेण दातव्यस्य वचनं दत्तम्। जुलैमासस्य चतुर्थे दिनाङ्के 1947 तमे वर्षे वैदेशिकपरिषदा भारतीयस्वाधीनत्वविधेयक उत्तीर्ण इति न्यगदि। जुलैमासे परिषदानया स्वीकृतमिदम्। तदनु 18 दिनाङ्के 15 दिनाङ्के च तमे अगस्तमासे भारतीयस्वाधीनत्वाधिनियमकार्यान्वयनाय तिथिः निश्चीकृता तथा च गान्धिनः भूयः श्लाघीयसा प्रयासेन स्वाधीनत्वं लब्धम्। निष्कर्षतः गान्धिमहाशयेन सम्पूर्णरूपेण मौलिकक्रान्तिवता स्थितम्। असौ मूलरूपेण समाजिकार्थिक-राजनैतिक-धार्मिक-पुनर्निर्माणस्यैकरचनात्मक्रान्तिकर्त्री अमृतदिव्या अविद्यत । तत् तावत् सांविधानिक-लोकतान्त्रिकाहिंसात्मकसाधनैः प्रयोगं कुर्वन् कल्पनेयं तस्य आसीत्। येन हिंसा, शोषणम्, भेदभावः, राज्यनिषेधः, रूग्णाः, अशिक्षा, तष्णा, एतादृश्यो दुस्स्थितयः कदापि कुत्रापि नैव भविष्यन्ति। अतः गान्धिनः समुपादनीयस्य दर्शनस्य प्रासङ्गिकत्वं सर्वदेशिकमतुलनीयं महद्वदानं सार्वकालिकञ्चास्ति भविष्यत्यपि।





भविष्य में क्या होगा, मैं यह नहीं सोचना चाहता। मुझे वर्तमान की चिंता है। ईश्वर ने मुझे आने वाले क्षणों पर कोई नियंत्रण नहीं दिया है। - महात्मा गाँधी



गान्धिमहोदयस्य पर्यावरणचिन्तनम्

श्रीविश्वजितवर्मन् सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः



सर्वेषामावश्यकतापूरणाय पृथीव्यामस्यां पर्याप्तं साधनमस्ति, किन्तु मानवाः स्वीयभोगविलासाय पर्यावरणमधिकं दुहन्ति। पृथीव्यामस्यां प्राकृतिकसम्पदः भूमिः, जलम्, वायुः इत्यादयः अस्माकं पूर्वजेभ्यः प्राप्तसम्पत्तिः न हि । तद्यथा अस्माभिः प्राप्तं तथैव भविष्यते अपि रक्षितव्यम्। अयमेव विश्वस्य प्राकृतिकनियमः। किन्तु यदि वयमस्य नियमस्य उल्लङ्घनं कुर्मः, तर्हि पर्यावरणं प्रति अन्यायः भविष्यति । यावत्पर्यन्तं मानवसंस्कृतौ भौतिकनियमस्य केन्द्रमहिंसा न भविष्यति तावत्पर्यन्तं पर्यावरणसन्तुलनमसम्भवमेव। वन्यप्राणीनः अद्य वने न दृश्यते किन्तु मृगशालासु, उद्यानवनेषु दृश्यते। अतः विकासस्य त्रुटिपूर्णोऽयं परिधिः ग्रामात् नगरं प्रति पलायनाय सर्वदा प्रोत्साहिताः भवन्ति, किन्तु महत्मना गान्धिना अस्य निन्दनीयनियमस्य देशवासिभ्यः विरुद्धे आधुनिकप्रविधिनामन्धानुकरणाय निषेधः कृतः। तन्मतानुसारं पाश्चात्यजीवनस्य अन्धानुकरणेन अस्माकं पर्यावरणमिदं सङ्कटावस्थायां वर्तते। यदि अन्येऽपि देशाः पाश्चात्यसंस्कृतेः अनुकरणं करिष्यन्ति तर्हि अचिरादेव प्राकृतिकसंसाधनाम् अनिष्टं भविष्यतीति।

अधुनातनसमाजे मानवाः आधुनिकयन्नतन्त्राणामुपयोगे उन्नतशिखायां वर्तते। न केवलं भूम्याम् अपि तु अन्तरीक्षे, पाताले सर्वत्रापि गन्तुं प्रभवन्ति। अद्य मानवाः कारुयन्त्रम्, सङ्गणकम्, अन्तर्जालमित्यादीनामुपयोगाय सर्वदा प्रयासरताः वर्तन्ते। अधिकभोगाय अधिकाधिकोत्पादनं प्रति सर्वदा प्रयतन्ते, येन वैश्विकपर्यावरणस्य आञ्चलिकवातावरणस्य च उपरि विरुद्धः प्रभावः दृश्यते। वैश्विकोष्णता, ओजनस्तरे छेदः, आम्लवृष्टिः, समुद्रजलस्तरस्य वृद्धिः, हिमालये हिमक्षयः, मरुस्थलानां वृद्धिः,

भूमिप्रदूषणम्, जलप्रदूषणम् इत्यादिसमस्यया मानवाः जर्जरिताः वर्तन्ते । अतः गान्धिमहोदयः एतेभ्यः रक्षणाय सर्वान् उपदिष्टवान् । अस्मिन् विषये गान्धिमहोदयस्य कल्पना अतीवमैत्रीपूर्णास्ति यत्र समाजस्य अन्तिमव्यक्तेरुपरि अपि ध्यानमासीत् । तन्मतानुसारं दारिद्रं प्रदूषणञ्च उभयोः पोषकमेव । अनेन सामान्यजनानां विलासपूर्णजीनयापनस्य तथा प्राकृतिकसंसाधनानामसीमितभोगस्य शोषणस्य च विरोध्यारासीत् । तस्य पर्यावरणविषयक एतच्चिन्तनं सर्वोपरि वर्तते । तस्य एतच्चिन्तनं तस्मिन् काले वर्तते, यदा वैज्ञानिकाः अपि पर्यावरणस्य कुप्रभावेन अपरिचिताः आसन् । तन्मतानुसारं समाजे निम्नवर्गीयाणां शोषणनिवारणाय अद्यतने काले ग्रामस्योत्रयनमत्यन्तमावश्यकमस्ति ।

अतः गान्धिमहोदयेन एतच्चिन्तितं यतु यत्र मानवश्रमं विना कार्यमसम्भवमस्ति, तत्रैव यन्त्राणामुपयोगः भवतु इति। तत्कार्यमाधिकारिकोन्नतये लोककल्याणाय वा भवतु नाम। आय-व्यययोः परिमाणः समानः भवेत्, येन सामान्यजनानां हितं स्यात्। तन्मतानुसारं यन्त्रीकरणं तदा सम्भवः भवति, यदा श्रमिकाणां संख्या न्यूनाः भविष्यन्ति उत अल्पसमयेन कार्यसमाप्तेः अनिवार्यता भविष्यति। किन्तु दुःखस्य विषयः अस्माकं देशे श्रमिकाणां संख्या अधिकाः वर्तन्ते। अतः यन्त्राणामुपयोगः हानिदायकः एव। अस्माकं देशे दरिद्रत्वम्, कर्महीनत्वम्, वैतनिकासमानता, भेदभावना, इत्यादिवाषयाणां पीडया पीडिताः आसन्। तन्निवारणाय महोदयेन प्रतीकत्वेन चरखा इति यन्नेण जनाः प्रोत्साहिताः। वस्तुतः तस्योद्देश्यमेवासीत् ग्रामस्थाः जनाः स्वावलम्बिनः कर्मकराश्च भवेयुरिति। गान्धिमहोदयस्य सम्पूर्णं जीवनं यद्यपि अङ्ग्रेजीशासकानां विरुद्धे आन्धोलकत्वेनासीत् तथापि सः ग्रामस्थानां, अभुक्तनां, निर्वस्त्राणां, सामान्यजनानां चिन्तनेन पर्यावरणसन्तुलनस्य चिन्तनमपि सह गान्धिमहोदयानाम् अयं सन्देशः न केवलं भारतः अपि तु समग्रविश्वस्य कृते प्रासङ्गिकः एव।

वर्तमानसमाजः विज्ञानस्योन्नतशिखरे वर्तते, किन्तु





कोई त्रुटि तर्क-वितर्क करने से सत्य नहीं बन सकती और ना ही कोई सत्य इसलिए त्रुटि नहीं बन सकता है क्योंकि कोई उसे देख नहीं रहा। - महात्मा गाँधी



इयमुत्रतिः अस्माकं भविष्यस्य कृते अभिशापस्वरुपः, यतो हि अस्यां धनिनः भोगविलासेन जीवनं यापयन्ति, किन्तु दरिद्राः स्वाधिकारेभ्यः वञ्चिताः भवन्ति । तथा चानया प्रदूषितस्य पर्यावरणस्य विशुद्धीकरणमसम्भवः एव । गान्धिना चरखा इति यन्त्रं प्रतीकत्वेन स्वीकृत्य स्वावलम्बिभारतनिर्माणायस्य स्वप्नं दृष्टम् ।

गान्धिमहोदयः प्राकृतिकसंसाधनानां सञ्चये अधिकार्थसञ्चयस्योपिर अपि प्रतिवादी आसीत्। तन्मतानुसारं जनाः स्वीयावश्यकतापूर्तये संसाधनानां सञ्चयं कुर्वन्तु। यतो हि प्राकृतिकसम्पदः प्रति सर्वेषां समानः अधिकारः वर्तते। धनिकानां सामाजिकदायित्वं वर्तते। यत् ते स्वीयावश्यकतापूरणार्थं धनं सञ्चयीकृत्य अधिकं धनं दिरद्रेभ्यः प्रयच्छन्तु इति।

गान्धिमहोदयः 'पापाय परपीडनम्' एतद्वाक्यं सर्वदा चिन्तयति स्म । जीविहंसा पापस्वरुपः, अतः पर्यावरणस्य वरस्वरूपाणां वन्यप्राणिणां हननस्याधिकारः कस्यापि नास्ति । यथा स्वीयसन्तानस्योपिर अथवा मातापित्रोरुपिर स्वाभाविकस्नेहः भवति, तद्वत् सर्वेषु जीवेषु स्नेहः करणीयः। न केवलं चेतनसत्तायामिप तु अचेतनवस्तुष्विप चेतनवत् स्नेहः करणीयः। यतो हि अचेतनवस्तूनामितदोहने जैवमण्डलमिप असन्तुलितं भवति।

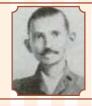
वायुप्रदूषणस्योपिर तस्येतन्मतमस्ति, यत् उचितोपायेन प्राकृतिकसंसाधनानामुपभेगे पर्यावरणं सन्तुलितं भवितुमर्हति। दिक्षणाफ्रिकादेशे सत्याग्रहान्धोलनसमये तेन अनुभूतं यत् वर्तमानसमाजे विशुद्धवायोरावश्यकता वर्तते। तेन तत् स्वीय टू हेल्थ इत्यस्मिन् आलेखे लिखितं वर्तते। अस्माकं शरीरे त्रिप्रकारकसंसाधानानां व्यपकावश्यकतास्ति – वायुः, जलम्, भोजनञ्च। एतेषु शुद्धवायुः अत्यावश्यकोऽस्ति। तन्मतानुसारं प्रकृतिः अस्माकम् आवश्यकतानुसारं विना मूल्येन वायुं प्रददाति। अस्माकं तद्दिषये अनुशासनमपेक्षितम्। अहमदाबादे एकस्यां सभायां सः कथयित स्वतन्त्रतायाः प्रमुखतत्त्वत्रयमस्ति- वायुः जलम् अन्नञ्च।

गान्धिमहोदयः स्वच्छतायाः श्रेष्ठपूजारी आसीत्। तस्य

चिन्तनं "स्वच्छे वातावरणे स्वच्छं मनः" इति आसीत्। जीवने स्वच्छतायाः स्थानमत्युच्चतमम्। अस्वच्छतायाः कारणं दारिद्यम्, तम्बाखु-गुटखा इत्यादीनामशुद्धद्रव्यानां सेवनम्। वयं स्वच्छे जले स्नातुमिच्छामः किन्तु, नदीषु जलाशयेषु दूषितवस्तु क्षिपामः तत्कारणेन जलं प्रदूषितं भवति, येन घातकरोगाणमुत्पत्तिः भवति। अत्र मानवानां चिन्तनेऽपि स्वच्छता अपेक्षिता। महतो हर्षस्य विषयोऽयं यत् वर्तमानसर्वकारः अस्मिन् विषये कटिबद्धस्सन् कार्ययोजनाः कुर्वन्नस्ति। किन्तु एताः कार्ययोजनाः तदा सार्थकीभूताः भविष्यन्ति, यदा मानवाः जागरुकाः भविष्यन्ति। गान्धिमहोदयेन प्रायः शतवर्षेभ्यः प्राक् एतदुपदिष्टम् - यदि वयं तदारभ्यः जागरुकाः अभविष्याम तर्हि अद्य वयं सार्विकोन्नतेः शिखायां अभविष्याम।







आँख के बदले में आँख पूरे विश्व को अँधा बना देगी।

- महात्मा गाँधी

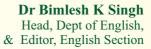




INDEX

1. Editorial	Dr. Bimlesh K Singh	85
2. Student Editoral	Mahima Kashyap	87
3. A Shrine of Silent Prayers	Dr. Umesh Patra	89
4. Wait for Portia	Dr. Bimlesh K Singh	90
5. Dear "They"	Sonali Kumari	90
6. A Failed Experiment	Prof. Arttatrana Pal	91
7. The Problem of Unemployment in India	Sonakshi Priya	92
8. Mr. Branded	Balande Chandoba Narsing	93
9. Remember Mahatma Gandhi Before Committing	Wakil Kumar Yadav	94
Suicide		
10. Morning Ritual	Dr. Umesh Patra	95
11. COVID-19 As a Natural Scientific Tool	Ishtiaq Ahmed	96
12. Lightning of Lamp	Indu Bala	97
13. Remember	Ujjwal Kumar	97
14. Gandhism- The Most Imperative Ideology Against	Rahul Mishra	98
Western Imperialism		
15. Pandemic and We	Sandeep Kumar	98
16. A Glorious Golden Flower Called Literature	Vidushi	99
17. Gandhi and His Journey	Raj Pandey	99
18. Death Banquet: A Social Necessity?	Ujjwal Kumar	100
19. Invisible Mugger	Sonali Kumari	101
20. Fourth Pillar	Abhishek Anand	101
21. Impact of Flood and COVID -19 Distress on	Ragini	102
Every Individual		
22. Human Trafficking: The Black Truth	Richa Kumari	103
23. Past, Present, Future	Medha Kumari	104
24. These My Words	Ritesh Kumar Singh	104
25. What Happens Over The Rainbow Bridge?	Ms. Alka Lalhall	105
26. Correlation Between Literature and Culture	Ishtiaq Ahmed	106
27. Bharat	Dr. Kalyani Hazri	107
28. Ensnared	Mahima Kashyap	108
29. Patriotism: The Passion For The Nation	Samridhi Srivastava	108
30. Carbon Dioxide: A Versatile Reagent As a Source	Prof. Devdutt Chaturvedi	109
of Renewable Energy		
31. Everything is Alright Here	Smarika	110
32. The Gandhian Perception of Education	Prof. Rajeev Kumar	111

Love is the Ultimate Cure





Heartiest Felicitations on the First Issue of the *Gyanagrah*!

Shakespeare's poignant observation, "Fair is foul, and foul is fair" has, once again, rocked the sensibility of the intellectuals/the wise today in the Post Covid-19 Pandemic scenario. There's hardly a person these days who's not experiencing the menace of chaos and confusion arising from the outright isolation from the mainstream society. It becomes crystal clear that man gets vitals of life from his interactive sharing with his / her fellow beings. However affluent or self-sufficient a man is, his identity is justified only in relation to others around him. The more he shares & reciprocates, the happier and stronger he feels. Coleridge, the leading romantic poet, aptly writes in one of his famous poems (Dejection: An Ode):

...We receive, but what we give, And in our life alone does Nature live.

The maiden issue of the Annual Magazine, MGCUB is dedicated to the "Father of Nation", Mahatma Gandhi after whom our great University is named. Gandhiji whom Champaran (Motihari) made Mahatma is well-known for his principles of Truth'& 'Non-Violence'. He not only categorically advocated for the introduction of the Religion into Politics, but also appealed to all to imbibe unconditional love of mankind. He went to the extent of saying: "Hate the evil, not the evil-doer". He believed in the inevitable role of love in human transformation. Buddha's compassionate words" I've stopped, when will you stop?" magically overcame the hardened criminal (Angoolimal) and instantly transformed him into a saint. Hence, humanity has come to realize the exigency of love today more than ever before. What we need today is the unquestioned and large-hearted relationship with all human beings, flora and fauna. This'll, at once, strengthen social ties, environmental beauty and global harmony.

That the First Issue of the Annual Magazine is dedicated to Gandhism on the auspicious occasion of the 150th Birth Anniversary of Bapu has made us feel so proud and exhilarated. The real reverence to Gandhism is the whole-hearted engrossment in the philosophy of Love, Truth and Non-violence by which Gandhiji led the whole world. Einstein, the scientific genius of the 20th century wrote of Mahatma Gandhi in his immortal remark:

"Generations to come will scarce believe that such a one as this ever in flesh and blood walked upon this Earth."

Through the Editorial of the English Section of the Inaugural Issue of the Magazine, I urge upon all of you to cherish love within yourselves for all without any pride and prejudice of caste, creed, colour, sex, or language. This is the only way to make India a powerful nation thereby contributing to the establishment of world peace.

1st International Conference on Frontier Areas of Chemistry

Feb. 28-29, 2020



Student Editorial





Anyone would hardly have imagined during the Sports Week that it would be our last outdoor gathering for the next few months, or let's say, this year! While some of us might have protracted our stay at home after the festivity of colours for it's not easy to let go of the comfort of home, many returned for the classes after sojourn but only to receive the news that a nationwide lockdown was imposed. The plans for upcoming academic events like seminars and conferences came to a halt with an unprecedented announcement. Quarantine, isolation, lockdown, candidate vaccine, containment zone, live lectures, webinars, and several related words/phrases made it to our daily conversations. Ironically, social media, whose use was generally discouraged among youngsters, became instrumental in disseminating information, awareness and also knowledge. And with this we entered an era of the 'new' normal. The idea of new normal, however, doesn't seem really new to me. The technological advancements have brought us face to face a new normal intermittently. As early as the first decade of this century, we could imagine a face time call in distant future but hadn't foreseen that future taking shape within a decade. I remember, during my graduation days smartphone was considered a luxury, today it has become a necessity. From the availability of a phone booth in every corner of the street to seeing an ATM become that common, we have witnessed many transformations. The circumstances have definitely changed in the wake of Covid-19 but what I wish to assert is that once the 'new' normal is really normalised, it is replaced by another 'new' normal. Sometimes it evades us, at other times it becomes glaringly apparent. Perhaps, the difference is that earlier it was easily accommodated for it by and large facilitated our progress and setbacks, if any, became diminutive in comparison to the ease it provided. This time it has come more as a hindrance and yet, I am hopeful that more possibilities will emerge as we endeavour to explore options and continue to attempt novel ways to achieve what we otherwise would have had the situation allowed.

Well, the 'new normal' can inspire people differently and there can be as many perspectives as there are people. Uniformity leads to stagnancy and thus, we must celebrate such occasions which enable us to connect with people through their ideas, to understand the way people respond to things around and to know the opinions other than the self holds. There resides an utmost beauty in the harmonious blend of diverse opinions. Perhaps, most of you will agree with me on the point that one of the banes of modernity is individualism which has limited our space and reach. And it's such a delight to have a platform, or to be more precise, one more platform, to connect, to get to know the friends better and to get acquainted with other members of the MGCU family. Besides being considered as an opportunity to attain those ends, it also demands a collective sense of responsibility on our part to ensure that the first issue of the *Gyanagrah* is succeeded by many more in future.

But for now, let's celebrate the beginning!

आपटाकाल में पतकारिता का राष्ट्र धर्म विषयक राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का हुआ आयोजन





इंडोनेशिया का पंचशील सिद्धांत गांधीवादी आदर्श से प्रभावित

• 'गो इस व स्थापित हो।

stering of their as answer

• इंग्रेनेकिय इंग्डेंट्यू और सहस

जनार्थ के पहचार में आवेजन

इंग्रेनीसच स्टीट्सूट ऑफ सहस लकार्याः इत्यनित्या के महर्कत स गाला गांची केडीगरिकार्वाच्यालात्. ब्हात के गंधी एवं शांति अध्यपन layer are use fourba नेपराष्ट्रीय ऑस्तवंत व्यासकत ग्रीमीज के लाल 'मांची जार और इंटोनीएय दृष्टि एक समानत र्शियेक्ष" पा. हतीय स्वास्त्रान का अर्थात्रक विश्व एका इस कार्यक्रम को अध्यक्षण य कलपाँग प्रे. संक्षेप

कि चाल और इंडोनेरेंक्य में करनी सम्पन्ताए हैं। प्रजीने चात और हरोपेरिका के मेरलिक परिवर्ण के बारे में बताया। तथीने बड़ा कि stration on depth fazin मधीवादी अदर्श से प्रभावता है। मा सर्व रे किया। इस स्वाध्यय इंग्रेनीस्त्रा की पंचरील सिद्धांत एव विरिष्ट बन्ता (ईन्स्वेडी) मेरिना मधीवद्वी विचरपार में तमस्त्रओं विकारित हो होते विकास के रहित पुर और स के बारे में बदाया। तिसमें लोगों के यांच जवातं, इंडोनीत्य एवं लिए ईस्पर एक हो हैं, मलबता में संक्रेटरी जनमा, गुलाव रेमियक अपने विकास को की खेश और रिवरियाचे खोडियस्य 🖯 रे क्या एक राष्ट्र की राजकृति , विकास में र्त मञ्चली है। अहम्म काले लिए है इंग्रेनिया के शिक्ष के पानुओं प वर्ष की तथा भाग गर्व इंडोनेंडर सांस्कृतिक एवं धार्मन

सम्बन्ध और बारे में बताया इस पू वार्यक्रम का ग्रांगालन अस्तिहरू प्रेक्सर जो अपय विक्रम सिंह र बन्नसम् अध्यः से विकास प्रतिक किया। सा कार्यक्रम के साध्यक्ष की असंद्रप्रकारा, प्री. पानेत कुमा है. सहित समय व है. समे ब्रह्माओं , ब्रह्म-संपंत्रक हो जाए क्ष्मेच , डॉ एम विशय कृत्या राम n universities of the obligate कुम्पर जिल्लाही तथा हुई अपन विका सिंह व्यक्तियत रहे। सम्परम कुलावी हो, मोहीब बन्मा हार्च ने अध्यक्षी

देशकी उन्नति में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण

affron Right Handwares in किस में महिला प्रतिकां क त्रकार विकास का दिस्तीय व्यक्ति केंद्र प्रदेशी का आदेखा

एक्रिके संदेशी अन्यत का से महत्व बंधे बेरीर fundamenta apeteiz, cidra इसर कर्न ने बन्ने बन्ताने व प्रीकृतिक सम्बद्धाः कर्ता प्रकृति ति पर के लोडी एक पार बड़े मात्रा विशेषा क्यों रही जिले Net's distribution for कराई है उन्हेंने कहा कि प्रतिकार बहितारं होती है अपने प्रशासक, प्रबंधक व समाहकार

fation subsition do virus at the manufacture or questions, and माञ्चारत में इस के रावेकों के की नहीं नहीं न करने हर देता कि रहे Afternoon is the strate for the same in familiar in fath.

moved at State of All 2 of American Extendings सहित्यों हर कि में पान के प्रमाण के का की कर के कि मार्थ राज्य में बरिकार्ड तो बीचा करा है। फेरा है जाते के शेष से उत्तरे

प्रविद्यारि होते हैं उस तिहा है। बहुत्वारी व व्यवस्था हो की बीमाने सं न्यून बढ़ते व बराने सं त्यूनावती जाता उत्तराष्ट्रीय स्टेशिय को बी बेटीना इंस्टरने को के की पर सार्वित विश्वविद्याला - में क्षेत्रों है क्यों मीलकरें पूरा राष्ट्र जो दिलते को ब्लालीका हो. को तांक क्रमति है और उस इस उसे राजनिकान्द्रे करा कि अरुवार के । सार्वेश्वर्य कर और में में में ती हैं है और अरुवार के आ है जो कर की अरुवार के अरुवार कर की

को किसे सर्वाधिक प्रवासन

प्तरविदेशीय क्षि पूर्व की वर्ती के अविकार करता है व्यक्ति वर्षात्र है स्व नान है स and drea she former below काल में की बर्ज की बाद of abritmises in the हार ने भाग के इस राईप के सर्वार के प्राप्त के अंक्ष

हिदस्तान, 18 जुन, 2020

संस्कृत ही भारत को बना सकता विश्वगुरु

जारां, मोतिहारी : उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष डॉ. वाचस्पति मिश्र ने कहा कि संस्कृत में भारत को विश्व गरु बनाने की क्षमता है। बदि भारत को पनः विश्वगुरु बनना है तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संस्कृत का समावेशन करना होगा। वे यहां महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित समकालीन शिक्षा प्रणाली में संस्कृत का औचित्य विषयक विशिष्ट व्याख्यान में बोल रहे थे। इसके पूर्व उन्होंने कुलपति प्रो.संजीव कुमार शर्मा, मानविकी एवं भाषा संकाय के अध्यक्ष प्रो. राजेंद्र सिंह तथा संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. प्रसन दत्त सिंह के साथ दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। मौके पर कुलपति ने कहा कि वदि भारत को जानना है तो सबसे पहले संस्कृत का जान आवश्यक है। सामान्य जन में यह भ्रांति है कि संस्कृत केवल कर्मकाण्ड की भाषा है। जबकि यह समस्त ज्ञान-विज्ञान का आधार है। संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो प्रसन दत्त सिंह ने स्वागत भाषण करते हुए कहा कि सम्पूर्ण भारतवर्ष की आत्मा संस्कृत में विद्यमान है। मौके पर मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता प्रो राजेंद्र सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ.

विष्ठवेष ने किया।

अरहेजन 🍨 केविवि मोतिहारी व संवी विवि के संयुक्त तत्वाक्यान में हुआ कार्यक्रम

मानवीय जीवन के लिए विद्या का सूत्रधार है भारत भूमि : द्रौपदी मुर्मू



महात्मा गांधी केंद्रीय विवि में मिजोरम राज्योत्सव दिवस मना



फैक्सरो होत, चाराका परिवार में आने. संकाद हो, पानीत कुरता, संकाराज्यक, जीवी राज्य मिक्रीम राज्योत्सम का अर्थ विक्रम के रीवक तत उस्तान. आयोजन किया। मिजीन्स राज्योत्सनः एक बात है। पात के रोशन अधिक्राहः ने मिजीन्स राज्य के विशेष का से दिवस के प्रकारत में एक प्रदर्शने का भी। भी संस पर त्यांस्थल से। कार्यक्रमः कर अवस्थीत में एक पहल्लान्ते और जीवन जापोजन किया गया, जिसमें संबाध - संबातन भी शीम क्षेत्रातान ने बिता। - के मृत्यनान सांस्कृतिक जावनत का पदानों और वार्त ने भी तिमा तिथा। अनोहम भी सुरूआ विद्यपियों दूरा। उद्देश करते हुए या बतथ कि वार्त क एक पहला जेड़ भागा मांच्या द्वार । गिजे लोग की प्रापृति से हुई ल्यूपांत के. त्येन अवसल कर्न नहीं बच्चारे हमें पेप अवस्थित करवेडन की सभी तरेगी जिम्मादकड़ द्वारा एक न्यासकत दिवा भाग में ग्रम मांच्यति का पतन करना र्वे बहुत सरहारा को। प्रदर्शनों का गया। विजोग्य के को में एक गुजीनक व्यक्तिए और इस विवय पर अहातील के प्राचना राजे लीका प्रतिने प्रत्य वह विरुद्धिक किया गया। बहरेडमा के लीकिए से संबंधित एक गया विरूप हों सुंदर किसोर राज्य द्वारा किया। के मुख्य अधिन हो, अलोट प्रमात्र ने इस। का फिल्मोबन किया निवारत शोर्यक

भौतिहारी (आसमे)। गरान्यः उत्तर तुरु विधानयः इय अवस्य प

बीकारक ने निवर्शनियों को इस प्रकार को गरिविक्रीओं के लिए फ्रेस्सवित करते हुए प्रतिवास, उसमें के संस्कृति के प्रतास के भारे में अपनी मार्त रखी और इस मार we see feet for more at and in इतिकार और उरानों संस्थित को सोकार रांधी केन्द्रीय विकसिक्दालय के एक असंद प्रकार, दीन तात अधिवान, थे. पारिए। नोतन अधिवान, ही. एवीक भारत क्षेत्र भारत ग्रामिति ने ओल्ड आयीष बीचमतम् संबादकवाः, विवद् ज्ञा स्ताम ने मित्रीस के बारे में और उद्दान के प्रस्तव से हमें क्या सीखने को जिल्हा है इस पर चर्चा और थे, इंग्लंब गर्थ। प्रदर्शनी के उत्पात होए। तार के अर्थान्त को स्प्रान करते हुए। हिंक्सियों वा धनकद हारन ही दिन्ह प्रजातिक का विश्वोद्ध दिन्हा का विद्यालियों को उत्तक उपक और सूरित कहार हुता दिन्हा गया।

फेलोशिप के लिए चयनित हुए रोहिताश, मिली बधाई

कन्द्रीय जिवि (एमजीसीयुवी) मीडिया विशास के लोधाओं रोहिताल कुमार का चगर भारत सरकार जनगति मंत्रस्य अंतरोत फलोडिसप ध्नप्कर्यस्ता रिसर्च के लिए किया गया है। शाधाओं यतिताल कुमार मीडिया विशास में पीएचडी में प्रथम वर्ष में हैं। केविवि की पीआरओ शफालिका मित्रा न बताया कि भारत सरकार के ट्राइकल मंत्रालय द्वारा चयनित शोचाची को साल तक जीच कार्य के लिए फलोशिय से जाएगी। मीहिया विभाग के अध्यक्ष प्री. अरुण कुमार धरात ने बचाई देते हुए बताबा कि फलोडिए की सुधी मंत्रालय की वेबसाइट पर जारी की गई है, जिसमें देशभार के



र्वेहतरम क्रमार = सातरा

कुल 750 हाज चयनित किए गए हैं। यह फलाशिप उनके रिसर्च हेत दी जा को है। शाधाओं रहिताश कुमार की सफलता पर कुलपति ग्रा. सोतीब कुमार शर्मा ने बचाई देशे हुए कहा कि इससे अन्य शोधार्थियों में भी उत्साह और उल्लास है तथा इससे जोध कार्य में सतायता मिलेगी

दैनिक भारकर | 12 Fell-2070 भोतार्ग १७३

सुगौली - गोविहारी आरापास

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एक नई विचारधारा को जन्म दिया, जिसे एकात्म मानव दर्शन कहते हैं





इनलंश के संस्थापक चंदिल दोनदवाल उचाराव्य की पूम्तांतरि को सम्प्रोन दिवस के रूप में मनवा जब, सैकड़ों ने तिथा मान

तुरव्यक्तिका में प. अवस्थात के दिख पर गुप्प अर्थित कर ही शहरजिल

केंद्रीय विश्वविद्यालय में शिक्षा व्यवस्था पर राष्ट्रीय संगोष्टी

बुद्ध और गांधी की शिक्षा पर विचार जरूरी

a so su sife

A Shrine of Silent Prayers

Dr. Umesh Patra Assistant Professor, Dept. of English



By a serendipitous coincidence, I happened to attend a month-long Orientation Programme for entrylevel academic professionals in the scenic city of Nainital in August, 2019. After two weeks of grinding hours of lectures and other assignments designed to foster scientific thinking in research and teaching, a few of us grabbed a chance of visiting the famous temple of Golu Devta, situated about 10 kilometres from the city of Almora, on a pleasant Sunday morning. While a multi-cultural country like India houses thousands of shrines in every nook and corner, each resplendent in its own glory, with a legend of its own, I am hard-pressed to repeat the oft-stated statement that this shrine was like no other. Instead of offerings of fruit or flowers, people flock to the temple with bells. These bells were of various shapes and sizes including the tiny ones that could fit in the palm of a toddler and the gigantic ones whose echoing sound linger long after they are rung. To say that Golu Devta fulfils everyone's wises would be stating the obvious. But people do come to this sacred place with notarised affidavits drawn in the name of Golu Devta and hang them within the temple premises. The less scrupulous supplicants write down their problems on sheets of paper and hang them too. If one's wishes are fulfilled, one comes here and ties a bell.

During the drive to the temple, the physical proximity in a hired cab made the six of us noisy chatterboxes, much to the chagrin of the lonely victim, the laconic cab driver. Hailing from different academic institutions and diverse academic disciplines, we were all beating our own hollow drums of academic excellence and throwing jargons in abandon. The driver must have listened to excerpts from the poems of Whitman, botanical names of trees passing by, the types of rocks constituting our scenery, the Latin names of birds during that two-hour long arduous drive. He must have heaved a sigh of relief as we reached the venue and disembarked from the vehicle while completing our sentences. But as we entered the temple precinct, our verbosity gave space to silent adoration.

The entire temple was filled with sheets of paper and bells. Not a corner was left. Me and my colleagues could not resist the temptation of eavesdropping the silent

prayers of Golu Devta's supplicants. Here was a catalogue of human misery and desire, written in neat typescript in A4 sheets or in childish scribblings. Composed in more languages than we could count, they spoke of the usual pains of human life. There was a lover's desperate cry to be united with the woman of his dreams, a mother's wish to see her estranged son one last time. A note here read the tale of a drunkard husband who mistreats his wife, while the other told of a man suspecting of being a cuckold. An unemployed youth sought for a job, while an employed woman was facing gender discrimination in promotion. We read them in pity, we read them in jest. It felt the world is not that different after all. How common are the sources of people's sorrow! And how pathetic are those who believed that jotting them down would put an end to them!

When our interest abated in the multitudinous sagas of human distress, and our cell phones were replete with selfies from each possible aesthetic angle, we slowly moved towards our vehicle. Of course, we had other sights to see. We had spent more time than we had earmarked for it. The last person to emerge out of the temple took a little longer than usual somehow. In the temple premises, we saw him buying a piece of paper from a person seated at a conspicuous place. His back toward us, my colleague started writing something and went back inside the temple to fasten it. When he returned, his face was flushed with embarrassment to see our grin from ear to ear. With a flick of his hand, he explained, "It was nothing". He explained that he just followed the ritual for sheer fun. But we all realised that if we leave this temple without following this ritual, we might spend the whole afternoon (or may be a lifetime) cursing ourselves for not taking advantage of a precious offer. After moments of hesitation, we all bought a piece of paper each, and wrote our individual prayers addressed to Golu Devta, and took care not to peep at each other's scribblings. If we had, we must have found different versions of the same identical tales that we had scoffed at not so long ago. Each out of their own inhibitions, we shed our academic demeanour and looked like vulnerable children too little to understand the intricate workings of the universe.





An eye for an eye only ends up making the whole world blind.

- Mahatma Gandhi



Wait for Portia

Dr. Bimelsh K. SinghAssociate Professor & Head
Department of English



Who can tell, words are real?
Encompassing the heart of truth
as true sons of Nature do feel,
through the Cosmic calls forsooth.

How poorly the signs form text! Sense evades the shows on pages, hanging in the pretext and context, silhouetted against chaotic rages.

Alas! Human life's a mess! One's born with countless desires to act and react on dais, but ends helpless and hopeless.

The 'Bard of Avon' created Portias various with faculties fabulous, one had the wit and beauty divine; another died from times tedious.

Between what she says and what she intends; there lies a way of ways to mean more than pretends.

Portia! How long will I long to wait for your sharing rare? Where words fail to prolong the freshness of love so fair.

Dear "They"





Last night, she lost her most near and dear one, her only child. Corona has deprived her of everything in life. Her husband divorced and left her last year with nothing but few clothes, a newly born child and tears in eyes. She had just come out of depression when a new depression knocked at her gate by taking away her child. They say, she has become insane and ill-fated for everyone's life. They always beat her but why? My mind doesn't help me to find a reply. They also took away her mud house and memories of her child.

Now, she lives near a graveyard. Yeah..., her new neighbours, 'trees', 'Stars', 'Sun', 'moon', are helpful and kind. These new neighbours always insist her not to commit suicide because it can't solve the problems of life.

Oppression of women isn't a new chapter to describe. It's been there from the very beginning of human life.

Many reforms have been made for the welfare of women. Many laws have given them different rights. Oppression of women is an incurable disease because women don't want to retaliate against the so called 'they'. Let us hope the sacrifice of women will be understood by the 'they' some day.







You must be the change you wish to see in the world.





A Failed Experiment

Prof. Arttatrana Pal
Professor & Head,
Department of Zoology
Dean, School of Life Sciences



I was quite happy to become a famous medical doctor not only in India but also very familiar in many advanced countries. However, my mind was not stable because of my father's dream to own biggest Prize "The Nobel Prize". My life was pretty different, far away from the goal my father dreamt for me. I realized my journey was derailed and should move to the track. Sitting in the best lab at Massachusetts Institute of Technology, America, I evoked my previous life after completion of the regular course in "Medicine". I had spent years going home fairly satisfied at the end of the day after finishing my regular routine work. A Clinic had been completed sincerely, treatments prescribed thoroughly, patients reviewed bit-by-bit, some recovered from the disease and few were suffering in death bed. When I moved from patients, medicines, tablets, outdoor, surgery into research, the biggest shock to me was failure in my research lab. I could do weeks of hard work and yet see no tangible success as I planned. Again I enthused into deep research thinking that this was where the real progress would be made with pioneering ideas, where I could make a difference. Every so often, looking at the most-recent in a long and time-consuming line of failed experiments, I wasn't so sure, why it happened. I had no idea. Discussed with fellow colleagues leisurely and realized, failure was something that all researcher experienced in life time and it was not one day job; but it's hard to tell, looking at my shiny conferences, polished presentations and glossy journals. Comfortable science was an oxymoron, the lesson I received from my father in my childhood, when I took my subjects lightly and adopted short-cut methods. From his mouth, still it was ringing in my brain corridor "If you want to make difference from others, that means taking a leap in the dark — a leap you might not take if you're too afraid to fail".

Keeping all his harsh strategies and stunning suggestions, I walked every step in my life to achieve the goal. One fine morning my father's dream was fulfilled when I went through a news paper. My name was nominated for Nobel Prize earlier and I was selected for that in "Medicine". I was not quite happy without sharing this great news with my father, who was in a remote place

where he had spent years dreaming about my success since my early days. I was doubtful whether he remembered all his sufferings or not. That's why I changed my track to fulfill his dream. Within no time, I picked my telephone and tried to reach him.

Unfortunately, I did not get any answer. After that I was little bit worried and realized that in last couple of years I could not make a call due to my busy experiments. My telephone had fallen down and I was in different world for a while. Negative things were running in my mind about my father, who lost my mother from my early age, which I could not remember. Within no time I packed all my essential things and planned to reach him as soon as possible and show him "your dream has been fulfilled now", but sorry papa, it was quite late and took long time as you suggested "no short-cut methods". On the way back to my father, I could not keep my steps anywhere. Each moment, I saw his face calmly, which I did not see for quite a long time and was fairly curious to show his dream in my reach. Meanwhile, I reached my home town and it was pretty hard to find the path to reach him, where I spent all my childhood. Somehow, I took a narrow path to catch my home and slowly remembered where I spent my pleasure time with friends and shared my words with them in my childhood days. I was confused after seeing my house, which looked like a slum cottage with big lock hanging in the door. I did not know, when I laid down near the door and drops of tears began running on my check. Neighbor's aunty with age of about 80, perhaps my mother's age, was watching the entire picture from her house. All of a sudden she rushed to me and picked up with her arms and held closely to her chest for a while. I think she had recognized me and slowly narrated the incident that happened with my father. Shortly, he was suffering from Cancer for years together and passed away due to corona infection last February. Really, I was uncontrolled for a while and felt guilty, what will happen with the Prize and my discovery, which could not help my father who really dreamed for that. Aunty opened the door and I entered the cottage. I could not believe that house was mine, where I started my life and spent all my childhood. The room looked quite different and all the materials looked like garbage. I saw a tin coffer sitting in the corner, where we kept all my precious things in my school days. Took a step towards the coffer and opened gently. Except a brown diary nothing was left inside. Eagerly I went through the diary page by page and wondered if some harsh strategies and stunning suggestions were left for the rest of my life without him. In nice hand writing, my father wrote few words for me in the





All the religions of the world, while they may differ in other respects, unitedly proclaim that nothing lives in this world but Truth.

- Mahatma Gandhi



last page of the diary. Maybe he had some intuition in his mind at the eleventh hours. This is the last suggestion for me that's why he chooses the last page of the diary. My eyes were thrilling to read the words line by line. It was not so hard as earlier— "My hand is trembling as I can not concentrate as earlier. How do I write all that I want to say. Today I am quite happy that you are doing last experiment at big institute to achieve the goal, and you never say no with all my strict advice to fulfill my dream. I have strong faith in GOD. You will reach the destiny one day, maybe I will not be there to bless you further. I kept that wish in my heart like pearl inside the oyster and let my country prosper and achieve recognition that will give me immense pleasure. Let me go to haven as proud father of you, to rise again and rejoice in its glory".

I could not reach up to the end of his letter. I was wondering around the face of my father, sweet words when I was tired, motivation towards the goal, and his entire plan to fulfill the dream. Now I understand his loneliness, absence of my mother, fighting for the disease and sufferings all alone. Today he is no more to see his success in my hand. I ran a long way with all his stimulation to fulfill the dream without rest. Many experiments were performed in my lab after I left my professional career, some wherein I failed and some which I achieved. Today I am alone and have failed in the real life experiments. I am so tired to express my respect and realize that without his presence, all my experiments and achievements have failed.



The Problem of Unemployment in India



Sonakshi Priya M.A English (Sem-II)

The problem of unemployment means the problem of providing work to those who are willing to work. A large number of educated and uneducated people who are capable of work are unemployed and jobless.

In our country, this problem has assumed an acute form. A large number of people are either partly employed or wholly unemployed. India cannot claim to be a welfare country as long as this problem remains unsolved.

It is a well-known fact that our country is thickly populated. The population is increasing by leaps and bounds. So naturally, a large number of the people are left unemployed.

Moreover, our education system is also responsible for this problem. The problem of unemployment is mainly an economic one. Our joint family system is gradually breaking down. This may be a good social change from one point of view, but from unemployment's point of view, it is harmful. When we live jointly, some family members get employed in the family professions. So, the Government has recently come out with a plan to provide employment.

When people get technical and vocational education, they will not hanker after services upon completing their education. They will come out well prepared to stand on their own legs.

The problem will be half-solved, if this suggestion is implemented.
Conclusion:

Our country cannot advance economically, politically or socially unless this problem is solved. Many social evils are spread due to unemployment. Frustration, drug-addiction, even suicide are by and large, the evil results of unemployment. It is, therefore the duty of the Government to make every possible effort to solve this problem.





You must not lose faith in humanity.

Humanity is an ocean;

if a few drops of the ocean are dirty,
the ocean does not become dirty.

- Mahatma Gandhi



Mr. Branded

Mr. Balande Chandoba Narsing
Assistant Professor,
Department of English



"I'm an inborn branded", these words in the crowd attracted my attention arousing the eagerness to know who it is. Incredible! It is a man but was distinct from others. And what was the distinctness in him?

This branded man was proud of his brandedness and looked down upon all that is unbranded. But it was not his own fault as he was inborn branded. The date he was born was 32, month 13 that is BrandLee, year 190089 (as he liked lengthy numbers), and day Branday (after Sunday before Monday). The whole universe was looking forward to welcoming the branded baby. As it was branded, it took ten month to come out of the womb. Usually, the very first communication of any newborn baby with the world begins with a cry. But when the branded baby was born, it began smiling. Nobody could decode the smiling of the baby. After a short time, the branded baby began crying unlike other babies that is pu pu puumma, puuummmaa puma.... It kept on crying. The doctor, the sisters, and even its mother made unsuccessful efforts to stop its cry but the crying increased louder and louder. The whole hospital was tensed from midnight. The patients suffering from blood pressure were shifted to other wards. The very arrival of the baby brought tension to others. It dawned but the baby did not stop crying. Attempts were made to feed the baby with milk but it was in vain. At last the doctors and sisters, when its cry was unbearable, left the hospital.

The father of the baby, poor fellow, was perplexed and rushed out of the hospital. After an hour he came running with a bag in hand. The baby still was crying. He took a very big T-shirt out of the bag and covered the baby. The very next moment the baby stopped crying. The doctors and sisters could not understand anything but the father understood it very

well. The T-shirt that covered the baby was of PUMA brand and therefore the baby was named as Mr. Branded. His passion for brandedness was really inborn.

Mr. Branded took admission in Nike School where he developed much more passion towards brandedness and took higher education from Reebok University. Now he was 26, and desired to get married. Ten years were spent for finding an exact match, even advertised in newspapers that 'Wanted a Branded Bride' but in vain. Alas! He remained unmarried throughout his life.

Everything in house was branded. His passion for brandedness grew more and more even in his old age. His body became very weak and he died. Soon the cause of his death came to light that he wore tight branded T-shirt even in his old age and it resulted in his death. His Will, in which it was written that his funeral should be the branded one, was found. The place for the funeral was above the clouds, several planes were hired. His corpse was kept in a separate branded plane which was fully decorated. One plane was full of sandalwood. His relatives searched for a branded shroud but could find nowhere. Just a piece of simple white cloth covered his body. All those who attended the funeral were wearing PUMA T-shirts. After some time, the decorated plane as well as the corpse of Mr. Branded were found missing. Mr. Branded disappeared, could not be seen anywhere. Those who came to attend the funeral were shocked for a moment. Tears could be seen in their eyes as they laughed too much remembering Mr Branded's past life. Their laughter was so loud that it could be heard even on the land. How does the corpse of Mr. Branded disappear? I think Mr. Branded might have directly been taken to Hell by Yama.

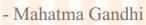






Non-violence is the greatest force at the disposal of mankind.

It is mightier than the mightiest weapon of destruction devised by the ingenuity of man.





Remember Mahatma Gandhi Before Committing Suicide

Wakil Kumar Yadav Ph.D. Research Scholar, English Reg. No. MGCU2019ENGL6006



Character cannot be built with mortar and Stone, It cannot be built by hands other than your own.

8 lakh people commit suicide worldwide every year. Out of eight lakh people 17% are Indian residents. In India the most common suicide age group is 15 to 29 years. It means that the youths between 15 to 29 years are committing suicide due to various reasons. The reasons are mental disease as well as social pressure. It has been realised by doctors that it happens due to the mental disease. There is chemical change in the mind of youth that leads to suicide. Students, singers, actors, actress, professionals are often seen committing suicide. Farmers, private sector working employees are no less in this race of suicide.

Due to social pressure like carrier building, failure in life, love affair, taking various types of drugs, not being able to face the bitter criticism people sometimes commit suicide. These suicidal groups can't manage their stress and hence they commit suicide.

India youths should not commit suicide at any cost, under any circumstances or in any situation. They need to remember the struggles of Mahatma Gandhi. Mahatma Gandhi faced bitterness and sorrow throughout his life but he never committed suicide nor even thought to do so in his entire life. Although he was murdered by Godse. Mahatma Gandhi was kicked out from the train, slapped by Britishers, abused by Britishers, humiliated by British police, he was sent to Jail. He did various Satyagraha, kept fast and did several Strikes. A plethora of other activities were done by Gandhi ji that was not easy to manage but he managed all these things and he just kept on struggling. His struggle and philosophy lead India as an independent country. The whole world remembers Mahatma Gandhi as an icon of truth, simplicity, kindness and nonviolence. 2nd October is celebrated as International Day of nonviolence.

The youths should learn from the life of Mahatma Gandhi. He did not sleep for various days and nights. He was also criticized, tasted bitterness and suffered in many other ways but he did not decide to commit suicide. He kept on his struggle. I don't know why youths of India are committing suicide. Why our new generation is even

thinking of committing suicide? The youths of India and the youths of world should learn from the life of Mahatma Gandhi and his teachings and apply them into their day-to-day life. If they follow the teachings of Mahatma Gandhi, they will be mentally fit and they will not do such type of wrong acts anymore.

Aman of struggle,
How can even think committing suicide.
Aman of peace, truth and equality,
How can he accept defeat in so hurry?
He will struggle, struggle and struggle
Until he achieves the goal.

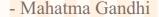
Those teachings of Mahatma Gandhi will be as torch in your life. A torch removes darkness and lights the path in the same way the philosophy of Mahatma Gandhi will keep you always bright, energetic and strong. So every youth should remember and follow the given points. You will not be frustrated. You will always be winner everywhere.

- 1. Believe in yourself- Believe in yourself, the whole world will believe you. A man should believe in himself. If he believes in himself, others will also believe in him. If you don't believe in yourself, then you cannot expect from others to believe in you.
- 2. Think before you act- The future depends on what you do today. So think before acting. Your every step must be taken carefully. Only then you can achieve the goal. Think of the consequences and outcomes of your every step. Are the steps good enough? Are you going on right path or not? What will you get after taking that step? So before committing suicide think what you will get. Can a suicide be the best option? Can your suicide change or alter your sorrow. You need to think over these things before committing suicide.
- **3. Be positive-** A man is the product of his thoughts. He becomes what he thinks. If you always think positive you will be confident. Your minds force you to act on what it thinks. Never think of committing suicide. If you think about suicide, your mind will process and bring to commit suicide. So don't ever think so.
- 3. Let the change begin from you- You must be the change you wish to see in the world. What you want to see in the world you must start from yourself. If you want to see change in the people, you need to change yourself first. If you want every person to encourage and praise you then you first need to encourage and praise those who are near you. Then others may follow and cooperate with others; this will become the practice.
- 4. Simplicity- Simplicity is the best practice of a man.





It is better to be violent, if there is violence in our hearts, than to put on the cloak of Non-Violence to cover impotence.





Always maintain simplicity. Be simple but think high. Mahatma Gandhi was a man of simple living but high thinking. So think high. Do not think of any negativity.

- 5. Be Brahmacharya- A student who is in learning period, who wants to achieve something and wants to bring change in the society, must maintain Brahmacharya. This act will keep your will fresh, energetic and balanced. You will be able to concentrate on your study. You will learn more. You will do better. Hence you will get better result. You will be happy. And a happy man cannot commit suicide. Do your job in a better way.
- 5. Vegetarian- Be vegetarian. This will keep you mentally and morally fit. Your mind will always be cool. Your diet decides your health. A healthy body keeps healthy mind. So keep yourself healthy. You need to be aware of dirt. Students must be vegetarian. A healthy mind means healthy thoughts. And healthy thoughts make you a winner.
- **6. Truth-** Always speak truth. Never lie. This habit is always beneficial for everyone. Truth can't be defeated. So always stand with truth. The truth will make you victorious.
- **7. Nonviolence-** Committing suicide or harming oneself also comes under violence. So don't harm yourself nor harm others. God favours those who don't harm self and don't think of harming others. So everybody should follow nonviolence.
- **8. Kindness** Kindness is one of the best ornaments of a person. So be kind to yourself as well as to all the creatures of the world. Forgive those who are against you today. They will be kind to you tomorrow.
- **9. Believe in love-** Light reflects light. The way you love others, others will also love you. A man should always love every creature. Small and large all should get our affection. All are equally spreading beauty to our nature. Don't harm any creature of the earth. Love people around you. The more you care for the people, the more will people care for you. If you think positive about someone, be sure he will also think positive about you.
- 10. Live to learn- always be prepared to learn something. The knowledge you earn will be always be with you.
- 11. Fight until victory is achieved- Don't worry about your problems. Don't be frustrated. Work quietly and wisely. The toughest work might be solved soon. Don't be defeated, don't think of committing suicide. Suicide is not the solution for any problem. Fight and one day you will be victorious. Everything will be according to you.
- **12. Learn to forgive-** forgive the people who are against you. Forgive them those who are criticizing and causing

you frustration. The day will come when they will dance on your success. Like should be treated as like and unlike should also be treated as like.

Morning Ritual

Dr. Umesh Patra Assistant Professor, Dept of English



My village woman
Wakes up early
Rushes to the pond with a bundle of clothes
Her naked feet
Crushing the blackberries on the street
Returns with her friends after an hour
Her veil held tightly by her teeth
Water dripping from the wet clothes

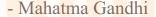
My village woman
Comes to the town
Wakes up early
Rushes to the train lines with a *lota* of water
Does her business behind the bush
Do you know what she does when a train passes by?
She just stands up







It is health that is real wealth and not pieces of gold and silver.





COVID-19 As a Natural Scientific Tool

Ishtiaq Ahmed
Ph.D. Scholar
Department of English



Nowadays, COVID-19 is one of the most serious issues, facing us in the age of most advanced science and technology. What is the full form of COVID-19? 'CO' stand for Corona, 'VI' stand for Virus, and 'D' stands for Disease. So it becomes 'Corona Virus Disease'. Now, what is '19' or, why it is called COVID-19? Because for the first time it was identified in December 2019 in Wuhan city of China. That is why it called 'COVID-19'. As we all know that COVID-19 is a pandemic which is a serious threat to the life of human beings throughout the world. The man has claimed of being the most powerful authority in the world due to the increasing developmental process and advancement of science and technology. There is hardly anything left untouched and undiscussed by man. The man has even reached on moon to search for settlement on it. Not only this, man is also imagining of visiting other planets.

Man had never thought before that he could be controlled by any external power. The major capitalists in the world have captured all the minds and power of every nation as well as individuals. They run the world for their own profits and to make their will successful. For this reason, they instill different ideologies in the minds of people by exercising their powers. By neglecting the values of common people's lives, they have very technically diverted the attention towards wealth and power instead of giving values to the natural laws and global harmony.

Consequently, in the greed of wealth and power, people unknowingly started to destroy the ecosystem for the sake of their name and fame. It has created environmental pollution, like air pollution, water pollution, noise pollution, soil pollution and atmosphere pollution. All these pollutions gave birth to a new kind of pollution that is the "mind pollution". By living in such a polluted environment the minds of people get polluted. They have started to quarrel with each other on the basis of caste, colour, creed, race, notion, religion, language, culture, faith and eating habits. One wants to impose one's own culture and ideology on others, and to make them slaves and feel inferior while considering oneself as a superior. Imitating each other, everyone has become

hungry for power and has started causing bloodshed of the weaker one for the sake of their name and fame. No one cares for the global harmony, increasing environmental pollution, or the disturbance in ecosystem which has been very scientifically set by nature to sustain the life of all living creatures.

Some sections, caste, race or group of people started to oppress the other one through their majority to prove their unity. The majority of oppressors have exploited a large bulk of weaker sections socially, politically, economically and physically.

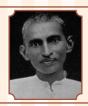
If we observe the present scenario, before the appearance of COVID-19, rich were becoming richer, poor were becoming poorer, the weak were becoming weaker and the powerful were becoming more powerful day by day. The crimes and brutalities were increasing in day to day life, ideological clashes were taking place everywhere and created a lot of destruction. Rules and regulations are made by elites and implemented on poor people. But elites themselves do not follow the rules. The burden of keeping environment neat and clean is laid on the shoulders of the common and poor people only. While the capitalists and elites were fully involved in polluting the environment through the rapid growth of industrialization; polluting the atmosphere by the huge amount of smoke omitted from multinational factories, industries, vehicles; tones of smoke were produced per hour throughout the world which has badly depleted the atmosphere and space that has caused climatic disturbance.

Vertically polluted minds started to raise the communal riots, rapes and brutalities. People have madly started to assemble in the crowd to lynch innocents and weaker sections everywhere in the world, it seems that rape and lynching has become a culture. Unfortunately, "Lynching and Rape Culture" symbolises the power of unity and majority instead of apprehending it as a crime.

Keeping in view all these issues, it seems that nature has taken into its consideration all these kinds of brutalities, exploitation, killings, increasing environmental pollution, overcrowding, production of huge amount of garbage and dumping it into sea, rivers and at the different parts of the earth to pollute it and its rapid degradation, and set up COVID-19 as its scientific tool to control the situation which was continuously pushing the world and its globally eco-friendly ecosystem towards edge of destruction.

Now, this contagious COVID-19 has beautifully controlled the whole world from going towards more





An error does not become truth by reason of multiplied propagation, nor does truth become error because nobody sees it.





destruction, by creating the fear of its spreading via social gathering in the mind of every individual. Keeping in view this contagious disease, governments of different parts of the world have announced a complete lockdown throughout the globe. After it, benefits of lockdown are apparent to everyone. As we all know how it (lockdown) has controlled overcrowding, social gathering, huge traffic on the roads, smoke omitting from the factories, industries, and vehicles, mob lynching, molestation and rape through social distancing; increasing environmental pollution, air pollution, water pollution, etc.

Nature has very technically and scientifically set up COVID-19 as its scientific tool, on the one hand to control all the increasing leading factors of pollutions, exploitation and destruction of the world wide natural ecosystem. On the other hand it has united the whole world on a single platform to combat collectively with such contagious disease, leaving behind issues of caste, colour, creed, and racial discrimination, regional, religious and ideological conflicts.

Although it has broken the unity and majority physically but at the same time it has united the people throughout the world mentally and ideologically to fight against it, by saying that "Jaan hai tho Jahaan hai" (if our life is secure then the world is ours).

Therefore, it obviously appears that COVID-19 is a natural scientific tool by which nature has completely controlled the world. On one hand it has set apart people from each other physically, and saved them from fighting against each other, and on the other hand, it has united the people mentally and created the sense of oneness among them to fight collectively against it (COVID-19).

In this way we can say COVID-19 is a scientific tool of Nature to control and maintain the level and fill up the gap of world's ecosystem and global harmony.

Lightning of Lamp

Indu Bala
Ph.D Research Scholar
MGCU2019EDUC6004
Department of Educational Studies
School of Education



Lightning of lamp means

A light of positivity

A light of hope

A light of smile

A light of brightness

A light of belief

A light of pride

A light of win

A light of encouragement.

Lightning of lamp is a symbol,

A symbol of:

The victory of goodness over evil,

A symbol of Truth

A symbol of Knowledge

A symbol of Understanding.

Why you underestimate it?

It is a power:

A power to fight with darkness

A power of energy

A power of light

A power to kick-off the negativity.

A power of togetherness.

Lighting the Lamp gives us Spirit.

This is the value of lightning the lamp

This is the importance of lamp.

The lightning of lamp is the symbol of Our culture and our tradition.

Remember

Remember.

You are the light of someone's darkness.

Remember,

You are the ray of hope

of someone's despair.

Remember.

You are the medicine

of someone's wound.

Remember,

You are the relief of someone's pain.

Remember.

You are the oxygen of someone's life.

Remember.

You are the answer of my every question.

Always remember,

You are the only truth that exists to me

Because I saw you within me.



Ujjwal Kumar B.A. English (Sem. VI)





Nobody can hurt me without my permission.

- Mahatma Gandhi



Gandhism- The Most Imperative Ideology against Western imperialism

Rahul Mishra Ph.D. Research scholar Department of English



Gandhiji was a person who evolved from the status of a saint and thinker to charismatic political leader by the contribution of his ideology in mobilising the popular movement. Being a second populous country, it was very tough to lead such a great political movement and unite the entire population under a single umbrella. Some of the most important facts which ushered Gandhian philosophy to become a mass based movement are as follows:-

A. Non-violence

It was suitable for men's and women's participation as well. It also helped to establish psychological equality with British empire.

B. Satyagraha

It was one of the most peaceful methods of political protest and attracted the common people as well.

C. Swaraj

It was one of the vague concepts and hence different class of the society was having different interpretations about its context. It was different for Farmers, capitalists, Middle class as well.

D. Class collaboration

It helped in forming joint front in the national movement. Gandhiji in order to unite capitalist as well as workers, said to the poor that 'Capitalist is like your father' and to the capitalist that 'Poor are like your kids and hence 'Take care of them'.

E. Attack on Western Modernisation

It was attractive to those who lagged behind others in the process.

F. To adapt the life style of common people

When Gandhiji came back to Delhi, he preferred to live in servant's quarter instead of staying in hotels or at the home of any rich person. This made him so connected to the commoners of India.

G. It was also a big duty to link lakes of villages to Congress politics through constructive village work. So he started conducting *Prabhat Pheris* and *Bhajans*

all around the Indian villages. As a result, Congress got a mass reach over the commoners of India which later helped them to rule over India for many years after independence without any strong opposition.

H. Gandhiji wanted to connect himself with all the sections of Indian society whether it was untouchable, poor or capitalists. So he started Anti untouchability programme in order to link Congress with the untouchables at that time.

I. He chose salt as an issue as it is the most common substance used by everybody in order to bridge the gap between the middle and the lower class. And hence organised salt satyagraha movement against Britishers.

These all Factors are the most imperative ways used by Gandhiji throughout his life to debilitate Western imperialism in India.



Pandemic and We

Sandeep Kuamr M.A English (Sem-II) MGCU2019ENGL4002



We have neither control nor clue about this Pandemic,

We are just living hectic life devoid of Joys, Managing our needs with countable government's decoys,

Humans are here and there like trashes sporadic. Is the pot of Sin really overfilled?

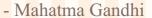
Is the Nature these days being taken for granted? So many of us have so many stories to narrate, But this is the time

When strong relationship with Nature should be built.





A 'No' uttered from the deepest conviction is better than a 'Yes' merely uttered to please, or worse, to avoid trouble.





A Glorious Golden Flower Called Literature

Vidushi B.A. English (Sem. VI)



Let me enjoy the happy spring with verses, Palanquin bearers, introduction and the orphan girl Night of the scorpion and more like pearl, To enjoy, understand, feel pain and curses.

Let me shift like seasons, to prose now,
Letter to lord chesterfield, Of studies,
The Coverly household
Westminster Abbey, spectator club and more to unfold
A blend of satire, reality and suggestion is a wow.

Awaiting the lofty tragedies and plays Oedipus, Othello, Faustus, Macbeth, Hamlet Chalk circle, Doll's house, Ghosts and more; Not to forget The prophecy, downfall, magic, empowerment and judgement to glaze.

Let these Autumn leaves remind me of poetry again, Keats, Blake, Byron, Shelley, William Wordsworth, Hunt, Coleridge and more to bring heaven on earth, To feel the Nature, the spontaneity and words plain.

Let me dive deep into the epic and learn Homer, Virgil, Illiad, Aeneid, Rape of the lock, Mahabharata, Ramayana and more to get shock, Heroic couplet, revenge, How Lanka and the topless tower burn.

Let me devote my winter to the warmth of female words, Austen, Brontë, Shelley, Sylvia Plath, Anita Desai, Kamala Das, Sarojini and more To show the path, Love, problems, solitude, power, ah! These words made swords.

How beautiful and glorious is this literature! History, poems, Tragedies, Essays and letter, Novels, Epic, Stories all make it better. Read, feel first, then enjoy for real pleasure.

Gandhi and His Journey

Raj Pandey B.A. English (Sem. VI)



On the first launch of annual magazine 2020, Once again we welcome Gandhi, In our auspicious MGCU boundary, Once again we welcome Gandhi.

Gandhi whom the world knows,
For he brings in change for those who deviate,
Gandhi whom the world follows

For he brings in change in those who violate.

He fought first for the right,
To gain equality in black and white,
And determined not to quit,
Unless he'd found it.

Then he came to India, With his slogan of peace, Everyone welcomed him, With warm heart of grace.

> When people were being terrorised by British in India, God sent Gandhi as a Messiah, He, saddened on seeing all those cruelties, Decided to find the way to liberty.

He started his protest from Champaran with motive of freedom,
And finally made India independent with his sense of wisdom,
Not by fight, violence or war,

But only with truth and non-violence as his two gears.

Wish Gandhi always prevails in us, Wish he always prevails in this universe, Let us nurture Gandhi in everyone in every way

Let us be Gandhi and teach our new generation to follow Gandhi's way...

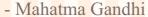






There is a higher court than courts of justice and that is the court of conscience.

It supercedes all other courts.





Death Banquet: A Social Necessity?

Ujjwal Kumar B.A. English (Sem. VI) MGCU2017ENGL3021



In every community of our country, there is a tradition of conducting Death Banquet (funeral reception). In general, this is done when a family member passes away. Then members of the family perform 12 days of rituals after the funeral. Then on the thirteenth-day, people are invited for meal comprising sweets. According to the Hindu belief, there are *Solah Sanskaras*. From *Garbhaadhan Sanskar* to *Antyesti Sanskar* (birth to death). But it's not written anywhere that conducting death banquet is compulsory.

When someone dies, everyone in the family remains in grief. Nobody eats properly till the 12th day of the ritual. In Mahabharata, when Krishna goes to meet Duryodhana with a proposal to not have a war with Pandavas, Duryodhana rejects his proposal straight away and at last, asked Krishna to have a meal. Krishna replied saying that one should take food at a place only if it's offered willingly and accepted gladly. If we see the condition on the 13th day, the one who feeds is definitely not happy, then how do we go to that place to eat something. If we go in depth and read how this practice started, then we will come to know that initially or even today there is the concept of Bhamhabhoj means brahmins are fed so that the deceased's soul can get peace or those who were rich used to feed poor people. Every coin has two faces. If we look from one perspective, what could be better than feeding a few poor people?

But again we must accept that funeral reception was never an integral part of Hindu mythology. If few poor people and *brahmins* were fed it was an individual's choice. It was not compulsory. But now, it has become an intrinsic part of social norms to feed hundreds and thousands. If the family of the deceased is poor, then how could that family collect money to conduct *Bhoj*? See there is irony, on one side a family is struggling to afford a one-time meal and on the other side, there is pressure to feed a large group of people. Therefore, many intellectuals have denounced this tradition as a social evil.

When Dr. Ambedkar converted to Buddhism along with ten thousand people, he took twenty-two pledges. In pledge number six, he says, I shall not conduct death banquet ceremony nor shall attend because it is a superstition. Meanwhile, the Rajasthan government passed a law 'Mrityu Bhoj Act-1960'. If someone breaks the rules, they will be fined one thousand or one-year imprisonment or both. The government also clarified that if it is practiced, then its information must be given to Sarpanch, Ward, and other departments of the concerned village. If information is hidden, then strict actions will be taken.

Here, the question arises why there is pressure over the deceased family to conduct Death Banquet? Actually, in the same way as marriage has become a kind of social status, the death banquet has also become a social status. When a middle-class family conducts a wedding ceremony of its daughter, they put all their money in dowry or sometimes family borrows money to save face. As a result, the family becomes economically weaker.

Similarly, death banquet is also a type of social custom. To complete that tradition, a family is crushed under debt. Remember, Madhav, Ghisu from Premchandra's *Kafan* where Madhav's wife Budhiya dies due to poverty and lack of right treatment? Here, the irony is that they had no money before her death but after her death they got money for free to buy shroud. This story hints that the poor should be fed. Not like today, when they are being pressured to feed others and in that process they borrow money and it is one of the reasons that contributes to poverty. It is only Rajasthan that has taken an initial step to prevent it, but time has come to work together and eliminate this practice from society.

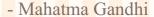
We don't need to recall that a large chunk of our community is economically backward. That's why we are at 126th position in the world ranking with regard to per-capita income. Rajasthan's High court Advocate Dr. Dheeraj Agrawal says, Crores of rupees are spent in a year for funeral reception. It takes around sixty thousand to one lakh to conduct one Death Banquet ceremony. One can easily draw blueprint of poor Indians and this matter needs to be taken seriously.

At last, if the weaker section gets rid of the Death Banquet tradition, then they might live a good life and then they could think of better health and education. But





We may never be strong enough to be entirely nonviolent in thought, word and deed. But we must keep Non-Violence as our goal and make strong progress towards it.





it is an appeal to our young generation and intellectuals to take this matter seriously and help society so that it can get rid of the social evil and after that, a poor family will not be crushed under debt. It's unnecessary!

Invisible Mugger





Again came there where no one resides, Only Eagles, Sky, Temples, and Butterflies. These Muses inspire me what to write, And how to turn these thoughts into a rhyme.

Do we exist in Real world or just a world of Lies? Found the answer but upon it I can't really rely. Virus has raised this question and wants a reply Fallen human beings urge Sun, Moon and Earth to clarify. Virus has bewildered our active body and mind,

By confining ourselves in a state so deprived. Though, virus fulfilled dream of time, The dream of sleeping and living with family all the

Now, bored like 'Sisyphus' due to limitations in sight, Life has become absurd due to repetition of the same

activity day and night.
Our lives seem similar to that of 'Tithonus',

Our limited immortality turned to be cruel, dreamless and infamous.

Every human effort to decode this pandemic, Is doomed to fail and shatter like a pot of ceramic. Human beings have failed, Supernatural is the only

To solve this crisis, we must free our minds and widen the scope.

Fourth Pillar





What was once the fourth pillar,
Is today reduced to a mere entertainment!
There are plenty advices on how to be safe
During the nuclear war
And predictions about the uncertain tomorrow,
Evading every issue of importance,
Like that dog on street,
Which wakes up from sleep to bark
And goes back to slumber again!
Being sold like a land,
Delving into the profit-making business,
The media concerns are
Just about TRP and ratings,
The shifted focus from more important
GDP to Mrs. Mandal,

Highlighting cinemas and theatres
More than our youth's future,
We have reached a point
Where temples and mosques
Are discussed more seriously
Than the crumbling economy!

Than the crumbling economy!
They told "We have more youths"
But

They didn't say we are spoiling our youths,
They didn't say "How youth's mindset has been forcedly changed";
They say we are the best-we are the best

But the fact is all of them are worst;
Spreading fake news has become their profession,
They are best in telling "Cock and bull story",
They are best at making a mountain of a mole,
They are best in hypnotising others,
Some of them are best at licking
They will do what their "Aaka tells them"
Now they are more loyal than Dog
They will definitely bark but for no reason

And when they should bark they are sleeping like an infant They don't care about what's going on in the nation; Now they have become vendible But

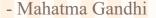
One day they all will have to confess,
They will all have to accept the harsh reality,
And they will have to accept "No man can serve two masters."





My religion is based on truth and Non-Violence.

Truth is my God. Non-violence is the means of realising Him.





Impact of Flood and Covid-19: Distress on Every Individual

Ragini

Ragini B.A. English (Sem. VI) MGCU2017ENGL3013



Flood is not a pleasurable thing. Everybody is familiar with it. Deluge is a natural calamity. It is caused due to heavy rain pours, melting of ice and snow, rising sea levels and the overflowing rivers. It causes large scale destruction to the life and property. It sweeps away villages and town. Flood causes loss of people's lives, destruction of livelihood and shelter. In Bihar, flood is common and comes every two or three years. Whenever it comes, it destroys lives.

Impact of flood during COVID-19

Either mentally or physically, all are affected by the pandemic or flood. Some people are infected by the coronavirus. On the other hand, some of them are suffering from flood. Those who are impacted by flood are suffering a lot. They do not have proper food, shelter, and places to stay. Some of them, whose houses are drowned, go to their relatives for shelter and some are suffering without any solace. Those who are infected by virus and stay in areas unaffected by flood are comparatively safer. They are following the rules of 'social distancing'. The people who are staying in waterlogged areas have forgotten about epidemic altogether. They do not fear the epidemic and cannot worry about its spread. They know they will die either by flood or epidemic.

Effects of Flood on Privileged People

Flood is a natural calamity which destroys everything. Whether they are rich or poor does not matter. Its effect is detrimental on everyone. Common people are much impacted by flood, such as farmers, labourers and townlet people. Farmers have lost their harvest of the year. They have invested money and labour on their crops. Now those crops have been ruined. The labourers staying in cities and towns are also suffering. Their lives are also ruined. Most labourers live hand to mouth. If they don't earn money someday, they will have to sleep without food. Workers are wandering for work. Flood has come everywhere. Therefore, construction works have been

stopped. Those labourers are forced to do anything because they are mostly impacted by flood. They tell that they have come in search of job by swimming. Their areas are mostly impacted by flood.

James Baldwin, an acclaimed writer, says that "not everything that is faced can be changed but nothing can be changed until it is faced". One can see the labourers and only sympathises with their critical condition. Although there are some schemes by the government which provide money and food still, these are not sufficient to fulfil all their needs. Similarly, agriculture departments also provide money to farmers in case their harvests are spoilt.

Privileged people are also affected by flood. Even then, they can live happily in this critical situation. They can survive and have enough food and money by which they can tackle this situation. These were some people (middle class) who can live happily but Covid-19 has become an obstacle in their life. Then flood has brought many problems in their life. People are fighting for food and money. It has become a big challenge for an individual to maintain humanity during Covid-19.

Now, it's a testing time for an individual as to how much patience and calm can they really maintain. These circumstances (flood and Covid-19) convey a message. The situation reminds me of what Mahatma Gandhi said about humanity-"You must not lose faith in humanity. Humanity is an ocean; if a few drops of the ocean are dirty, the ocean does not become dirty".







When restraint and courtesy are added to strength, the latter becomes irresistible.

- Mahatma Gandhi



Human Trafficking: The Black Truth

Richa Kumari B.A. (Hons) English VI Semester



We are living in a society where crimes are very common. There are many misdeeds that happen in our society in many ways and human trafficking is one of them. It is a trade in which people do any type of trade of labour or work forcibly, it is one of the biggest frauds that is still happening. Traffickers utilize force, fraud, and false promises to attract their victims. They force them into labour and also harass girls. They exploit them both mentally and physically.

Mainly there are three types of exploitations by which people become the victim of human trafficking viz. labour, sexual exploitation, and illegal activity. People use young children and they make promises so that they could do hard work for them. Children do the work due to poverty which makes them feel helpless and depressed. Worldwide, millions of children are forced into works that dispossess them of a happy childhood and education. In 2016, several new-born babies were sold in Kolkata. They marked two categories of babies, one who had a fair complexion and another of those who were dark. These things remind me of what Albert Einstein once said "I love humanity, but I hate humans". Trafficking of women is one of the worst forms of exploitation of human rights.

According to SSB (Shastra Seema Bal), Indo-Nepal border became the area where human trafficking mostly happened, especially that of children and girls. In this process, male traffickers are called 'brokers', and females are called '*Didi*'. In this trade, the top states that are involved are West Bengal, Rajasthan, and Gujarat.

According to a survey in 2016-217, twenty-two children are lost in Delhi daily. According to Women and Child Development, fifty thousand four hundred and forty-eight children and young girls were lost in 2015. One finds that it is increasing day by day. In an interview, a girl from Ahmedabad said that girls are treated like things. She was also a victim. People

exploit girls sexually and, in this process, victims are affected by diseases like HIV, AIDS and it is a black truth of our society.

In Illegal activities, traffickers force their victims to take drugs. Sometimes people do illegal organ trading in which they sell all organs of the victim. This is the most profitable venture. They are also forced to provide sexual services. During this process, 70% of children are sold online through 'Brokers' and 'Didis' and they are profited by making people slaves. Due to poverty, innocent people become the puppets of the slaver.

In Varanasi, a victim (female) said that traffickers had tortured her mentally and physically. That lady belongs to the SOS (Societa Socialis) organization. She says, "lives must change". We are also involved in this crime because we also ignore things. We should make people aware of the "National Human Trafficking Hotline". We should volunteer for poor people. There are many organizations that help poor people who mostly become the victims, but we ignore these things. We see children working in shops but we ignore them and we do not care about them. So the change will start with us.

Gail Sheehy says, "If we do not change, we do not grow, if we do not grow, we are not really living". So, we should not forget our humanity. Being humans, it is our responsibility to take care of our society and we must take action against any crime.







The essence of all religions is one. Only their approaches are different.

- Mahatma Gandhi



Past, Present, Future

Medha Kumari M.Sc. Previous, biotechnology MGCU2019BIOT4008



Our past we can't recapture.
It's over and it's done.
No way to recover time;
All those days are gone.
No amount of colouring, painting with bright hue
Can change the way things happened.

No way to make it true. No use fretting over, or Regretting bygone days, No need to get entangled In memory's purple haze, Or get caught up in unravelling (or, of hoping we could do) things that didn't go the way we wanted them to. The future is uncertain No way for us to see the things that tomorrow's holding, for you or for me! NOW is what's obtainable, present moments we must share. The future comes so quickly – unseen but waiting there. Seize the moments. Grab all we can contain! Our future is elusive. Our past we cannot chain!

These My Words

Ritesh Kumar Singh PhD, Department of English MGCU2019ENGL6005



These my words are not mere word, These are the essence of my soul, And the reflection of my mind. These are the unhealed wounds. The wounds of time, the mistakes of mine, Decorated with the life's rhymes. These my words are the blessings of God, The mirth of love and the joy of pain, These are the keys of heart, Unlock the passive and active thoughts. These my words are imprint of mine, Wit and emotions solemnized. Which make the tale of life. These my words, Immortalize the mortal man of words. These my words are not only mine, These are the words of unheard voice, Of weak and Suppressed. These words are power to humanity, To raise the voice against every discrimination. These my words are colours Of love, sorrow, foul and fair plays of men, Which paint the picture of society. These words are not mere words, These are hope, The hope of mine, yours and all.

The real difficulty is that people have no idea of what education truly is. We assess the value of education in the same manner as we assess the value of land or of shares in the stock-exchange market. We want to provide only such education as would enable the student to earn more. We hardly give any thought to the improvement of the character of the educated. The girls, we say, do not have to earn; so why should they be educated? As long as such ideas persist there is no hope of our ever knowing the true value of education.

- M.K. Gandhi





"Well, dead or alive, that's a pretty big list. You know, I think that it might be Gandhi, who is a real hero of mine."





What Happens over the Rainbow Bridge?

Dr. Alka LalhallAssistant Professor,
Dept of Management Sciences



I was sad in the beginning when I came here. I didn't want to leave my family in agony. I could sense the sadness in their hearts. Dad wrapped me in my favorite blanket So I kept warm.

Mom gave me my favorite toy so I don't get lonely.

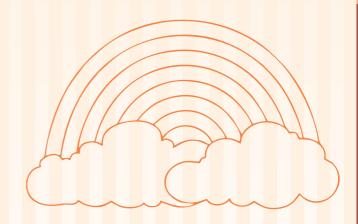
My sister wrote me a poignant eulogy that touched my heart.

They consigned me carefully to the earth.
Tears welling inside and hard to contain;
But the silver lining is that we shall meet again.
They say the trail doesn't end here
And I shall be united with them again
Over the rainbow bridge.
It is a pit stop on the way to heaven
Where all we pets await our humans.
Once we are reunited with them,
We walk past the door of heaven together.

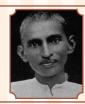
Ornate green meadows, A picturesque valley with butterflies Hovering atop the flowers, This place is a treat to the eyes. Not to mention, the actual treat that never runs out. It kind of grows on you eventually But the longing for family never fades away. I am told that I shall meet them In just a matter of few years. Ad interim, I chase the butterflies playfully, Eat to my heart's content, Never bathe or re-groom, I hated it anyway. I love catching forty winks under the trees To the soft lullabies sung by the birds. I have heaps of toys to jump on and play with. My hip dysplasia is healed And I no more feel any pain. My vision that had been giving me problems Towards my final days on earth,

Convalesced on its own.
I am a happy healthy pooch in every sense
But the yearning for home never ends.
I miss my mom's snuggles
And evening walks with dad
And the happy family time after dinner.
I could never fathom what they talked about,
But just looking at their happy faces
I would know that it was home.
This place they call it the Rainbow Bridge
Has everything to appease us,
But the ones we love.

It is just another day here at the rainbow bridge. I am playing with my friends When I catch something familiar in the breeze. It brings along a different fragrance, Different, yet familiar. It reminds me of mom. As I run towards it, I see her. I cannot believe my eyes. She is standing right over the bridge. She looks as beautiful as ever And I gallop towards her in one breath. She blankets her arms around me, And I am too big for her like old times. As I lick her face, she kisses me back. The day of our reunion has finally arrived. We start to walk across the bridge Together towards the heaven, And this time I know. We shall never part again.







"Gandhi's ideas have played a vital role in South Africa's transformation and with the help of Gandhi's teaching, apartheid has been overcome."





Correlation Between Literature and Culture





Let me define first, the terms 'Literature' and 'Culture', as asserted below.

Literature: Literature is the unique composition of poets and litterateurs in any language in which the contemplation of elegance, passions and delegate or precious notions and visions are painted, and reading or listening to them causes vibrancy in human's thoughts and feeling. It can be oral or written.

Literature is the study of human thoughts, feelings and emotions. It is also a kind of psychological study of poets, novelists, essayists, playwrights, short story writers and all the litterateurs, and whatever they think, observe, feel and visualize in their minds is penned down it in a specific form of writing like poetry, novel, drama, essay and short story.

Next is **'Culture':** It is a set of practices which are performed by a particular group of people living in a specific territory. Culture is the way of living of a group, society or nation. It is the convention and tradition of a society or a group of people in a territory.

Culture is the way of communication of a nation or a society. It gives meaning and values to objects according to the rules, customs and traditions of a society in the specific time period. It sets the rules, values and meanings to objects, traditions and conventions to run the society.

The term 'Culture' encompasses language, food habits, clothes, celebrations, folk art, working schedules, religious practices, medical cure, manners, jokes, etc. associated to a particular group of people, society or nation.

Correlation between Literature and Culture: Although the terms 'Literature' and 'Culture' are different from each other in meaning and definition, but are not separate from each other. They are the two sides of one coin. Both can be interpreted and apprehended parallelly by each other. In another way I would like to say "society produces literature; literature represents its culture; and culture gives meaning of life and way of living to society".

Literature is a mirror which reflects the culture of a society. On the other hand society takes help from literature to construct/build and maintain its culture in the meaningful ways to live the life.

Literature is the spirit of culture and culture is the domain of practices to live the life. Culture works like jester to produce the juice of literature.

'Literature is the heartbeat of culture and culture is the wall mirror for literature'. When we study literature, it enlightens us with inner side of a society's culture. At the same time culture like a wall mirror helps us to interpret literature with cultural context, e.g. when we study any piece of literature, we find whatever is written in it also in the culture, outside the literature. Whatever we see, observe, feel and hear around us, it may have happened or happening or yet to happen, we find in literature.

'Literature is crippled without culture, and Culture is blind without literature.' (Here I have reframed the quote of Einstein, that 'science without religion is lame, religion without science is blind'). Literature takes its wings from culture. It is deeply rooted in the culture of a society. Society produces poets and literatures who write literature by collecting sources from culture. On the other hand, culture is blind without literature, because culture is guided by literature. Culture of any group, society or nation gets its guidance, way of communication, customs, traditions, celebrations and religious conventions through literature.

Literature is the shadow of culture: Literature is a kind of shadow of culture. Whatever is practiced by a society in its cultural and traditional convention is traced by the litterateurs in different forms of literature. Thus, literature is like a shadow or copy of cultural practices and insights.

Literature and culture's relationship is like the relation of a torch and its light. As light is produced by torch, in the same way literature is produced by culture. Culture is like the body of torch as a torch is made up of different elements like plastic, iron, magnet, mirror, wire, cells, buttons, wire spring, etc. but in an absolute form it is called torch. The absolute torch generates light by gathering sources from its different elements. Just like the torch, culture is made up of different set of practices, customs and traditions, like language, religion, arts, wearing, food habits, celebrations, medical practices, working schedules, jokes, etc. The overall way of living a life of a society is called culture. Culture provides sources to produce literature. Literature collects its sources from different cultural elements.

Hence, there is a very close relationship between culture and literature as is between torch and light. So culture is like a torch and literature is like its light.





"Christ gave us the goals and Mahatma Gandhi the tactics."

- Martin Luther King Jr.



Bharat

Dr. Kalyani Hazri Assistant Professor (English)



Existence.
Intangible, but eternal.

Expansion.
Boundaries enforced to restrain.

Maniac's vigour.
Sparrow holds on the grain for nipper.

Moment. Slithers while parrots scuffle.

Courage.
Reddens the sword of righteousness

Fakir. Jeers at the folly of Sikanders.

Bharat glitters in
bangles, colors, dances and songs...
Spring's swing, summer's cascade,
Autumn's shed
and winter's hush.
Bharat is in
snake's sinuousness, peacock's stride,
cockoo's voice, and
lion's strike.

The depth in Himalayas Sacredness in Ganges Abode of Saraswati.

Krishna's flute, Meera's yearning.
Kalidasa's Meghdoot.
Sun in morning, Moon at night
The engagement in between is Bharat.

Shraadh in Ashadh, Diwali in Kartik,
Holi in Chaitra.
Sufi's Ishq
Child's frolick
Lover's embrace
Maiden's youth is Bharat.

Coriander, Cumin, Clove Maze, Millet, Oat Kabaddi, Kho-kho Kathak, Bhangra, Bihu Bharatnatyam is Bharat.

Bharat is that
Which no one can make, but
has made many.
Ram, Krishna, Mahavir, Buddha and Kabir.
Guru-Shishya love is Bharat.

Bharat is space between breaths and silence between words.

Omkaar in winds, in oceans, in deserts. Never perishes, Bharat is the truth beyond appearances.

> Glory in past Bliss in present Possibility in future.

That which is is Bharat
That which is not





"A role model for the generations to come.

I believe that Gandhi's views were the most enlightened of all the political men in our time."

- Albert Einstein



Ensnared

Mahima Kashyap
Ph.D. Research Scholar
Department of English



The allure of silhouetted clouds Occasionally unveiling the moon, The constant invasion Of lights from the overbridge In my dark niche, Interrupted by the thoughts And carryover vision of The lean little fingers Clutching, With more deft Required to hold few inches' Status-wise priced thin pen, The kettle's handle, as in history A man once carried the Cross: For that contains caffeine, A dose of stir To awaken our senses And remind of our duties.

Meanwhile, our young Christ, Obeying his father, Does his daily chores Of serving those Who are serving others, And keeps the cycle going. He, composed as always, Cautiously pours me A cup of tea While I try reading The lines on his face; His ambitions and dreams. Hopes and wishes, Anguish and anxieties, Curses and blessings: All positivities choked under The yoke of poverty, The lines yelling unpropitious tales Graved explicitly On his fair skin.

Having lost his name
In the choruslike noise,

'Aey chhotu', 'Aey Hero', 'Aey bachcha',
Diligently performing
The burdensome task
Of unburdening others,
Our Chhotu chaiwallah,
Whose sight in daytime eases
The tensed creases of forehead,
Often invades my niche
In the serene hours of darkness,
And leaves behind deep furrows.

Patriotism: PASSION FOR THE NATION

Samridhi Srivastava B.Sc. Zoology (Hons.) IIIrd Year



Our Nation is protected by those who never take a vacation. Battling always for our country, wrapped in the flag on their departure, standing always on the edge of knife, they are those who never refuse to fight and sacrifice their lives for the nation. It's because of them that we live smoothly. It fills us with pride. It is the feeling that touched one's heart. Each one of us should give respect to all and be 'Patriotic' from the core of heart. We honour the independence Day by feeling privileged and remembering the struggles of past.

We declared our freedom, for justice and liberty, years ago. Let us join our hands together and celebrate every Independence with joy and honesty.





"Mahatma Gandhi's philosophy of Satyagraha can be translated to mean truth force. It is this truth force which can help us to fight this battle honestly and with people's participation."

- Al Gore



Carbon Dioxide: A Versatile Reagent As A Source Of Renewable Energy

Prof. Devdutt Chaturvedi Head, Department of Chemistry, School of Physical Sciences



The production of carbon dioxide around the globe results in the emergence of global warming day by day. Burning of coal, vehicles fuel, natural gas and nuclear explosions also generate carbon dioxide in the environment, and thereby majorly influence global warming (Figure 1). This burden of carbon dioxide in our environment necessitates the need of transforming carbon dioxide into greener valuable products. Also, carbon dioxide has been playing an important role in balancing our environment through photosynthesis in plants. In recent years, carbon dioxide has been employed as a cheap and safe alternative for eliminating the use of harmful reagents such as CO and COCl₂. Recently, carbon dioxide has frequently been employed as a green reagent in its various conditions and forms for the syntheses of structurally diverse biologically potent scaffolds employing diversity of starting materials, reagents and catalytic systems. In the present article, I will focus some of the greener applications of carbon dioxide as a source of renewable energy in recent years.

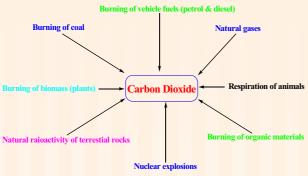


Figure 1: Production of carbon dioxide from various sources

In recent years, major focus of the scientists around the globe is to transform various forms of carbon dioxide generated from the various sources, into value added products employing various kinds of catalytic systems (Figure 2). In this connection, carbon dioxide has been transformed into fuel through solar leaf system reported by a group of American Scientists. Carbon dioxide has also been converted into a variety of

valuable products such as electricity, carbon nanofibers, nanomaterials, cement and fertilizers, plastic and other polymer products employing its various conditions & forms. Generation of nanomaterials from carbon dioxide has become a major area of drug discovery research in recent years. Generation of oxygen through the photosynthesis by all the green plants employing environmental carbon dioxide has also been a major application, which is also a most popular way of balancing our environmental gaseous content.

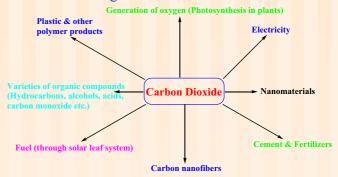


Figure 2: Carbon dioxide as a source of renewable energy

In organic synthesis, carbon dioxide has been used in the synthesis of various kinds of structurally diverse biologically potent open chain & heterocyclic scaffolds such as carbamates, carbonates, substituted ureas, amides, isocyanates, carboxylic acids, alcohols, thiocarbamates, lactones, oxazolidine-diones etc. This has been major application in drug discovery research (Figure 3). Generation of these heterocyclic scaffolds has led to the emergence of various kinds of lead molecules, out of which identification of drug candidate may be obtained. These drug candidates were further studied in order to invent a potential drug molecule for any kind of disease.

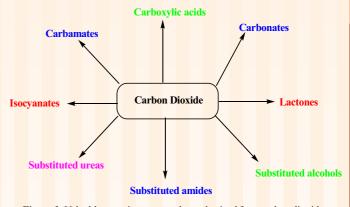
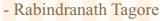


Figure 3: Valuable organic compounds synthesized from carbon dioxide





"Mahatma Gandhi came and stood at the door of India's destitute millions...who else has so unreservedly accepted the vast masses of the Indian people as his flesh and blood...Truth awakened Truth."





Thus, carbon dioxide has been transformed into various kinds of substances such as electricity, fuel, cement, fertilizers, plastics & polymer products, nanomaterials, carbon nanofibers. In organic synthesis, synthesis of open chain & heterocyclic molecules various forms of carbon dioxide have been achieved, which has potentially been used is drug discovery & process research in recent years.

I hope and pray that no one will regard the advice interspersed in the following chapters as authoritative. The experiments narrated should be regarded as illustrations, in the light of which everyone may carry on his own experiments according to his own inclination and capacity. I trust that to this limited extent the illustrations will be really helpful; because I am not going either to conceal or understate any ugly things that must be told. I hope to acquaint the reader fully with all my faults and errors. My purpose is to describe experiments in the science of Satyagraha, not to say how good I am. In judging myself I shall try to be as harsh as truth, as I want others also to be. Measuring myself by that standard I must exclaim with Surdas:

Where is there a wretch, So wicked and loathsome as I? I have forsaken my Maker; So faithless have I been.

For it is unbroken torture to me that I am still so far from Him, who, as I fully know, governs every breadth of my life, and whose offspring I am. I know that it is the evil passions within that keep me so far from Him, and yet I cannot get away from them.

M. K. GANDHI (My Experiments with Truth)

Everything Is Alright Here.





I sit drenched in my blood,
No don't worry,
I don't look hideous.
I have covered myself
In a thin cover of smile.
You can nod and just walk away.
Everything is alright here.

Ambling around in the dark
I look for myself.
Darkness within exudes
And paints me invisible.
My pain, the colour of red dark blood
Becomes one with the dark.
You can light up your path and walk away.
Everything is alright here.

On the pavement, rolling around,
Strangers play with my heart.
Strangers, friends, all the same.
Guffawing, blood dripping from their hands
I cover the hole in my chest
With the empty words of love
They throw at me.
You can talk to the weather and walk away.
Everything is alright here.

I forgave and forgot I loved and trusted

Your strange words of care, dig a deep hole in my mind.

Your empty words of apology fill it with a ringing noise.

I have lost it all, love, life and everything I had. I stand here trembling in the arms of death, The only friend I can trust.

You can live your life and just walk away.

Everything is alright here.





There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread.

- Mahatma Gandhi



THE GANDHIAN PERCEPTION OF EDUCATION

Prof. Rajeev Kumar
Head: Department of Political Science
Dean: School of Social sciences
Dean: Research & Develpoment



Gandhi drew his inspiration from the Ancient Vedic India. It would, therefore, be worthwhile to review in brief the main characteristics and features of the educational philosophy of ancient India.

The Smritis lay down that immediately after his Upanayana, a student should go to his or her Guru -preceptor and live in his family under his roof. The term 'antivenin' is used to denote such a student living in the Gurukula. The rules are laid down for students governing their living and study in the Acharya-kula. The Tilamuttlziya lataka throws some light on the reasons why parents in ancient times preferred to send their sons to stay at the preceptor's home for their instruction. The prominent reasons, given were: (a) breaking their pride and haughtiness; (b) making them learn to bear heat and cold, (c) making them teach also the ways of the world, (d) such a stay at the Gurukula was also regarded as facilitating studies, toning down personal "idiosyncrasies, and helping them to become more resourceful and self-reliant." The Vedic study was regarded in ancient India as a specially holy affair.

Radha Kumud Mookerji has shown that in ancient India, Upanayana was looked upon as a sanskar accomplishing a second birth which was purer in its origin than man's natural birth. It was sought by law to make education universal and compulsory among all the three castes which made up the Aryan society in those days. The student was required to promise that he would abide by the rules of the Brahmcharya.

Gandhi also favoured a life of strict discipline, related to life style and can not be watched always on theoretical basis which includes Brahmachrya, poverty, non-possession, non-violence, sense of humility, lack of human dignity, tolerance etc. Naturally, the discipline is not of the body alone but of the mind and spirit too. In capitalist era and advocacy of liberalism, my body is my right campaign does not fit in Gandhian perception. All the above thoughts of Gandhi have a much wider connotation than we could possibly imagine. In Mahatma Gandhi's views, true humility means most

strenuous and constant endeavour entirely directed towards the service of humanity, and not inertia. Out of these Mahatma Gandhi's non-violence is a very comprehensive term. It includes all the rest. It results in love and fearlessness. Mahatma Gandhi has clarity what he means by love and fearlessness. For him, perfect love means perfect non-possession. Body is our last possession which should be maintained only for service and renounced for it, Fearlessness connotes freedom from all external fear—disease, injury, dispossession, death etc.

These comprehensive interpretations of Brahamcharya, non-violence, humility etc. blend them all into a definite way of living directed by Truth or inner voice, That is why progress is only from Truth to Truth; that is why the end and the means become convertible terms. Truth is by nature self evident. As soon as you remove the cobwebs of ignorance that surround it, it shines clear. But these cobwebs of ignorance cannot be removed by the development of reasoning faculty or intellectual gymnastic.

Mahatma Gandhi was basically a thinker, pro establishment, non-violent and a philosopher. His search for Truth was concerned about others and he invited one and all to accompany him in this quest. In doing so he also becomes an educator of the highest standard. Obviously, to understand his philosophy of education, a short gloms on his philosophy of life must be made.

He believes in a Living Law in obedience to which the whole universe moves. He accepted the notion that it is an indefinable mysterious power that pervades everything. It is the highest consummation of everything; it is within everything, yet beyond them all. In this Universal Law, God, is the only thing that exists, that is true for all times. Truth is God, therefore, and not God is Truth. Thus, Gandhi believes that Truth, being the Universal Law, comes natural to man. The realisation of Truth then boils down to self-realisation, which has been the ultimate aim in the ancient Indian philosophy.

Mahatma Gandhi believes in the essential unity of men, later Pandit Deendayal Upadhyay proposed Human Integration Theory in a similar way. Gandhi was of the view that there can actually be no conflict between the individual and the society as all are partners in the common search. The individual and the society must help each other to progress hand in hand towards the final goal, the realisation of Truth. For the individual, his duty is the

immediate service of all human beings which should be a necessary part of the endeavour, simply because the only way to find God is to see Him in His creation and be one with it. This can only be done by service of all.

Thus, it is this philosophy of life that is upheld by Mahatma Gandhi's educational ideas. Our experience in the last seventy three years of independence shows that inspite of Mahatma Gandhi's repeated warnings, we have failed to appreciate the fuller significance of his educational philosophy. People called him a pragmatist when he wanted education to be useful, they considered his whole scheme only from a narrow utilitarian point of view when it was expected to be craft centred. Now, the New Education Policy framework 2020 stressed on skill development of indigenous expertise available in Indian social segments throughout the country.

The educational philosophy of Mahatma Gandhi perceives that the achievement is possible through proper education of the heart so as to give faith and spiritual power and not through mere mechanical training of the body or the mind. Mahatma Gandhi says that unless the development of the mind and body goes hand in hand with a corresponding awakening of the soul, the former alone would prove to be a poor lop sided affair, that happened in Indian education system borrowed or imposed by the West. In fact, they constitute an indivisible whole. That is why, he was against mere intellectual education. This is the reason why his scheme of education touches something beyond narrow intellectual or physical training.

The building up of character in terms of nonviolence and Universal love comes as the easiest way to spiritual education as envisaged above. If character is properly developed the whole life and living of Man is governed by set principles of purity, self-restraint and service. Mere book knowledge or cramming of fact is of no use in this respect. Mahatma Gandhi advocated that I would try to develop courage, strength, virtue, the ability to forget oneself in working towards great aims, for, this is more important than literacy. The so called craft centred scheme of Mahatma Gandhi is actually meant to help in achieving the above aims and objects. The educationists of the country have miserably failed in realising the true purpose of the whole scheme and in assessing its real worth. Now, the NEP 2020 realises it.

Mahatma Gandhi himself was quite clear in his mind about the spiritual significance of the whole scheme and greatly lamented the narrow point of view with which the Indian educationists judged it. In one of his after prayer speeches in December, 1947, he said that Nayee Talim was popularly and correctly described as education through handicrafts. This was part of the truth. The notion of education through handicraft rose from the contemplation of Truth and Love permeating life's activities. Love required that true education should be easily accessible to all and should be of use to every villager in his daily life.

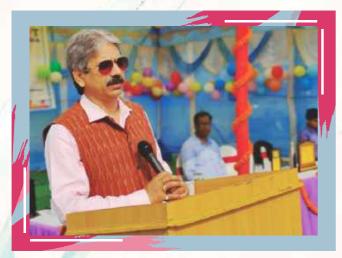
The post independence education system has been working like a machine. Our pedagogues are making parrots' of our boys and girls and ruining their brains by cramming a lot of subjects into their growing minds. What does it matter if higher education of bookish knowledge remains or goes? It would be better if the people get a little of technical education so that they might find work and earn their bread, instead of dawdling about and running after jobs. The moral fibre of the people is also quite bad. Self-centred-ness has become a vice with leaders, officers, businessmen, producers, teachers and even students. The social values are at a discount.

The education which does not help the common mass to equip themselves with the struggle for life, which does not bring out the strength of their character, which does not inculcate in them a spirit of philanthropy, and the courage to pursue a philosophy of action is not worth the name. True education is that training by which the expression of will is brought under the control and become fruitful. It is the development of faculty and not an accumulation of words. It is a training to develop will.

The present system believes that the teacher should help the child, he should guide the child and that is the thing what a teacher can do. It is the need of our nation and we must see that education imparted should be through national methods and on national lines. The basis of education should be purity and morality, and not law. The NEP 2020 remarkably amends these flaws following our ancient educational and Gandhian perceptions of education in independent India.



वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता 2-5 मार्च, 2020











































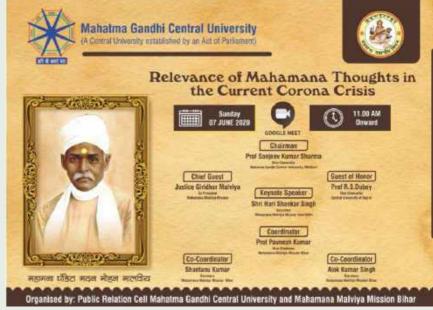




























ALL THE FACULTY MEMBERS OF DEPARTMENTS

BIOTECHNOLOGY, BOTANY AND ZOOLOGY

LINK: https://meet.google.com/dsp-syoe-ard





PATRON
PROF, SANJEEV K.
SHARMA, VICE
CHANCELLOR, MGCU
CHAIRMAN

Prof. Anand Prakash
Dean School of Life Sciences
CONVENER

Prof. Shahana Majumder CO-CONVENERS

Dr. Atul Bhargava

Dr. Preeti Bajpai Dr. Ram Prasad

ORGANIZING SECRETARIES Dr. Durgeshwer Singh

Dr. Alok Kumar Shrivastava Dr. Pratibha Singh

Dr. Tara Chandra Ram





Distinguished Speaker

Prof. (Dr.) Baishnab Charan Tripathy Distinguished Professor Sharda University Greater Noida

Date: 27-06-2020 (Saturday); Time: 11:30 A.M. Onwards Link: meet.google.com/oqt-olzo-pjq

ADVISORY BOARD: Prof. Rajeev Kurnar , Prof. Arttatrana Pal, Prof. Pranveer Singh, Dr. Brijesh Pandey





























后第

150" Birth Anniversary of Mahotina Gaudhi

Department of Gandhian and Peace Studies, Mahatma Gandhi Central University of Biliar-INDIA George Mason University, USA

Post-Pandemic Gandhi

MASON











Department of Gandhian and Peace Studies Mahatma Gandhi Central University, Bihar-INDIA

In association with Indonesian Institute of Sciences (LIPI), Jakarta, Indonesia



Online International Lecture

Gandhi Wisdom And Indonesia Vision: A Similarity Perspective

Thursday: 23rd July,2020 Time:5:00pm to 6:00pm IST



Prof. Sanjeev Kumar Sharma

Hon'ble Vice Chapcellar Melatras Carcile Central Urawarety Schar-INDSA

Prof. Anand Prakash

to Commemorate LLOP Birth Annivers

Prof. Paynesh Kumar

er to Commemorate 150° Berth Anniversary of

Prof. Rajeev Kumar

Prof. Sunil Mahawar















Dr. Ambikesh Kumar Tripathi Dr. Abhay Vikram Singh

Distinguished Speaker

Dr. Sri Nuryanti

Service Researcher, Indonesian Institute o Sciences, Jakarta, Indonesia & Secretary General, Jaka Pacific Peace Research

Amogiation (APPRA)

Committee to Commemorate 150th Birth Anniversary of Mahatma Gandhi

Convenor Dr. Aslam Khan

Associate Professor, GRPS

REGISTRATION LINK https://forms.gle/7aSya6Cs4P3EQDHi6





PATRON

PROF. SANJEEV K. SHARMA, VICE CHANCELLOR, MGCU

Prof. Anand Prakash

Dean School of Life Sciences

Prof. Shahana Majumder

CO-CONVENERS

Dr. Atul Bhargava

Dr. Preeti Bajpai

Dr. Ram Prasad

ORGANIZING SECRETARIES

Dr. Pratibha Singh

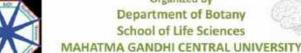
Dr. Alok Kumar Shrivastava

Dr. Durgeshwer Singh

Dr. Tara Chandra Ram

Lecture Series on "Emerging Trends in Plant Sciences"

Organized by







(A Central University Established by an Act of Parliament)

TOPIC: APPLICATION OF PLANT PRODUCTS IN HUMAN

AGING



Distinguished Speaker

DR. PAWAN KUMAR MAURYA

Associate Professor, Department of Biochemistry Central University of Haryana

Mahendergarh (Haryana)-123031

Date: 25-07-2020 (Saturday); Time: 11:00 A.M. Onwards

Link: meet.google.com/ jzf-uqro-fqf

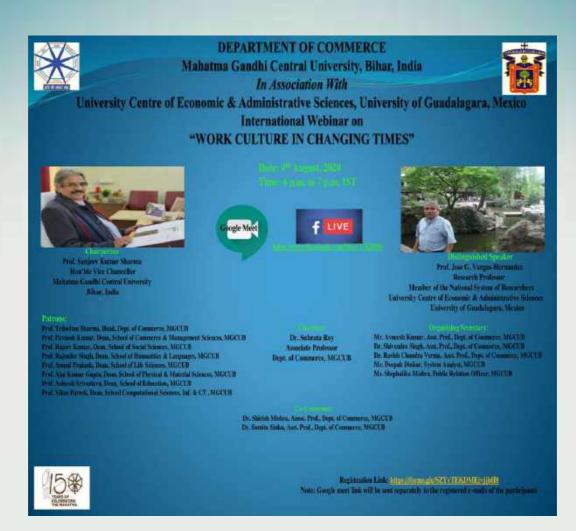
ADVISORY BOARD: Prof. Rajeev Kumar, Prof. Arttatrana Pal, Prof. Pranveer Singh, Dr. Brijesh Pandey

































महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

डॉ. अम्बेडकर प्रशासनिक भवन, निकट ओ.पी. थाना, रघुनाथपुर, मोतिहारी, जिला पूर्वी चंपारण, बिहार - 845401 www.mgcub.ac.in Email: osdadmin@mgcub.ac.in